एक अर्बी शाअर ने कहा है—अलूरों वो तन्छुरो मादना व नफ् व लातरानफ् सहा वेमिरात।

कि आँख क़रीब और वईद की चीज़ को देखती है मगर अपने आप को बगैर शीशे के नहीं देखसकती इसलिये हम आर्यसमाज के लिए बतौर शीशे के पेश होते हैं और उनको बताते हैं कि वेद कामिल इलहामी किताब नहीं है। और इस मुद्दआके लिये हम बतौर नमूना मुश्तरो अज़ ख़रवारे मुताबिक़ शर्त नं० १० बीस २० एतराज़ात ज़ैल में लिखते हैं—

पहला एतराज़-खुद वेदों की शख़्सियत और ज़ात के मुतअल्लक़ है कि वह किन पर नाज़िलहुए और फिर वह तीन हैं या चार और इब्तदा से आफ़रीनिश में नाज़िल हुवे या नहीं। शिक़ अव्वल को निस्वत सनातनधर्मी कहते हैं कि वेदों के मुलहिम श्री ब्रह्माजी महाराज थे और आर्यसमाजका दावा है कि चार ऋषियों पर नाज़िल हुए। क्या वजह है कि सनातनधर्मी जो क़दीम हामिलाने वेद हैं उनके अक़ीदे को सही तसलीम न किया जावे। वेद अगर कामिल इलहामी किताब है तो उससे कोई फ़ैसला कुन् दलील पेश करें

शिक़ सानी-आर्यसमाज का दावा है कि वेद चार हैं मगर वेदों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि वेद तीन हैं चार नहीं क्योंकि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद में अथर्ववेद का बिल्कुल ज़िकर नहीं,वल्कि तीन मुक़द्दमुल् ज़िकर काही ज़िकर आता है। मुलाहज़ाहो-१-ऐ मख़ज़ने रहमत भगवन् जिस मन (दिल के अन्दर ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद कायम हैं जिसमें मोक्ष का इल्मे हकीकी मौजूद है वह मेरा मन आपकी इनायत से नेक इरादे रखने वाला यानी रास्ती पसन्द इल्मे

हकीकी से मुनव्वर हो (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका उर्दू व ह॰ वाले यजुर्वेद अध्याय ३४ मन्त्र ५)

२-ऐ इन्सान जिस तरह ज़मीन पर पैदा होकर आलिमों के करने के लायक यज्ञ का पूजन या दान करते हैं या जिस मुल्क में ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद में बयान किये हुए आअमाल माल आं मताअ की तफ़सील के लिये आला आला उलूम वगैरह की ख्वाहिश या अनाज वगैरह से दुःखों के नाश करते हैं (यजुर्वेद ४ । १)

३-इन से जबकि इनपर इलहाम या इनकशाफ़ हुआ से यानः वेद ज़ाहिर हुए । अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, और सूर्य से सामवेद (ऋग्वेदादि भा. भू. सुफा १० व हवाला शतपथ ब्राह्मण काण्ड ११ अध्याय ५ ।)

४-आठ वर्ष की उम्र का होकर एक एक वेदमयअङ्ग उपाङ्ग पढ़ने में बारह बारह वर्ष लगाकर (३+१२) ३६ वर्ष यानी ४४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य रक्खें (सत्यार्थ प्रकाश व हवाला मनुस्मृति सुफ़ा ४१) पहले मन्त्रों में अथर्ववेद का कहीं ज़िकर नहीं और हवाला नं० ४ से भी हिसाबदाँ समझसकते हैं कि वेद तीन हैं चार नहीं बाज़ समाजीदोस्त कहदिया करते हैं कि ऋग् यजुः साम में सिर्फ तीन वेदों का ज़िकर इसलिये आया है कि चार वेदों में सिर्फ तीन मज़मून हैं। इलमअमल इबादत; लेकिन यह भी ढकोसला है। इस ढकोसले की लगवियत खुद बानीये आर्यसमाज ने अपनी किताब ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में साबित करदी है ।

लिखा है-"वेद चार मजमून हैं विज्ञान काण्ड (मारफत) कर्मकाण्ड (अमल) उपासनाकाण्ड (इबादत) और ज्ञान काण्ड (इल्म)" फिर बांज समाजी दोस्त एक मन्त्र पेश

किया करते हैं जिस में छन्दांसि लफ्ज़ आया है और उसके माने अथर्व वेद किया करते हैं हालांकि यह खिल बदाहत वातिल है क्योंकि छन्द के मानी इल्मे अरूज़ के बहर के हैं अथर्ववेदके नहीं। मुलाहज़ा हो सत्यार्थप्रकाश बाब ३ सु०८१ जिस में छन्द के माने स्वामीजी ने इल्मे अरूज़ के किये हैं। पस अगर आर्यसमाज अपने दावे में सच्ची है तो हमें ऋग् यजुः साम इन तीनों से ज्यादाह नहीं सिर्फ एक एक मन्त्र ऐसा निकालकर दिखावें कि जिस में लिखा हो कि परमात्मा से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्व वेद ज़ाहिर हुए। फिर हम इस बात को तसलीम करलेंगे कि वेद वाकई चार हैं।

शिक सालिस के मुतअल्लाक सवाल है कि अगर वेद वाकई असली है और इब्तदाय दुनियाँ में इनका नज़ूल हुआ, तो वह कामिल किताब नहीं होसकती क्योंकि इब्तदाए दुनियामें इन्सानों की हालत बलिहाज़ अख़लाक व इल्म वगैरा के बच्चों की सी थीं जैसा कि स्वामीजी महाराज फरमाते हैं "आदि सृष्टि में ईश्वर ने बहुत से इन्सान व हैवान पखेरू पैदा किये चुनाँचि यजुर्वेद अध्याय ३१ में इसका मुफस्सिल बयान किया गया है। लेकिन इनमें ज्ञान और कर्म की वजह से अब जैसा फ़र्क होगया है, मौजूद न था। इन लोगों को सिर्फ खाना पीना और भोजन करना ही मालूम था (उपदेश मञ्जरी सु० २९) पस इब्तदामें कामिल किताब का नुज़ूल नहीं होसकता था वरना यह मानना पड़ेगा कि खुदा ताअला ने खुद लोगों को गुनाह करना सिखाया। क्योंकि किसी ऐसे शख्स को जो चोरी और ज़िना से वाकिफ नहीं यह कहना कि चोरी और ज़िना मत करो मस्तानरा सरौद याद दहानीदेने वाला मुआमला है। यानी चोरी ज़िना की तरफ रास्ता दिखा:

नाहै और अगर वेद अज़ली नहीं और इब्तदाय दुनियाँमें नाज़िल नहीं हुवे तो स्वामी दयानन्द साहब और आर्यसमाज का दावा बातिल है और मुन्दर्जे ज़ैल मन्त्रों से मालूम होता है कि वेद आगाज़े दुनियां में नाज़िल नहीं हुए मुलाहज़ा हो ।

नं० १-ऐ इन्सानों......तुमको धर्म ही पर अमल करना चाहिये अधर्म इख्तयार नहीं करना चाहिये, जिस तरह ज़माने क़दीम के देव यानी साहबे इल्मो माफितरास्ती शआर तर्फदारी और तअस्सुब से खाली आलिम ईश्वर और धर्म के हुक्म को अज़ीज़ जानने वाले तुम्हारे बज़ुर्ग तमाम उलूम से माहर लायको फ़ायक गुज़र चुके हैं ......और मेरे बनाये हुवे धर्मपर अमल करते रहे हैं इस ही तरह तुम भी इसी धर्मपर पाबन्द रहो (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका सु० ६० व हवाले ऋग्वेद अष्टक ८ अध्याय ८ वर्ग ४९ मन्त्र २।

२-राजा कहता है तुमने पहले मैदानों में दुश्मनोंकी फ़ौज को जीता है, तुमने इबारत को मग़लूब और रूए ज़मीन को फ़तह किया है तुम क़वीतन और फ़ौलादबाज़ू हो ज़ोरो शुजाअतसे दुश्मनोंको तहेतेग़ करो। ऋग्वेदादि भा० भू० सु० १३२ व हवाले अथर्ववेद काण्ड १५ अनुवाक् २ वर्ग ९ मंत्र २)

सङ्गच्छध्वं संवदध्वम् इत्यादि (ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १९१ मन्त्र २) तर्जुमा है गृहस्थी लोगो तुम को मैं ईश्वर हुक्म देता हूं कि जैसे पहले योगाभ्यासी अच्छी तरह जानने आलिम लोग मिलकर सच झूठका फैसला करके झूठ को छोड़ सच्चकी उपासना करते हैं वैसे ही आत्मासे धर्म और अधर्म प्रिय (प्यारे) अप्रिय (न प्यारे) को अच्छी तरह जाननेवाले तुम्हारे दिल एक दूसरे के मुनासिक़ होकर एकही मुतज़िकरे वाला धर्ममें मुत्तफ़िक़ुलराय हो (संस्कार विधि

सु० ३३३ ॥ मज़कूरः बाला हवालेजात से साबित है कि वेदों के नुजूलसे पहिले दुनिया का बहुतसा हिस्सा गुजर चुका था पस असलियत वेदका दावा बातिल होगया ।

दूसरा एतराज़—

दूसरा एतराज—कामिल इलहामी किताब के लिये यह ज़रूरी है कि वह हरएक जो ज़रूरियात मजहब में से है उस को खुद बयान करे और वह उसपर दलायल और बराहिन भी खुद कायम करे । वह किसी इन्सानी विकाल को मुहताज नहो कि वह दावा तो खुद पेश करे और दलायलके लिये उस के पैरवी बतौर वकील के खड़ेहों । पसअगर वेद कामिल और मुकम्मिल इलहामी किताब है तो वेद में से इस बात का दावा पेश करें कि खुदा की तरफसे चारों वेद चारों ऋषियोंपर नाजिल हुए और उनके खुदाकी तरफ़ से होने की दलील भी वेद में से पेश करें और नीज तनासुख और रूह व माद्दा की कदामत पर भी वेद से दलील पेश करें ।

तीसरा एतराज़—

कामिल किताब जो तमाम कौमों और तमाम जमानों को हिदायत के वास्ते भेजी गई हो उसके लिये ज़रूरी है कि उस की हिफ़ाजत भी खुदा की तरफ़से कीजावे । वह आशिया जिसका तअल्लुक़ हर क़ौम व हर ज़माने से है उसकी हिफ़ा-जत उसका इन्तज़ाम खुदाताअलाने अपने हाथमें रक्खा है । किसी इन्सान को नहीं दिया । मसलन् सूरज और बारिश है उनका तअल्लुक़ उनकी ज़रूरत हर क़ौम और ज़माने में है इस लिये उनका इन्तज़ाम खुदाने अपने हाथमें रक्खा है । मगर वेदों की हिफ़ाज़त खुदाने नहीं की बल्के वह मुहर्रफ़ और मुब-द्दल होचुके हैं जिससे साबित होता है कि वेद कामिल मुक-

मिनल इलहामी किताब नहीं। नहीं उसका हर ज़माने व हर क़ौम से ताअल्लुक़ था। मुलाहज़ा हो—

१—दीबाचा ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका उर्दू सुफा २५ "इस ही तरह सायण वग़ैरह जमाने हालके पौराणिक पण्डितों ने पुराण की कथाओं को जो उनके ज़िहन में समाई थीं जगह २ वेदों में दाखिल करदिया है"

२—उपदेश मञ्जरी सुफ़ा ३० में स्वामीजी फ़रमाते हैं कि "इन दिनों ब्राह्मणोंने खुद गरजी में फँसकर वेदों का पढ़ना छोड़दिया है और गोया बिलकुल नष्ट कर दिया है अथर्ववेदमें अल्लोपनिषद करके घुसेड़ दिया है यह खुद गरज़ी से शास्त्री लोगोंने नये श्लोक बनाकर लोगों को भ्रममें डालने के लिये डालरक्खे हैं सो यह बड़े ही दुःख की बात है"।

३—यजुर्वेद अध्याय २५ के स्वामीदयानन्द साहब ने ४८ मन्त्र लिखे हैं और यजुर्वेद ज्वालाप्रसाद मिश्र का बम्बई में छपा हुआ है इस में ४७ मन्त्र हैं। एक मन्त्र की कमी वेश होगई।

चौथा एतराज़—

इलहामी किताबके ज़रूरी है कि वह खुदाताअला की सिफ़ातको कि जिसकी तरफ़ से वह आई है आला से आला पैराये में बयान करे। मगर वेदों में खुदाताअला को ऐसी बुरी सिफ़ातसे मुत्तसिफ़ किया है जो एक अदना से अदना शख्स भी अपनी तरफ़ मनसूब नहीं कर सकता। बतौर नमूने चन्द बातें जैलमें लिखी जाती हैं——

ईश्वर का हुलिया-मुलाहज़ा हो ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका ऐडिशन अव्वल सुफ़ा १३५ "दिन और रात ईश्वरकी दोबग़लें हैं" (गोया वैदिक ईश्वर की एक बगल काली और एक गोरी

है) और सूरज और चाँद आँखें (कहीं स्कूल में पढ़ने वाले लड़के चाँद की बाबत यह ख्याल करके कि वह बज़ात खुद रौशन नहीं वैदिक ईश्वर को एक आँख वाला न समझलें) सूरज की धूप और बिजली की चमक यह दोनों ईश्वर के होंठ हैं (बाज़वक्त बिजली की चमक नहीं रहती इस लिये वैदिक ईश्वरको बसा औक़ात एक होंठवाला मानना चाहिये) ज़मीन और सूरजके दरमियान जो पोल है वह वैदिक ईश्वर का मुँह है (और दाँत ?) इस हुलिया बयान करने में कोई शायराना बारीकीभी नज़र नहीं आती और न इल्मी मज़ाक यह क़रीबन् ऐसी ही तश्बीह है जैसे किसी ने कहा है-

ज़ुल्फ़े जानाँ मिस्ले लम्बी खजूर है,
चश्मे जानाँ मिस्ल जगती तनूर है।

२-ईश्वर चोरी करताहै-ऐ इन्द्र दौलतोंसे मालामाल परमेश्वर हमसे जुदा कभी मतहो हमारे मरगूब सामाने खुराक को मत चुरा और मत चुरवा । तर्जुमा स्वामी दयानन्दसाहब ऋग्वेद अष्टक १ मण्डल ७ सूक्त १६ मन्त्र ८ । और आर्याभिविनय ऐडीशन सुफ़ा १४६ ऋग्वेद के अष्टक ७ अध्याय १६ मन्त्र ८ की तशरीह करते हुए स्वामी जीने लिखा है-"हमारे भोजन आदि सुवर्ण पात्रोंको न उठा यानी हमारे खाने वग़ैरह के जो सोने के पात्र है न उठा ।

३-ईश्वर हमल गिराता है-इसही के आगे लिखा है, हमारे गर्भों का विदारण (इस्क़ात) मत करना ।

४-ईश्वर की कम इल्मी-जिसलिये हे जगदीश्वर मैं आप पढ़ने पढ़ाने वाले दोनों प्रीति (मुहब्बत) के साथ मिल कर विद्वान् धार्मिक (आलिम दीनदार) हों कि जिससे दोनों की विद्यावृद्धि सदाहोवे । दयानन्दी तफ़सीर अध्याय ५ मन्त्र

६ जिल्द-१ सुफ़ा १२७। इसही तरह मुलाहज़ा हो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका सु० १२४व हवाला यजु० ४,७-१६ "इस दुनियां में पाप और पुण्य का नतीजा भोगने के लिये दो रास्ते हैं एक आरफ़ों और आलमों का और दूसरा इल्म व मारफ़त से मुग़री इन्सानों का ...... मैंने यह दो रास्ते सुने हैं यह तमाम दुनियां इन्हीं दो रास्तों पर चली जारही है।" अब ईश्वर भी किसी से सुन कर इल्म हासिल करता है। बहुत खूब?

ईश्वर तकलीफ़ उठाता है—परमात्मा ने कष्ट उठाकर सृष्टि को पैदा किया। गोपथ ब्राह्मण अध्याय १ मन्त्र २ व हवाले यजु० ६-१४।

ईश्वर का हरकत करना—ऐ ईश्वर जिस २ मुक़ाम से आप दुनियां के बनाने और पालने केलिये हरकत करें उस २ मुक़ाम से हमारा ख़ौफ़ दूर हो। ऋग्वेदादि भा० भू० सु० ४ बहवाले यजु० ३६-२२। जिस किताब में ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी बुरी सिफ़ात मन्सूब की गई हों वह इल्हामी किताब हरगिज़ नहीं हो सकती।

पांचवां एतराज़

कामिल किताब जो सबलोगों के लिये हो उसके लिये यह ज़रूरी है कि हर मुल्क और हर तबक़े का इन्सान अमीर और ग़रीब ......अमल कर सकता हो। मगर वेदों की तालीमपर जब हम ग़ौर करते हैं तो वह ऐसी नहीं कि हर एक अमल कर सके। स्वामी साहब सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं-"अग्नि होत्र और सन्ध्या सुबह और शाम करना चाहिये। इसमें चन्दन, कस्तूरी पलाश और घी वग़ैरह डाला जाये।" और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिकामेंस्वामीसाहब ने बहवाले यजुर्वेद २-

१ लिखा है " दुनियां की भलाई करने लिये तुम हमेशा घी वग़ैरह उमदः साफ़ की हुई चीज़ों से अग्नि यानी आग को रौशन करो और उसमें होम करने के लायक़ ख़ूब साफ़ की हुई मुक़व्वी शीरीं ख़ुशबूदार और दाफ़ए मर्ज़ वग़ैरह तासीरों वाली चीज़ों से होम करो " हवन करने की चीज़ें ये हैं-मसलन् घी, बादाम, किशमिश, खोपरा, पिस्ता, चिलग़ोज़ वग़ैरह और शकर चीनी शहद छुहारे-वग़ैरह केसर कांफूर कस्तूरी अगर तगर वग़ैरह गिलोय इन्द्रजौं वग़ैरह । कस्तूरी घी वग़ैरह आजकल अशियः बहुत गिरां हैं कम अज़ कम २५) माहवार इसके लिये चाहिये । बताओ जिसकी आमदनी १५) या २०) हो वह अपने घर वालों को घोट कर मार दे ।

छठा एतराज़

वेदों में जो तालीम पाई जाती है वह इस क़ाबिल नहीं कि कोई बाग़ैरत या बाहया शख़्स इस पर अमल करने को तैयार हो । मसलन् उनमें से एक मसला नियोग का है । अगर्चे यह मसला आर्यसमाज में बहुत महबूब और मरग़ूब है और इस मसले पर आर्यसमाज को बड़ा फ़ख़ और नाज़ है क्योंकि वह पाक और पवित्र तालीम सिर्फ़ वेदों ने ही पेश की है ।

नियोग क्या चीज़ है-नियोग से मुराद यह है कि बीवी अपने ख़ाविन्द की मौजूदगी में और उसके मरने के बाद औलाद के लिये ग़ैर मर्द से अपने और अपने ख़ाविंद के लिये औलाद पैदा करले । चुनांचे स्वामीदयानन्द साहब ने बहवाले ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १८ मन्त्र ८ और अथर्ववेद कांण्ड ४ अनुवाक २ मन्त्र १८ से अपनी किताब ऋग्वेदादि भाष्यभू० में इस पर इस्तदलाल किया है और सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा१०२

में लिखा है-" ब्याहता औरत का ख़ाविन्द धर्म की ख़ातिर परदेश गया हो तो आठ साल तक, इल्म व शोहरत के लिये गया हो तो छः साल तक, दौलत वग़ैरह कमाने की ख़ातिर गया हो तो वह औरत तीन वर्ष तक रास्ता देखे बाद अज़ाँ नियोग करके औलाद पैदा करले जब ख़ाविन्द वापस आवे तो नियोग शुदः ख़ाविन्द को तर्क करदे। इसी तरह अगर सख़्त कलाम हो तो यकलख़्त इस औरत को छोड़ दे और दूसरी औरत से नियोग करके औलाद पैदा करले इसी तरह मर्द अगर ज्यादा सतानेवाला हो तो औरत को मुनासिब है कि इसको तर्क करके दूसरे मर्द से नियोग करके इसी ब्याह शुदः ख़ाविन्द के लिये जायदाद की वारिस औलाद पैदा करे" यह इलाज ऐसाही है जैसा कि आगपर मट्टीका तेल डालना। तदबीर तो कोई ऐसी बतलानी चाहिये थी कि जिससे उनका बाहमी रन्ज दूर हो न कि और ज्यादह क़शीदगी हो। मैं अपने मद्दे मुक़ाबिल से दरयाफ़्त करता हूं कि वह क़सम खा कर बतावें कि आया इस तालीम को उनकी फ़ितरत सही या क़बूल करने को तैयार है। आर्यसमाज का तर्ज़ अमल बता रहा है कि उनकी फ़ितरत इस तालीम को क़बूल करने के लिये तैयार नहीं है।

सातवां एतराज़

स्वामी दयानन्द साहब सत्यार्थप्रकाश के सुफ़े १०० बाब ४ में लिखते हैं-

सवाल-नियोग में क्या २ बात होनी चाहिये ?

जवाब-जिसतरह ज़ाहिरन् सब के सामने विवाह होता है उसी तरह नियोग होना चाहिये। जिस तरह विवाह में मुअज़्ज़िज़ आदमियों की मन्ज़ूरी और दुलहा दुलहन की रज़ा-

मन्दी होती है इसीतरह नियोग में भी होना चाहिये। यानी जब मर्द और औरत का नियोग होना हो तब अपने मर्द और औरतों के सामने इक़रार करें कि हम दोनों औलाद पैदा करने के लिये नियोग करते हैं। जब नियोग का मुद्दश्रा पूरा होजावगा तब हमारा क़तअ ताअल्लुक़ होगा और इसके बर-अक्स करें तो गुनहगार और बिरादरी या हाकिमे वक़्त से सज़ा के मुस्तौजिब होंगे।" अब दरयाफ़्त तलब मुन्दर्जैज़ैल उमूर हैं-

१-क्या वजह है कि आर्यसमाज अलानिया नियोग नहीं करवाती, व्याह तो अलानिलाँ दिखाई देते हैं और मुअज़्ज़िज़ आदमियों की मंज़ूरी भी लीजाती है मगर नियोग के मुतअ-ल्लिक ऐसा कभी नहीं सुनागया कि मुअज़्ज़िज़ आदमियों की मंज़ूरी से किया गया हो। और नहीं विवाह की तरह कोई बरात देखी गई है।

२-क्या कोई ऐसा वक़ूअ पेश किया जासकता है कि नि-योगी और नियोगन में से किसी ने बवजह नागज़गी नियोग का मुद्दापूरा होनेसे पहले क़तअ ताल्लुक़ करलियाहै फिर वह बिरादरी या हाकिमे वक़्त से सज़ा का मुस्तौजिब हुआ है।

३-क्या इन लड़के और लड़कियों की फ़हरिस्त पेश की जाती जो नियोग से हासिल किये गये हों ताकि मालूम हो कि इस पवित्र तालीम ने कितना बड़ा काम किया है।

४-अगर आर्यसमाज ने कोई फ़हरिस्त पेश नहीं की और नहीं करेगी जबकि तजर्बे से मालूम है कि उनकी फ़ितरत इस तालीम को क़ाबिल नफ़रत तालीम समझती है और इसे क़बूल करने के लिये हरगिज़ तैयार नहीं।

आठवाँ एतराज।

स्वामी दयानन्द साहब सत्यार्थप्रकाश सु० १०८बाब ४में तहरीर फ़रमातेहैं--" ऐ औरत तुझे शादीमें जो ख़ाविंद पहला मिलताहै उसका नाम सुकुमारता वग़ैरह होनेसे सोमहै दूसरा नियोग होताहै वह गन्धर्व जो दो बाद तीसरा ख़ाविंद होताहै वह बहुत सी हरारत वाला होने से अग्नि नाम से मौसूम होता है और जो २ रे ४ थे से लेकर ११ वें तक नियोग से खाविंद होते हैं। और इन्हीं नामों को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बहवाले ऋग्वेद अष्टक ८ अध्याय३ वर्ग २७ मन्त्र ५ लिखा है अब सवाल यह है कि तीसरे ख़ाविंद का नाम अग्नि रखने में जो हिकमत बतलाई गई वह सही नहीं। यह कैसे मालूम हुआ कि दूसरों से इसमें ज्यादः हरारत है हो सकता है कि और मर्दों में इससे ज्यादः हरारत हो आखिर कैसे मालूम हुआ कि तीसरा जो भी नियोगी होगा उसमें ज्यादः हरारत होगी।

नवाँ एतराज।

वेदों की तालीम नाक़िस है। क्योंकि वेदों में शादीके मुतअल्लिक़ ज़िकर नहीं कि किस औरत से शादी की जाय। और किस औरत से शादी करना हराम है अगर कोई बदमाश अपनी बेटी से शादी करना चाहे तो वेदों का उसके मुतअल्लिक कोई हुक्म नहीं कि वह करे या न करे जब कि वाममार्गी वेदों के अनुसार अपनी बेटियों और माओं से भी हाजत खाकरना जायज़ ख्याल करते हैं। और अगर कोई शख्स बेटी के साथ शादी करने का जवाज़ वेदों से निकालना चाहे तो निकाल भी सकता है जैसा कि स्वामी दयानन्द साहब बहवाले ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त १६४ मन्त्र ४३ ऋग्वेदादि

भाष्य भूमिका हिन्दी सुफ़ा २६६ में लिखते हैं कि पिता के समान जल रूप जो मेघ (बादल) है उसकी पृथ्वी रूप (ज़मीन) दुहिता (लड़की) है क्योंकि पृथ्वी की पैदायश जल से है जब वह उस कन्या में बारिशके ज़रिये से जल रूप वीर्य (नुतफ़ा)धारण करता है।तब उससे हमल रहकर औषध वग़ैरह अनेकपुत्र होते हैं।

२–सुफ़ा २६६ में लिखा है कि जिस सुख रूप व्यवहार में ठहरके बाप लड़की में नुतफ़े को डालता है स्थित होकर पिता दुहिता में वीर्य स्थापन करता है जबकि पहले लिख आये हैं। यहाँ बादल को बमंज़िले बाप और ज़मीन को बमंज़िले दुख़्तर क़रार दिया गया है इस तश्बीहसे मालूम होता है कि वेदों के नज़दीक बाप बेटी में नुतफ़ा डाल सकता है वर्ना ऐसी तश्बीह क्यों दीजाती।

दसवाँ एतराज़।

शादी के मुतअल्लिक़ स्वामी साहब सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा ७१ में ब हवाले मनुस्मृति लिखते हैं " इन औरतों से शादी न होनी चाहिये—न ज्यादः अङ्ग वाली न ज्यादः आज़ा वाली या मर्द की निस्बत ज्यादः ताक़त वाली न किसी मर्ज़ में मुबतला, न वह जिसके बाल न हों न बहुत बालों वाली न बकवास करने वाली न भूरी आँखों वाली औरत के साथ शादी करें। अश्विनी भरणी रोहिणी वग़ैरह सैय्यारों के नामवाली तुलसा, गेंदा, गुलाबी, चमेली वग़ैरह दरख़्तों के नामवाली गङ्गा यमुना वग़ैरह दरयाओं के नाम वाली कोकिला मैना वग़ैरह परन्दों के नाम वाली लड़की के साथ विवाह नहोना चाहिये। बल्कि जिसके ख़ूबसूरत सीधे आज़ाहों और उसके ख़िलाफ़ न हो जिसका नाम अच्छा हो जिसकी रफ़्तार हंस

और हथनी की मानिन्द हो। जिसके बदन के रोंगटे बारीक और सरके बाल और दाँत छोटे २ और सब आज़ा मुलायम हों वैसी औरत के साथ विवाह होना चाहिये।" अब बतलाओ इस तालीम पर दुनिआँ के रहने वाले कहाँ तक अमल कर सकते हैं। और आया आर्यसमाज इस क़ानून पर कारबन्द है और इस तालीम के अनुसार शादियाँ करती है।

ग्यारहवाँ एतराज़।

भूरी आँखों वाली औरत से शादी न करने की क्या वजह है।

२-अगर किसी मर्द की आँखें भूरी हों तो उसके लिये क्या हुक्म है।

३-जबकि खुदा ताअलाने इसे क़वाए शहवतिया अता किये हैं फिर इससे शादी का हराम कर देना जुल्म है।

४-यूरुप की औरतें भूरी आँखों वाली हैं बिलाफर्ज़ अगर तमाम यूरुप आर्य बन जायें तो क्या करें।

५-इल्मतिब् की रूसे तो भूरी आँखें अच्छी समझी गई हैं क्योंकि वह दुखती कम है।

बारहवाँ एतराज़—

स्वामीदयानन्द साहब अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश में मुरदः जलाने के मुतअल्लिक वेदों के अनुसार लिखते हैं। जलाने का तरीका यह है "जिस्म के वज़नके बराबर घी हो, उसमें फ़ी सेर रत्ती कस्तूरी और माशाभर केसर डालना चाहिये। कम से कम आधमन सन्दल अगर तगर काफ़ूर वग़ैरह और पलास वग़ैरह की लकड़ियाँ वेदी में जमानी चाहिये।......और अगर मुफ़लिस होतो भी बीस सेर से कम घी चिता में न डालाजावे ख्वाह वह घी भीख माँगने से या भाईबन्दों से लेकर या

सरकार से दस्तयाब क्यों न हो। सत्यार्थप्रकाश सु० ४१५ अगर वेदों के बयान करदी जलाने को लिया जावे तो एक लाशको जलाने पर पौने दोसौ रुपये के करीब लगते हैं। एक घरमें दो अमवात होने से घर वालों की कुरकी होने में कोई शुबह नहीं और अगर ताऊन और हैज़ा वग़ैरह ने कोई दौरह किया तो फिर इस हालत में न मालूम क्या हशर होगा। अब आर्यसमाज बताए कि क्या वह इसपर कारबन्द हैं और अहले दुनियाँ इस तालीमपर अमल करसकते हैं।

तेरहवां एतराज़

वेदों की तालीम हरगिज़ आलमगीर नहीं हो सकती–मुलाहज़ा हो, ऋग्वेदादि भा० भूमिका उर्दू सु० १२५ बहवाले ऋग्वेद अष्टक ७ अ० ८ वर्ग १८ मन्त्र २ " ऐ ब्याहे हुए मर्द औरत तुम दोनों रात को कहां ठहरे और दिन कहाँ बसर किया था तुमने खाना वग़ैरह कहां खाया था तुम्हारा वतन कहां है जिसतरह बेवा औरत अपने देवर के साथ शबबाश होती है या जिस तरह ब्याहा हुआ मर्द अपनी ब्याहता औरत के साथ औलाद के लिये यकजा शबबाश होता है इसही तरह तुम कहां शबबाश हुए थे।"

१–इन्साफ़ से कहो क्या ऐसी तालीम जो वेद का परमेश्वर सिखाता है जो आप पहले उससे यही सवाल किया जावे इसपर आर्यसमाज भी अमल कर सकते या नहीं।

२–"ऐज़नो मर्द तुम दोनों इस दुनिया में गृहआश्रम (ख़ानादारी) में दाख़िल होकर हमेशा सुखके साथ रहो और कभी बाहम निफ़ाक न करो और सफ़र से बाहर जाने के वक्तया और किसी तरह बाहम जुदा न हो।" (ऋग्वेदादि) भाष्य भूमिका सु० १२४ बहवाले ऋग्वेद अष्टक ८ अध्याय ३

वर्ग २८ मन्त्र २)। इस तालीम पर कौन अमल कर सकता है। क्या औरतों को अपने से किसी वक्त भी अलहदा नहीं किया जावे आदमी सफ़र पर जावे तो भी साथ ले जावे दफ्तर में जावे तो भी अलहदा न करे।

चौदहवाँ एतराज़—

वेदों के बाज़ मन्त्रों में तहज़ीब से गिरी हुई बातें पाई जाती हैं मुलाहज़ा हो यजुर्वेद अध्याय ६ मन्त्र १४।

१—तेरी जिससे नाड़ी वग़ैरह बाँधी जाती हैं उस नाभिको पवित्र करता हूँ तेरे जिससे पेशाब वग़ैरह किया जाता है उस लिङ्गको पवित्र करता हूँ तेरी जिससे रक्षा की जाती है उस गुदा इन्द्रिय को पवित्र करता हूँ"।

२—यजुर्वेद अध्याय २८ मन्त्र ३२ का भावार्थ "जैसे बैल गौओं को गमन करके पशुओंको बढ़ाता है वैसे गृहस्थ लोग स्त्रियोंको गर्भवती कर प्रजा को बढ़ावें।

३—यजुर्वेद अध्याय ३१ मन्त्र ६० हे मनुष्यों........छेरी आदि पशु से वाणी के लिये मेंढा से परमैश्वर्यके लिये बैलसे भोग करे इसी तरह और बहुत से मन्त्र हैं जिनको लिखते हुए शर्म आती है।

पन्द्रहवाँ एतराज़—

वेदों में जो इन्सानों को दुआएँ सिखाई गई हैं उन दुआओंसे यह हरगिज़ मालूम नहीं होता कि ईश्वरकी तरफ़से हैं मुलाहज़ा हो अव्वल सत्यार्थ प्रकाश सुफ़ा १२४ वहवाले मनुस्मृति अध्याय ७ श्लोक ४७ स्वामी जी लिखते हैं "शिकार का खेलना, चौपड़ खेलना, जुआ खेलना, दिनमें सोना (शायद स्वामी जी या कोई आर्य बतला सकते हैं कि कभी दिन में सोवे

होंगे) शहवत अंगेज़ बातें या दूसरे की बुराई करना औरतों से ज़्यादः सोहबत करना मुनश्शी अशिया यानी शराब अफ़-यून भंग गाँजा चरस वग़ैरह का इस्तअमाल करना गाना नाचना नाच करवाना रागका सुनना (आगे से नगर कीर्तन न किया जावे) या नाचका देखना इधर उधर आवारह फिरना यह दस कामसे पैदा शुदः ऐब हैं" । अब इसके ख़िलाफ़ वेदों में लिखा है : हे परमेश्वर राजन् आप अग्निके लिये मांद्रे पदार्थ (अशिया)को पृथिवीके लिये वग़ैरः पाओं रेंगने वालेसाँप वग़ैरह (मालूम नहीं सापों की क्या ज़रूरत पड़ी है) आकाश और ज़मीन के दरमियान खेलने को बाँस से नाचने वाले नट वग़ै-रह को पैदा कीजिये । तफ़सीर दयानन्दी यजुर्वेद जिल्द दोयम सुफ़ा १०३६

सोलहवाँ एतराज़—

आर्य समाज का अक़ीदा है कि रूह और माद्दः क़दीम से वाजिबुल वजूद और अज़ली है । इस अक़ीदेसे ख़ुदाताला के साथ शिर्क के अलावः उसको मुहताज भी मानना पड़ता है मिसाल के तौर पर एक पेन्सिल है जो दो चीज़ों सुरमे और लकड़ी से मुरक्कब है और एक उसको बनाने वाला है अब हम कहते हैं कि लकड़ी और सुरमा मौजूद था पेन्सिल बनाने वाले ने पेन्सिल बनादी अगर सुरमा और लकड़ी मौजूद न होती तो पेन्सिल बनाने वाला पेन्सिल न बना सक-ता मालूम हुआ पेन्सिल बनाने वाला पेन्सिल बनाने में लकड़ी और सुरमे का मुहताज है । बएनहू रूह व माद्दे की बात है । रूह और माद्दः मौजूद थे ईश्वर ने इन्सान वग़ैरह बनादिये और बर तक़्दीर अदम मौजूदगी रूह व माद्दे के लाज़मी नतीजा यह निकलता कि ईश्वर हैवानात क्या दुनियाकी कोई

भी चीज़ पैदा नहीं कर सकता। मालूम हुआ खुदातात्राला. कायनात के पैदा करने में रूह और माद्दे का मुहताज है। और मुहताज खुदा नहीं होसकता इस वास्ते स्वामी दयानन्द साहब को ईश्वर को जुलाहे के साथ मिसाल देनी पड़ी "जैसे कपड़ा बनाने में पहिले जुलाहा रूई का सूत और नली वगैरह मौजूद हो तो कपड़ा बनाता है इसी तरह जहान की आफ़रीनिश से पहले परमेश्वर माद्दः वक्त और आकाश और जीव मौजूद होतो इस जहान की पैदायश हो सकती है। अगर इनमें से एक भी न हो तो जहान भी न हो। सत्यार्थप्रकाश बाब ८ सुफ़ा १८१ और सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा ४६० में कुम्हार के साथ तश्बीह देनी पड़ी।

सत्रहवाँ एतराज़—

तनासुख के अक़ीदे से यह लाज़िम आता है कि परमेश्वर यह चाहता ही नहीं कि दुनियाँ में पाकीज़गी फैले क्योंकि इन्सान के पैदा होनेके साथ कोई ऐसी फ़हरिस्त नहीं भेजता जिससे पता लगेकि यह फ़लाँ की माँ थी और फ़लाँकी बहन या फ़लाँ-इस का भाई या फ़लाँ बाप था। पस इस अक़ीदे के मानने से माँ बहन दादी ख़ाला पड़दादी वग़ैरह सब से शादी का होजाना मुमकिन है पस वह किताब जिसमें ऐसे अक़ायद बयान किये गये हों जिन से ऐसी ख़राबियाँ लाज़िम आती हैं वह कैसे इलहामी हो सकती है।

अठारहवां एतराज़—

फिर वेदोंकी तालीम कामिल न होनेकी एक वजह यहहै कि वेदोंमें परदेका हुक्म नहीं. परदा न होनेकी वजहसे जो दुनियाँमें गुनाह और ज़िना वग़ैरहके लोग मुरतकिबहो रहेहैं वह

अहल दुनियाँसे पोशीदह नहीं यहाँ तक कि मनु ने भी लिखा है कि इन्द्रियां इतनी ज़बरदस्त हैं कि मां बहन और लड़की वगैरह के साथभी होशियारीसे रहना चाहिये। मनु अध्याय २ श्लोक १५। मगर वेदोंमें परदेके मुताल्लिक कोई हुक्म नहीं। इसी तरह इन्सानके मरनेके बाद विरासतमें जितने झगड़े पड़ते हैं उससेभी लोग नावाकिफ़ नहीं हैं। लेकिन वेदोंमें इसके मुताल्लिकभी कोई हुक्म नहीं कि विरसेको कैसे तक़सीम किया जावे पस वेद कामिल इलहामी किताब नहीं हो सकती।

उन्नीसवां एतराज़—

वेदों पर अमल करने से इन्सान नजात नहीं पा सकता जो इलहामी किताबकी असिल ग़रज़है मुलाहज़ाहो दयानन्दी तफ़सीर, यजुर्वेद भाष्य सुफ़ा १४६ अध्याय २१ मन्त्र १५ है इन्सानों जो लोग परमेश्वरने मुक़र्रिर किये हैं कि धर्मपर चलन करना और अधर्मका चलन तर्क करना चाहिये जो इस हदसे बाहर नहीं हुये वे इन्साफ़ोंसे दूसरेकी अशियाको नहीं लेते वह तन्दुरुस्त रह कर सौ वर्ष तक जिन्दा रह सकते हैं मौजूदा ज़माने में सौ वर्ष तक इन्सान जिन्दा नहीं रहता और दूसरी जगह स्वामी दयानन्द साहब बहवाले छान्दोग्य उपनिषद् प्रपाठक सोयम खण्ड १६ वाक्य १ से ६ तक मोक्षके लिये चार सौ साल बताते हैं। माँ बाप अपनी औलाद को पहली उम्रमें इल्म और नेक औसाफ़ हासिल करनेके लिये भी नफ्स कुश बनाकर ये सीधी हिदायत करें और औलाद खुद ब खुद कामिल ब्रह्मचर्य यानी तीसरे आला ब्रह्मचर्यको क़ायम रखके यानी चारसौ वर्ष तक उमरको बढ़ावें पस आचार्य ऐ ब्रह्मचारियो तुमभी बढ़ाओ क्योंकि जो शख्स इस ब्रह्मचर्य को इख़्तयार करके इसको नष्ट नहीं करते वह सब क़िस्मके दुःखों

से आज़ाद होकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को हासिल करते हैं। सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा ४२ इस वक्त चार सौ सालकी कोई उम्र नहीं पाता लिहाज़ा मालूम हुआ कि वेदों की तालीम पर अमल महाल है और नजात का पाना बिल्कुल महाल है।

बाईसवां एतराज़—

कामिल इलहामी किताबके लिये यह ज़रूरी है कि उसपर अमल करने से कामिल नमूना तैयार हो और हर ज़माने में वह ताज़े से ताज़ा फल दे। और उसकी तालीम काबिले अमल हो कि उसपर चलकर इन्सान खुदा ताला तक पहुँच सके और हर ज़माने में ऐसा नमूना मौजूद रहे कि जिससे खुदा ताला कलाम करके अपनी रज़ा का सुबूत दे मगर जबसे वेद नाज़िल हुये तबसे कोई इन्सान ऐसा पेश नहीं किया जा सकता जिससे खुदा ताला ने कलाम की हो और अपनी रज़ाका सुबूत दिया हो सबसे बड़े आर्यसमाज में मौजूदः ज़माने में दो आदमी माने गये हैं एक स्वामी दयानन्द साहब जिन्हें महर्षि का खिताब दिया जाता है और एक पं० लेखराम जिन्हें शहीद अकबर के नामसे याद किया जाता है मगर दोनोंही वेद की तालीमकी रू से नजात नहीं पा सके और मोक्ष को हासिल नहीं कर सकते क्योंकि स्वामी दयानन्द साहब सत्यार्थ प्रकाश सु० १६० दा० ७ में लिखते हैं कि—

सवाल—ईश्वर अपने भक्तों के पाप दूर करता है या नहीं?
जवाब—नहीं क्योंकि अगर पाप मुआफ़ करे तो उसका इन्साफ़ कायम न रहे।

और सुफ़े ४५८ में लिखा है कि जैसा गुनाह हो वैसी सज़ा देना मुंसिफ़का काम है मुलाहज़ा हो जीवन चरित्र स्वामी दयानन्द साहब मुसन्निफ़े राधाकृष्ण सुफ़ा १८ स्वामीजी कहते

चांएडालिगढ़ में गये वहाँ उनको भंग पीनेकी बुरी आदत पड़ गई। चुनांचे अकसर वह इसके नशे में मदहोश हो जाते। और मनुस्मृति अध्याय १२ श्लोक ५६ में लिखा है कि छोटे बड़े कीड़े पतङ्ग ग़लीज़ खाने वाले परन्द मारने की ख़सलत रखने वाले शेर वग़ैरह उन्हींकी हालत में शराब पीने वाली ब्राह्मण जातिहै। और सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा १२४ वहवाले मनुस्मृति ७-४७ अफ़यून गाँजा भंग चरस वग़ैरह एकही किस्म में दाख़िल हैं। फिर मुलाहज़ा हो उपदेशमञ्जरी सुफ़ा १६६ "एक वैरागी एक मूर्ति लेकर बैठा हुआ था; बात चीत होने पर वह बोला कि उंगली में सोने का छल्ला डालकर वैराग की सिद्धी कैसे होगी मुझे इस तरह कहकर सोने का छल्ला मूर्तिकी भेंट करा लिया। इसी तरह मुलाहज़ा हो कुल्लियात आर्य मुसाफिर पं० लेखरामका बयान अपने मुताल्लिक वह अवायल में हैरानीमें फँसी रही और उन्हीं अय्याम में बुतपरस्तीकी सूझी बरसों कृष्ण महाराज की पूजा में सर झुकारहा और उन्हीं को अपना मालिक और परवरदिगार जानकर होती रही। बीमारी के दिनों में बारहा ख़ानकाहों से मुरादें मांगती पड़ीं और बारहा देवताओंसे मुल्तजीहुआ। मुलाहज़ा हो सत्यार्थप्रकाश सु०३५४ बाब १२ बुतपरस्ती मूजिबे सज़ा है और सु० २६५ बाब ११ में लिखाहै कि "जोलोग ब्रह्मकी बजाय नापैदाशुदः यानी अज़ली माद्दे की उपासना करते हैं वह तारीकी यानी जहालतके अज़ाबके समुद्रमें ग़र्क होतेहैं। और जो ब्रह्म की बजाय पैदाशुदः ख़ाक वग़ैर अनासिर पत्थर और दरख़्त वग़ैरह अज़ाली और इन्सान वग़ैरह जिस्म की पूजा करतेहैं वह इस तारीकी सेभी बढ़कर तारीकी में गिरते हैं यानी परले दरजे की जहालत में वे असें तक ख़ौफ़नाक

अज़ावके दौरमें रह कर बहुत तकलीफ़ पाते हैं। और इसी तरह ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका सु० १२२ में बहवाले अथर्व वेद काण्ड ५ अनुवाक १ मन्त्र २ स्वामीजी लिखते हैं कि वेदों के ख़िलाफ़ अमल करनेसे इन्सान हैवानका जिस्म पाकर दुःख हासिल करता है। अब आर्यसमाज हमसे ज्यादा समझती है कि उनके महर्षि और शहीद अकबर किस योनि में हैं हम उनके मुताल्लिक इतना कह सकते हैं कि वहभी मोक्ष और निजात को हासिल नहीं कर सके। मज़कूरये बाला पतराजात से ज़ाहिर है कि वेद कामिल इलहामी किताब नहीं है और न उसकी तालीम इस लायक है कि उसपर इन्सान अमल करके ईश्वरको पा सके।

ख्वाजः जलालुद्दीन शम्स एम०ए० अहमदी मजाहद
सवालात मिन जानिब आर्यसमाज भोगाँव
(मैनपुरी) १ जुलाई १९२३ ई०

सवाल नं० (१)

ख़ास्सा इन्सानी चूंकि इस अमर पर क़ादिर नहीं कि वह अपने आप उन उसूलों को जानले कि जिनपर उसकी तरक्क़ी और तनज्जुल का मदार है इसलिये वह तकाज़ा करता है कि इस क़िस्म का अकमल और ग़ैर मुबहिल इल्म बशक्ल अवामिर व नवाही उसके ख़ालिक़ की तरफ़ से अता किया जावे जो इब्तदाय दुनिया में बिलावास्ता ग़ैरी पाक इन्सानों के पवित्र दिलों में मुन्कशिफ किया जावे ताकि नौए इन्सान उसके तवस्सुल से अपनी मंज़िले मक़सूद तक पहुँच सके। क़ुरान शरीफ़ चूंकि न तो इब्तदाय दुनिया में ज़ाहिर हुई और न पाक और गालिबुल हवास शख़्सपर इसका नुज़ूल हुआ है जैसाकि ४८वीं सूरत में आग़ाज़ही में लिखा है

और न कोई ऐसे नये उसूलों की मुज़हिर है जो पहली किताब में मौजूद न था और इसने ज़ाहिर किया हो इस वास्ते यह इलहामी किताब नहीं होसकती।

सवाल नं (२)

अब दूसरी बात जो कुदरती तौर पर इसके पहले वाके होनी चाहिये वह यह कि इबतदाय दुनिया में न तो इन्सान की कोई अपनी ज़ुबान होगी और न कोई मुल्क क्योंकि वह नौए इन्सान की सब से पहिली मख़लूक़ थी और इलहाम के हुसूल से पहिले उसको अभी मुल्क वग़ैरः की तकसीम का इल्म भी नहीं था इसवास्ते वह इलहाम किसी भी मुल्क और इन्सान की तराशीदा ज़ुबान में नहीं होसकता; अगर इन्सानी ज़ुबान में इलहाम होवे तो ख़ुदा को इन्सानी ज़ुबान और इन्सलाहात में मुकय्यद रहना पड़ेगा। और वह बारीकियाँ जो ख़ुदा ज़ाहिर करना चाहता है वह उस ज़ुबान के ज़रिये ज़ाहिर न कर सकेगा जो नाक़िस नामुकम्मिल है इस लिये कुरान इलहामी किताब नहीं हो सकती।

सवाल नं० (३)

जो इलहाम इब्तदाय आफ़रीनिश में होगा वह तमाम किस्से और कहानियों से पहले होगा इस वास्ते वह इनसे पाक होगा कुरान चूँकि क़सस वग़ैरह से पुर है इसवास्ते इलहामी नहीं होसकता। तारीख़ या क़सस का बयान करना इन्सानी फ़ेल होना चाहिये, ख़ुदा का काम तो उन उसूलों का ज़ाहिर करना है जो इन्सान सबसे पहले अपने आप जानने और बयान करने में क़ासिर हो। रसूल के घरेलू किस्से और बीबियों का तज़करा तो इसको मामूली मज़हबी किताब के दर्जे के क़ाबिल भी नहीं रखता।

सवाल नं० (४)

तरतीब और तनसीख़ से मुबर्रा हो यानी उसमें किसी किस्म की तबद्दोली कमी व बेशी न हो—"मानन् सख़् मिन् आयतिन्०" वग़ैरह इस बातका साफ़ सुबूत है कि कु़रान इलहामी किताब नहीं होसकती। ६६ आयतें इसमें नासिख़ और मंसूख़ हैं। यह बसूरते इलहाम नहीं यानी जिस तरतीब से यह नाज़िल हुई थी वह तरतीब ही नहीं है। बहुत सी आयात जो पत्ते वग़ैरह पर लिखी हुई थीं वह बकरियाँ चरगईं और कई मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ज़ाया होगईं। शिया लोग अब तक ज़िन्दा सुबूत हैं कि कु़रान के १० पारे इस मौजूदा नुसख़े में शामिल नहीं। पटनाकी लाइब्रेरी में ४० पारेका कु़रान अब तक मौजूद है।

सवाल नं० [५]

बे मानी तकरार मुत्तज़ाद और झूठ कलाम से मुबर्रा हो, "फ़बिऐ आलाहु रब्बि कुमा तुकज़्ज़े बान" की बेमानी तकरार और इस अमर को कई मुक़ाम पर उसही मफ़हूम के साथ बयान करना बैतुल्लाः को सिजदाहराम कह कर आदम को सिजदा कराना और इन्कार करने वाले को लानती ठहरा कर कुफ़्र की तालीम देते हुए अपनी बात को आपही काटना है। इबतदाए आफ़रीनश में हज़रत आदम से उनकी बीबी को पैदा करके बेटी से शादी को जायज़ ठहराना और बाद में इन दोनों से औलाद को पैदा करके बहन से शादी को हलाल गरदानना और बाद में अपने इस क़ौल की तरदीद—" हुर्रमत अलैकुम्० " के क़ौल से करना। रसूल को पहले बीबियों को आज़ादी देकर बाद में आज़ादी को छीन लेना देखो सूरत अहज़ाब इससे साबित है कि क़ुरान इलहामी नहीं।

सवाल नं० [६]

कुदरती क़ानून के मुआफ़िक़ हो यानी क़ौल और फ़ेल में मुख़तलिफ़ न हो—

१-पत्थर से पानी के चश्मों का डंडे के देमारने से पैदा होजाना।

२-पहाड़ से ऊंटनी (हामिला) का निकल आना।

३-मक़तूल से मुर्दा गाय के अज़ुव को छुआकर क़ातिल का पता लगाना।

४-इन्सानों का इसी जिस्म के साथ बन्दर और सूअर बनना।

५-शक्कुल क़मर का होना।

६-याजूज माजूज का एक ऐसी दीवार का बनाना जिस का नाम निशान तक मौजूद न हो।

७-आसमान की खाल खेंचना।

८-खुदा का आग में स वालना वग़ैरह २।

९-नेस्ती से हस्ती का मानना।

१०-पैदा शुदा चीज़ को अबदी मानना। इससे साबित है कि कुरान इलहामी नहीं।

सवाल नं० (७)

इल्म मन्तिक़ हैयत और फ़लसफ़ा भी उसको ग़लत न साबित कर सके।

* (१) अदम से वजूद (२) मुमतनाउल वजूद शै का होना (३) अज़ली शक़ी और सईद को सज़ा और जज़ा (४) रसूल की बीवियाँ मायें हैं परन्तु रसूल बाप नहीं (५) जन्नत

---

*फ़लसफ़े के ख़िलाफ़

में हमेशा जवान रहने वाली और हमेशा लड़के ही रहने वाले लौंडों वग़ैरह का होना।

इन तमाम बातों से क़ुरान एक मामूली आलिम शख़्स का भी कलाम साबित नहीं होता जो इल्म मन्तिक़ वग़ैरह से वाक़िफ़ हो।

सवाल नं० (८)

ख़ुदा को ऐसी शक्ल में पेश करना जिससे उसका वजूद नाक़िस साबित हो—

१–ख़ुदा और शैतान दोनों को गुमराह करने वाला बयान करना—" अतुरीदूना अन् तहदू मंला यहसबन्नल्लज़ीना।"

२–पैदायशी बदकार और नीकोकार पैदा करना—"लौशा अल्ला तुलजा अलाकुम्।"

३–ख़ुदा का लोगों के दिलों पर परदा डालना व कान में गिरानी पैदा करना वग़ैरह " इज़ा करातल कुरआना।"

४–ख़ुदा पर बेइल्मी का सुबूत " मा मन् अना अन् नूर सिल्ला इल्ला लेन अलमा।"

५–ख़ुदा को नाउम्मीद व निराश बनाना " वहक्कन कलि-मतो रब्बकाल अन्न लिज़न्न वक़लीलुम् मिन् इबादियश्शकर"

६–क़यामत के वक़्त से बेख़बरी " इन्नमाइल्मोहा इन्दा रब्ब।"

७–ख़ुदा का मुहम्मद साहब की बीवियों के क़िस्से में पड़ना जो उसकी शान के बिलकुल बईद है।

८–ख़ुदा का इन्सान से नाउम्मीद होकर उसको कोसना " क़ुतिलल् इन्सानो मा अक्फ़राहू"

इस से साफ़ साबित है कि क़ुरान ख़ुदा का कलाम किसी सूरत में भी नहीं है।

सवाल नं० (९)

वह तमाम उसूले हक़ीक़ी का मख़ज़न हो जो निजात हासिल कराने के लिये ज़रूरी हो।

१-ब्रह्मचर्यकी तालीम।२ शादीके काबिल कब इंसान होता है। ३ घरकी ज़िंदगी कबतक फ़ायदेमंद है और कब ज़रूर रसाँ ४ इल्म हिंदसा इल्म ज्योतिष इल्म गणित इल्म मन्तिक व फ़लसफ़ा पैदायश दुनियांका सिलसिला पदार्थ विद्या वग़ैरह। ५ रूह और नाद की तारीफ़ उसकी हक़ीक़त और माहियत। ६ शादी किन रिश्तों में हराम या हलाल है उसका जामाबयान ७ खुदाके विसालके ज़रिये का बयान ८ मुक्ति या निजात की तारीफ़। ९ एक औरत अपनी उम्रमें कितने मर्दोंसे निकाह कर सकती है। चूंकि इन उमूरसे कुरान ख़ाली है इस वास्ते इल्हामी नहीं है।

सवाल नं० (१०)

उसमें किसी ख़ास शख्स या कौम की तरफ़दारी न हो और न किसी ख़ास इन्सान पर ईमान लाने का तरगीब दी जावे-"व मन्नम् यूमिम् बिल्लाहि व कज़ालिका औहैना इलैका"

सवाल नं० (११)

खुदा ने अपने होने के कितने ज़माने के बाद दुनिया के पैदा करने या किसी तरह की भी मख़लूक़ को पैदा करने का काम शुरू किया।

सवाल नं० (१२)

क्या खुदा में ख़ाली बैठे रहने का भी लिफ़त है अगर है तो उसकी वजह क्या है?

सवाल नं० (१३)

खुदा के दुनियाँ करने से पहले मुमकिनात और मुमतने-आत दोनों का अदम था क्या उस वक्त इन दोनों अदमों में कुछ फ़र्क था ? अगर था तो वह क्या था ? बयान किया जावे और अगर न था तो बाद पैदायश दुनियाँ यह फ़र्क क्योंवाके हुआ कि एक अदम तो मादूम होगया और खुदा से हरसेह ज़माने में भी नहीं मिटसका।

सवाल नं० (१४)

जिस वक्त सिवाय खुदा के कोई चीज़ नहीं थी उस वक्त खुदाके इल्म में मालूम क्या था ? इल्मे खुदाका कुछ सबब था या इल्म खुदा तमाम मखलूक का सबब था ?

सवाल नं० (१५)

यह जो कुछ भी खुदाने पैदा किया है वह अपने इल्म के मुताबिक है या मर्ज़ी के मुताबिक ?

सवाल नं० (१६)

क्या मौसूफ़ और सिफ़तमें तआल्लुक इल्लत और मालूल होसकता है ? अगर नहीं तो क्यों ? और होसकताहै तो कैसे ?

सवाल नं० (१७)

फलाँ शख्स ज़िना करेगा , फ़लाँ फाँसी खायगा, फ़लाँ ईमान लायगा और फ़लाँ नहीं फ़लाँ राजा होगा और फ़लाँ ग़रीब वग़ैरह २ तरह पर खुदा का इल्म क्यों वाके हुआ क्यों कि मखलूक का तो बिल्कुल अदम था फिर खुदाके ऐसे इल्म का क्या सबब था ?

सवाल नं० (१८)

आप जन्नत में भी रूहका नेक या बद या दोनों तरह के फ़ेल करना मानते हैं या नहीं ? अगर मानते हैं तो इन आमाल की जज़ा और सज़ा कहाँ होगी ? जिस तरह यहाँ के आमाल का बदला जन्नत और दोज़ख में मिलता है तो वहाँ के आमाल का नतीजा कहाँ मिलेगा ? अगर आमाल नहीं मानते तो कुरआन से इसका सुबूत दो ?

सवाल नं० (१९)

ज़िना, बेग़ैरती और हरामकारी इन तीनों में अगर आप फ़र्क समझतेहैं तो इन तीनों की अलहदा अलहदा तारीफ़ करें और अगर कुछ फ़र्क नहीं समझते तो सिर्फ़ ज़िना की तारीफ़ लिखदें अगर क़ुरानी आयत की बिनापर होतो अच्छा है

सवाल नं० (२०)

इलहाम की तारीफ़ क्याहैऔर लफ़्ज़ इलहामके माने क्या हैं?

जवाब एतराज़ात अहमदी साहेबानजो उन्होंने वेदों के इल्हाम न होने के मुतअल्लिक़ किये—

१—आपका सवाल कि वेदके मुलहमान का नाम वेदों में होना चाहिए आपकी बेइल्मी को ज़ाहिर करता है कि सच्चे इलहामी किताब कौन हो सकती है ? आपको अभी तक क़ुरानी ख़्वाब ही आते हैं जो दुनिया के बीच में आप नाज़िल होना मानते हैं। किसी शख़्स का नाम या हालात इलहामी किताब में होना उसको तवारीख़ या बाद की किताब साबित करता है। नाम बाद में रखे जाते हैं जो वेद में नहीं हो सकते। हाँ वेदों में यह साफ़ लिखा हुआ है कि वेदों का प्रकाश ऋषियों के हृदयों में हुआ जो बेलौस थे। ऋग्वेद मं०

१० सूक्त ७१ मन्त्र ३ वेद ४ हैं; विद्या तीन हैं वेदों में जहाँ कहीं तीन नामों का ज़िक्र आया है वह तीन प्रकार के मन्त्रों का ज़िक्र है जो चारों वेदों में हैं। विज्ञान जिसका ज़िक्र ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में किया है उसको कोई नया इल्म नहीं बयान किया बल्कि साफ़ लिखा है कि "विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् उपयोग का लेना" इन तीनों का यथावत् उपयोग कोई नया इल्म नहीं बल्कि इन तीनों में ही आजाता है जिसका तअल्लुक़ सहीह इस्तैमाल से है। वेद ख़ुद दावा करते हैं कि इब्तदाय आफ़रीनश में प्रकट हुए देखो-ऋग्वेद मं० १० सूक्त ७१ मं० १ सनातन धर्मी ठीक कहते हैं कि वेद ब्रह्मापर नाज़िल हुए जो कि एक Degree है। गायत्री उपनिषद् में लिखा है कि वेदद्दोत् ब्रह्मा भवति" यानी वेदों से ब्रह्मा होता है सो अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा वेदों के प्राप्त करने से ब्रह्मा भी कहे जासकते हैं। जैसे आप लोग जहाँ अपनी शरई क़ाबलियत की बिना पर हाफ़िज़ और मुबहिस और मुबल्लिग़ कहाते हुए अहमदी कहे जाते हैं इसी तरह चारों ऋषि भी अलग २ वेद के हामिल होने से अग्नि वग़ैरह नाम वाले कहलाते हुए सारे ही वेदों के मुलहम होनेसे ब्रह्मा कहला सकते हैं। आपने, मालूम होता है, वेदों का मुताअला ही नहीं किया बल्कि अंधाधुंध एतराज़ कर मारा। ऋग्वेद में अथर्ववेद का साफ़ ज़िकर है—देखो मं० ६ सूक्त १५ मन्त्र १७। अब तो शर्मिन्दा होना चाहिये कि सबसे पहले वेद में अथर्व का ज़िक्र आगया। आपको छन्द शब्द के अर्थ नहीं मालूम "छन्दांसि छादनात्" यह निरुक्त में लिखा है यानी वे स्वतन्त्र प्रमाण और सत्य विद्याओं से परिपूर्ण हैं।

वेदों के हामिल इब्तदा के आदमी क्यों नहीं हो सकते इस की दलील जो जनाब ने दी है यह बिलकुल लचर है। इस जमाने में हर शख्स कुरआन का हामिल नहीं हो सकता वहशी लोग तो यह भी नहीं जानते कि कुरान किस बला का नाम है। अगर आप यह फ़रमावें कि कुरान में हर दर्जे के आदमी के वास्ते हिदायत मौजूद है तो इस ही तरीक पर इब्तदाय दुनिया में भी हर तरह के आदमी के वास्ते वेद में तालीम मौजूद है क्योंकि यह मुकम्मल ज्ञान है तरक्की इन्सान करते हैं न कि ईश्वरीय ज्ञान।

अगर इन्सान की तरक्की के साथ इलहाम आवे तो आइन्दा भी इलहामी किताबों का सिलसिला बन्द न होना चाहिये। आप के यहां तो इन्सानी तरक्की मुहाल है क्योंकि जो रूहें पहिले जमाने में गुज़र चुकीं वह अब नहीं आवेंगी तो तरक्की कैसे होगी? जब पहिली वाकफ़ियत में इज़ाफ़ा ही नहीं है बल्कि हर जमाने में नये आदमी और रूहें आती हैं।

वेद में जितने हवाले आपने उस के इब्तदाय दुनिया में नाज़िल न होने के दिये हैं वह उसूले तवारीख़ को ज़ाहिर करते हैं नकि किसी ख़ास शख्स की हालत को। यह हुक्म निस्बती है यानी हर ज़माने में हर शख्स पर आयद हो सकता है कि वह अपने से पहिलों के कदम बकदम चले जो नेक थे। किसी ख़ास शख्स या जमाने का ज़िक्र नहीं है एक हुक्म आम है। हम दुनिया को सिलसिले से अनादि मानते हैं इस वास्ते इस में कोई नुक्स नहीं आता।

२-वेद से इस अमर का सुबूत किया जा चुका है कि वेद ४ कैसे हैं और वह ऋषियोंपर नाज़िल हुए हैं। खुदा की तरफ़ से होने की दलील यह है कि-

"पश्य देवस्य काव्यम्" । "न ममार न जीर्य्यति" यानी वेद के अहकाम लातग़ैय्यर व लातबद्दुल हैं और अबतक क़ायम हैं और आगे भी कायम रहेंगे ।

३—"द्वासुपर्णा" इत्यादि मंत्र साबित करता है कि रूह माद्दा क़दीम है । और क्योंकर कदीम हैं देखो यजुर्वेद अध्याय १२ मन्त्र ३ वेद को हिफ़ाज़त के लिये देखो ऊपर वाला प्रमाण और लफ्ज़ "बृहस्पति" के माने ही वेद नाम की बृहत् वाणी की रक्षा करने वाला है ।

वेदों के मुहर्रफ़ होने के मुताल्लिक जो सुबूत आपने दिया वह महज पाठभेद है तहरीफ़ नहीं । क़ुरान में कई मुक़ाम पर कई तरह का फ़र्क है । लफ़्ज़ों के लफ़्ज़ उलट पुलट हो गये हैं "लन तनालुल बिर्रा हुत्तावुन फ़िक्कू मिम्मा तुहीब्बून" में मिम्मा की जगह "बाज़ामा भी पढ़ा जाता है । अल्लोपनिषद का दाख़िल करना इसी तरह है कि जैसे कोई क़ुरान के साथ कुछ अर्बी की इबारत बढ़ा दी जावे और वह साफ़ मालूम हो जावे । अगर वेदों में यह बात खप जाती तो तहरीफ़ ज़ुरूर थी किसी के छपादेने से तहरीफ़ नहीं हो सकती ।

४—अलङ्कारों के न समझने से आपने सब एतराज़ात किये हैं । क़ुरान में खुदा के नूर की मिसाल ताक़ में कंदील और कंदील में चिराग़ से दी है देखिये कैसी नाकिस मिसाल है । वेद में ईश्वर की मिसाल सूर्य से दी है । यहां चोरी के मानी बिला मालूम हुए अशिया के दूर होजाने के हैं । यानी खुदा बदआमालियों के बदले तमाम सामान आराम और आसाइश के छुपकेर दूर कर देता है, यहाँ चोरी वह चोरी नहीं है जो इन्सान करता है । हमल गिराने की बात इस तरह पर है कि हम ऐसे अमल

न कर जिससे हमारे हमल गिरें यानी वे एतदालियों से अलग रहें और खुदा की इस अमर में इमदाद चाहें। कमइल्मी का मज़मून खुदा की तरफ़ नहीं है। यह उस्ताद और शागिर्द के बीच बात चीत है। सुनना भी गुरु और शिष्य की बात चीत है खुदा के मुतल्लिक नहीं। वेद में मन्त्रों का बयान इस तरीक पर किया है जैसे उन लोगों की ज़ुबान पर ही उस मज़मून को रख दिया है जिनका उसमें ज़िक्र है।

ईश्वर हरकत करता है यानी हरकत का सबब है (हरकत का कारण बनता है) जैसे चुम्बक पत्थर जब हरकत करता है तो दूसरे को बिला अपने हरकत किये हरकत दे देता है।

५—अग्निहोत्र के वास्ते यह भी लिखा है कि महज़ समिधाओं से ही हवन करदें अगर और चीज़ों का अभाव हो।

६—नियोग चाहे किसी सूरत में किया जावे अगर वह मुकर्रिरह शरायत के मातहत किया जाता है तो बुरा नहीं। बाहमी रंजिश को दवा करने के बाद का नुसखा है। इसमें फ़ितरत के खिलाफ़ कोई बात नहीं। जब कि मुतबन्ना बेटा बेटा हो सकता है तो इसमें क्या शक हो सकता है ? आपको मालूम नहीं इस्लाम में अगर कोई शख्स पूरब में हो और उसकी बीबी पश्चिम में हो और औलाद पैदा हो जावे तो वह औलाद उसी खाविंद की शुमार की जावेगी जिसकी वह बीबी है।

७—नियोग का अमल में न होना दो वजह से नहीं होता या तो इसकी किसी को ज़रूरत नहीं या वह मौजूदह रिवाज के असर से मुअस्सर होकर डरता हो। उसूल की कोई कमज़ोरी नहीं। मुतबन्ना अब कोई मुसलमान क्यों नहीं बनाते। ? । उस आयत का क्या फ़ायदा जो मुतबन्ना की बीबी का निकाह

में लाने की इजाज़त देती है। उस आयत का होना न होना फ़िज़ूल है।

८—यह नाम काम की इच्छा के पैमाने के लिहाज़ से है, लिहाजा इसमें कोई नुक्स नहीं आता।

९—शादी किन रिश्तों में होनी चाहिये और किन में न होनी चाहिये वेद में उसे बयान किया है। "पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्"। ऋग्वेद मं० १० सू० १० मं० ११ जिससे, साबित है कि हमको मा बहन और बेटी से विवाह नहीं करना चाहिये जिनके मातहत

मा	बहन	बेटी
दादी	चाची की	भाई की
नानी	तायाकी	सालेकी
चाची	मामू की	साढ़ूकी
ताई	मौसीकी	वग़ैरह
मौसी	वग़ैरह की बेटी	

इस बयान ने कुरान के मुफ़स्सल बयान को भी शर्माया है। दादी, नानी और मुतअन्ना की बेटी की मुमानियत का बयान कुरान की तफ़सील से भी रहगया।

१०—मनु के हवाले से जिन औरतों की मुमानियत शादी के वास्ते की है वह मुख़ालिफ़ सिफ़ात की वजह से है। अगर दोनों मुआफ़िक़ हों तो कोई हर्ज नहीं।

११—भूरी आंख वाली से काली आंख वाले शादी करें तो आंख के बहुत से मर्ज़ पैदा होजाते हैं; परन्तु अगर मुआफ़िक़ आंखवाले करेंगे तो नहीं हो सकते कुवाय रूहवानी का जवाब भी ऊपर से मिलजायेगा। लेकिन आपके कुरान में खुदा ने सूरते निसा यह लिखकर आपके सवाल को रद्द करदिया है

"ज़ालिका लेमन् खशियल् अनता मिन् कुम्"-आयत २५

१२—मुरदा जलाने का इन्तज़ाम बिरादरी और राजा पर है अब वह इस तरीक़े को मुफ़ीद समझें। जैसे मौजूदा रिवाज के मुआफ़िक़ अब भी सरकार ने अपने ऊपर ज़िम्मा लिया हुआ है।

१३—ज़रा अक्ल के नाखून लिवाओ। यह सवाल मर्द और औरतों से उन लोगों का है जिनके यहाँ वह जावें या क़याम करें यानी आप ख़ाविंद औरत हैं या कोई और। वेद ने ख़ाविंद औरत का रिश्ता तारीफ़न् बयान किया है।

हज़रत अपनी बीवियों को अकसर साथ क्यों लेजाया करते थे। हज़रत आयशा पर ज़िना का इल्ज़ाम कब लगाया गया था। ज़रा याद कर लीजिये।

१४—बैलसे गाय को ग्याभन होने की मिसाल सिर्फ़ इस वास्ते है कि हम दुनिया में हर चीज़ उसकी पूरी अवस्था पर और ठीक वक्त पर पैदा करें ताकि पूर्ण आनन्द की प्राप्ति हो शहवतरानी के वास्ते नहीं। बैलसे भोग के माने उससे फ़ायदा उठाने के हैं। कु़रान में "फ़ातू हर्सा कुम् अन्ना शीतुम" के क्या मानी हैं ?

"फ़न् फ़ख़ना फ़ीहे मिरूहेना" हज़रत मरियम की शर्मगाह में अपनी रूह फूँकने का ज़िक्र है और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त का।

१५—इन मन्त्रों में हर चीज़ को उसके मौज़ूं काम के वास्ते पैदा किया हुआ प्रकट किया है।

१६—खु़दा रूह माद्दे से पैदा करने में मोहताज नहीं। मुहताज़ तो वह है जिसके पास कुछ भी नहीं। राजा भी खाना खाता है और फ़क़ीर भी। राजा मुहताज नहीं गरदाना

जाता लेकिन फ़क़ीर गरदाना जाता है इसी तरीक़ पर इस्लामी खु.दा मुहताज है। कु.रान में "लक़द् ख़लक़ना" वग़ैरह से खु.दाका कुम्हार होना साबित है।

१७—मा बहन का रिश्ता जिस्म के साथ मिली हुई रूह से है जो किन्हीं ख़ास आमाल की बिनापर क़ायम हुई हों। मरने के बाद वह आमिल हीं नहीं रहते और न वह जिस्म इसवास्ते कोई नुक़्स नहीं आता।

आपके यहां तो पैदायशी रिश्ते (चचा की बेटी बहनको) मस्नूई से तबदील करके बीबी बना दिया जाता है और फिर तलाक़ देकर बहन की बहन। हज़रत ने अपनी फूफी ज़ाद बहन के रिश्ते को बेटे की बहू का रिश्ता बनाकर बीबी के रिश्ते में कैसे तबदील करलिया?

१८—परदेवाले ज़िना से ख़ाली नहीं। हज़रत ने परदे को न.मुकम्मिल समझ कर ही तो अपनी बीबियों को आम लोगों की मा बनाया। यानी अगर लोग मा बहन समझलें तो ज़िना दूर होजाये। परदे को खुद नामुकम्मिल हज़रत ने साबित कर दिया हज़रत के यहां जैसी ताक झाँक यहां नहीं है। हज़रत जानते थे कि परदे से आदमी तो औरतों को न देख सकेंगे मगर औरतें ज़रूर खूबसूरत आदमी को भाँप लेंगी इसवास्ते अपनी बीबियों को ग़ैरों की मा बनाया। लेकिन आप बाप न बने ताकि अपनी आज़ादी में फ़र्क़ न आवे। विरसा लड़के को ही दिया जावे लड़की को नहीं। देखो ऋग्वेद मंडल १ सू० १२४ मन्त्र ७। ८॥ ऋग्वेद मं० ४ सू० ७ मं० ४॥

१९—सौसाल की उम्र ना मुमकिन नहीं जबकि अब भी ग़ालिबुस् हवास व अच्छे भोगवाले अशख़ास १०० से भी

ज्यादह उम्र वाले पाये जाते हैं। ४०० सालकी उम्र योगसाधन से प्राप्त होसकती है। साधारण कामों से नहीं।

२०—हमारे यहाँ हर शख़्स सिवाय हिदायती इलहाम के कलीमुल्ला होसकता है जो भी योग का साधन करे। मुलहम नये ज्ञान का नहीं होसकता।

सच्चिदानन्द मन्त्री आ० स०

जवाब परचे आर्यसमाज मिंजानिब जमायत अहमदिया ता० १-७-२३

पहले सवाल का जवाब–आँहज़रत सल्लम की जिन्दगी बिल्कुल साफ़ और पवित्र थी। कुरान करीम में चैलेञ्ज मौजूद है।

कोई है जो तेरी जिन्दगी पर ऐब लगासके या कोई गुनाह साबित करसके और फ़रमाया कि "माज़िल् साहब कुम्ब मागवाए" कि तुम्हारा साथी न कभी सीधे रास्ते से भटका और न गुमराह हुआ और "लेयग् फ़िर लक्ल्लाहो" मुराद यह है कि हमने तुझे इसलिये फ़तह दी है कि लोगों ने जो मेरे गुनाह और कुसूर किये हैं उनको ढाँपदे और गुनाह यहां मुराद नहीं होसकते क्योंकि नतीजा जो यहां बयान फ़रमाया है वह सहीह नहीं होसकता क्योंकि आगे फ़रमाया है "वयुतिम्म असेभत हू" कि अपनी न्यामत तुझपर पूरी करी, गुनाह का नतीजा न्यामत नहीं होसकती और "ज़म्ब" के मानी बशरी कमज़ोरी के भी हैं। कुरान मजीद में गुनाह को फ़िस्क़, असम, जुर्म के नाम से ताबीर कियागया है "वस्तग़फ़िर लेज़म्बेके" का हुक्म से मुराद आइन्दह की कमज़ोरियां जो

शरियत के मुआफ़िक़ हैं उनसे हिफ़ाज़त तलब करना है। जैसे कि सूरह फ़तह के बाद सूरह नसर जो आपकी वफ़ात से थोड़ी ही देर पहिले नाज़िल हुई उसमें भी हुक्म "वस्त-ग़्फ़िरहों" का दियागया इस बात पर दाल है।

दूसरे सवाल का जवाब–यह अमर सहीह नहीं। क्योंकि इब्तदा में कामिल तालीम का देना दुरुस्त नहीं है जैसे कि मैं अपने एतराज़ात में एतराज़ नं० १ में लिखचुका हूँ अगर खुदा ताअला ने अपनी ज़ुबान में ही वेद नाज़िल किये थे तो वह ऋषि उनको समझते थे या नहीं ? अगर कहो नहीं समझते थे तो फिर ख़ुदा ताअलाने इन्हें समझाया तो पहला काम बेहूदा हुआ। बहरहाल जब किसी किताब का नुज़ूल जब कभी होगा तो वह किसी ज़ुबान में होगा। अगर हज़रत मसीह मौऊद मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी ने चैलेंज दिया था और आपकी किताब में बिल् वज़ाहत लिखा हुआ है कि अम्मुल्अलसना अर्बी ज़ुबान है और वही मुकम्मिल और कामिल किताब है। संस्कृत तो इस ज़माने में मुर्दा ज़ुबान है जो किसी मुल्क में नहीं बोली जाती और खुदा ताअला का कलाम ऐसी ज़ुबान में होना चाहिये जो ज़िन्दा हो अगर किसी मुल्क की ज़ुबान नहो तो एक मन्त्र के हल करने में अगर झगड़ा पड़जाये तो उसका फ़ैसला किस तरह कर सकते हैं।

३—समझाने के तरीक़ों में से यह भी एक तरीक़ा है कि मिसाल देकर समझाया जावे और कामिल इलहामी किताब के लिये यह ज़रूरी है कि वह इन सब तरीक़ों को काममें लावे जो समझाने के लिये होसकते हैं। फिर क़ुरान मजीद में जिस क़दर वाक़ेआत बयान किये गये हैं उनकी तहरीर से सिर्फ़

यही ग़र्ज़ नहीं कि गुज़िश्ता लोगों के नेक काम और बद काम पेश करके उनका अंजाम सुनादिया जावे ताकि वह रग़बत और इबरत का ज़रिया हो। बल्कि यह भी गरज़ है कि इन तमाम क़िस्सों को पेशगोई के रंग में पेश किया गया है और जतला दियागया है कि इस ज़माने में भी ज़ालिम और शरीर लोगों को अंजामकार पहिले शरीरों जैसी सज़ाए मिलेंगी। फिर जो इन्सानों ने तारीखें और वाक़आत बयान किये हैं। उनमें अक्सर ग़लत हुए हैं मगर जो खुदा ताअला बतायेगा वही सही और दुरुस्त होंगे और कामिल किताब के लिये ज़रूरी है कि वह ख़ानेदारी के उसूल पेशकरे और उनकेलिये कामिल नमूना भी पेशकरे मगर वेदों के ऋषि तो बिल्कुल लापता और मफ़क़ूदुल् ख़बर हैं जिनका पता नहीं कि वह क्या करते थे क्या नहीं करते थे ?

४—क़ुरान शरीफ़ में कोई आयत मंसूख़ नहीं है और आयत पेशकरदा का मतलब यह है कि पहिली किताब मंसूख हैं और क़ुरान शरीफ़ सबसे बढ़कर किताब है और जितनी सच्ची और पाक तालीमें पहली किताबों में पाई जाती हैं वह उसमें आगई हैं और यह तरतीब भी इलहामी है। हदीस में आया है कि हज़रत जिब्राईल हरसाल क़ुरान मजीद का आँ हज़रत से दौर किया करते थे। और हदीस "अबदोबेमाबद अल्लाह" भी तरतीब पर दलालत करती है और यह कहना कि पत्तों पर क़ुरान लिखाहुआ था बकरी खागई मैं नहीं समझता कि मनाज़िर इतना भी नहीं सोच सकता कि क़ुरान मजीद सिर्फ़ पत्तोंपर ही लिखाजाता था नहीं बल्कि हज़ारहा हाफ़िज़ उसके मौजूद हुए हैं और हिफ्ज़ कराया जाता था और तेरह सौ साल से इसी तरह महफ़ूज़ चलाआया है। देखिये दीबाचा

लाइफ़ आफ़ मुहम्मद सुफ़ा २१ तथा सोयम में लिखा है कि "इस बात को मानने के लिये बहुत जबरदस्त वजूह मौजूद हैं कि रसूल की ज़िन्दगी में मुतफ़र्रिक तौर पर कुरान के नुसखे लिखेहुए सहाबा के पास मौजूद थे और उन नुस्खों में सारा कुरान या क़रीबन सारा लिखाहुआ मौजूद था। बताइये दुश्मने इस्लाम की शहादत भी आपकेलिये काफ़ी होगी या नहीं ? इसी तरह तर्जुमे कुरान मुसन्निफ़े रावल सुफ़े ५६ में कुरान करीम के मातहत लिखा है कि "इस जुमले से कम अज़ कम इतना पता तो मिलता है कि कुरान शरीफ़ की सूरतों के लिखे हुए नुस्खे आम तौर ज़ेर इस्तैमाल थे।

५—(१) बेमानी तकरार कुरान मजीद में कहीं नहीं, आप एक जगह भी साबित करें।

(२) सिजदे के मानी अरबी ज़ुबान में अताअत और फ़र्मां बरदारी के हैं और यही मुराद हैं। दूसरे यहां लाम तालील की है कि खुदा ताअला को सिजदा करो इसलिये कि उसने आदम जैसा शख़्श पैदा किया है।

(३) कुफ़्र की तालीम नहीं थी खुदाताला के हुक्म की तामील जरूरी थी,

(४) कुरान करीम में नहीं लिखा, इन बातों का सुबूत कुरान मजीद से मय आयात लिखो,

(५) "हुर्रमत अलैकुम् अम्महातकुम्" में अपने पहले क़ौल की तरदीद नहीं है बल्के जो ऐसी बुरीरस्म मौजूद थी या वेद के आमलीन मस्लन वाममार्गियों में मौजूद थी उनकी तरदीद करना मद्देनज़र है और असल २ बताना असल ग़र्ज़ है किससे निकाह न कियाजावे।

(६) रसूल को आजादी देकर फिर आज़ादी छीनलेना.
आयत तहरीर करें किस आयत का तर्जुमा है ?

६–(अव्वल) आपइंजीनियरों से दरयाफ़्त करें कि पत्थरों से पानी निकलता है कि नहीं । शायद वेद इस इल्मसे बेबहरह हों मगर कुरान मजीद में हमें बता दिया है कि पत्थरों से भी चश्मे बह पड़ा करते हैं ।

–यह बिलकुल ग़लत है । कुरान मजीद में कहीं नहीं लिखा है कि पहाड़से हामिला ऊँटनी निकल आई । अगर आप कुरान मजीद से साबित करदें तो आप को मुबलिग़ एक हज़ार रुपया इनआम दिया जावेगा ।

न–कुरान मजीद में यह नहीं लिखा कि गाय का अज़्व छुआकर क़ातिल का पता लगाया । इसके मानी और भी हैं । अगर यह भी हों तो इसमें कोई हर्ज नहीं । इल्म तिबसे आपकी नावाक़फ़ियत साबित है । ताजा जो क़त्ल वाक़े हो या बेहोश हो अगर उसपर गर्म २ गोश्त सरपर रक्खा जावे तो वह थोड़ीसी देर के लिये होश में आजाता है ।

चहारुम–इन्सान इस जिस्म से बन्दर और सूअर नहीं बनाया गया ।

पंजुम–शक्कुलक़मर का होना क़ानून कुदरत के खिलाफ़ नहीं । क़ानून कुदरत पर आप मुहीत नहीं हैं । कुरान मजीद ने इस वाक़ए को बयान किया है मगर उस वक्त के लोग जो आप से ज्यादः दुश्मन थे और इस्लाम अभी इब्तदाई हालत में था उन्होंने इसकी

तरदीद नहीं की जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि यह वाक़या हुआ।

शिशुम—आसमान की खाल खेंचने से मुराद आसमान के उलूम की माहियत वगैरह का जानना है जो इस वक्त कमाल दर्जे को पहुंचा हुआ है यह पेशगोई थी जो पूरी हुई।

हफ्तुम्—ख़ुदा का आग में से बोलना कुरान में कहीं नहीं लिखा आयत तहरीर करें।

हश्तुम्—हस्ती से हस्ती मानने से आपका क्या मतलब है। हम कहते हैं कि मौजूदात पहले मौजूद नहीं थीं। ख़ुदाने पैदा किया और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में बहवाले ऋग्वेद इस बातको तस्लीम किया है कि इब्तदाई लतीफ़ अनासिर और प्रकृति वगैरह को ख़ुदा ताअलाने अपनी कुदरत से पैदा किये।

नहुम्—किताब अलबादान में सुफ़ा ७१ व २९८ व ३०१ और मरासुदुल् इत्तलाअ् सुफ़ा १११ बाब अलबाय व अलिफ तवअ् फ़ारस जिल्द १ व मरासदुल् इत्तलाअ् जिल्द २ बाब सीन व दाल सुफ़ा ७० में है कि याजूज व माजूज जिनका ज़िकर कुरान में है वह तुर्का की आख़िरी हद पर मशरिक़ वगैरह में है और इनकी ख़बर आम शोहरत रखती है। सलामतर-जुमानकी में इसका मुफ़स्सिल बयान है।

दहुम्—पैदा शुदह चीज़का अबदी मानना वह ख़ुद बख़ुद अबदी नहीं बल्के ख़ुदा ताअला चूँकि अज़ली और अबदी है वह अगर किसी चीज़ को हमेशा रक्खे तो

रख सकता है अलबत्ता हादिस चीज़ हर एक मुत-
ग़ैय्यर है और हम हर हादिस चीज़ को मुतग़ैयर
मानते हैं।

७—इल्म मन्तिक व फ़ल्सफ़ा इन्सानी इलहामी किताबके
मुक़ाबले में कुछ हैसियत नहीं रखता। पहले जमाने के
फ़िलासोफ़र जमीन के साकिन होनेके क़ायल थे और आज
कलके फ़िलासोफ़र और साइन्सदाँ कहते हैं कि जमीन चक्कर
खाती है। असल इल्म वह है जो खुदा ताअला बताये।

(१) इसका जवाब पहले दिया जा चुका है।

(२) इसको वाज़ै करें आपका क्या मतलब है?

(३) अज़ली शक़ी और सईद को भी वाज़ै करें। जो
इन्सान बुरे काम करता है वह काम कर चुकने के
बाद शक़ी और नेक काम करने से सईद होता है।

(४) रसूल की बीवियों को माएं कहागया है और
आहज़रत का दर्जा बढ़कर बताया गया है कि वह
मोमिनों के लिये उनकी जानों से भी ज़्यादा करीब
और मुशफिक़ कहानेवाले हैं और अक़ायद की कुतुब
में लिखा है कि "कुल रसूले अब्बुल् उम्मत" रसूल
अपनी उम्मत का बाप है और हक़ीक़ी माओं के
मुतअल्लिक ख़ुदाताअला ने फरमाया है कि जि-
न्होंने उन्हें जना है वही उनकी हक़ीक़ी मां हैं।

(५) इसमें क्या मुहाल है जब कि वह और जहान है यह
और जहान। उसकी आबोहवा और इसकी आबोहवा
और और कई करोड़ों सालों की मुद्दत पाकर भी
शायद आपके यहां इसअर्से में बूढ़ा होजाता होगा।

८—कुरान मजीद ने जिस शक्ल में खुदा को पेश किया है

और कौनसी किताब है जो पेश करे। फ़रमाया "अल् मलकल् कुद्‌दूस" वह तमाम उन इलज़ामात व अयूब से जो उसकी तर्फ़ मंसूब किये जाते हैं, पाक है।

(१) सुनिये ! अज़लाल नतीजा है ज़लाल गुमराह होने का। इन्सान जिस तर्फ़ का रास्ता इख्तयार करता है उस तर्फ़ जाता है क्योंकि ख़ुदाताअलाने गुमराही और हिदायत के दो जुदा रास्ते बनाये हैं जो कोई जिधर जाना चाहेगा ख़ुदा की दी हुई ताक़तों से चला जायगा। यह ऐसाही है जैसा कि स्वामी दयानन्द साहब लफ्ज़ 'रुद्र' के मुतअल्लिक़ लिखते हैं। 'जो इन्सान जैसा काम करता है वैसाही फल पाता है जब बुरे काम करनेवाले लोग ईश्वर के आदिलाना फ़ैसले की रूसे अज़ाब में मुबतला होते हैं तब रोते हैं और इस तरह ईश्वर उनको रुलाता है इसलिये परमेश्वर का नाम रुद्र है"। सत्यार्थप्रकाश सुफा २०

इन्सान खुद गुमराही के काम करता है और गुमराह होता है चूँकि असिल इल्लते ऊला ख़ुदा है उसकी तरफ़ से नतायज कामों के सादिर होते हैं और दूसरी जगह साफ़ फ़रमाया है कि "मायफ़ अलु वही इल्लल् फ़ासिकीन्" और "कज़ालेक यफअलुल्लाहो मन् हुव मुसरिफो मतीन" कि गुमराह उन्हीं को ठहराया है कि जो फ़ासिक बदकार और सर्फ़ हद से बढ़नेवाले अय्यार और ख़ुदा की बातों में शिर्क करनेवाले होते हैं और जिसको ख़ुदाताअला गुमराह ठहराये उसको हिदायतयाफ़ता कौन करसकता है

और कौनसी हिदायत देकर उसे सीधे रास्ते पर ला सकता है और दूसरी आयत में लाम आक़िबत की है कि उनको मुहलत दी जाती है जिसका नतीजा यह होना है कि वह गुनाहों में बढ़े हैं।

(२) यहां सैत है मुराद् उस से कि अगर खुदाताअला अपनी कुव्वत और जब्र से सबको एक उम्मत करना चाहता तो एक उम्मत करदेता मगर इस तरह से इन्सान सज़ा व जज़ा का मुस्तहक़ नहीं था क्यों कि वह हिदायत कुबूल करने में मजबूर ठहरता बल्के खुदा ताअलाने फ़रमाया "व कुलिल् हक्को मैंयकुम् फ़मन शाअफ़ल् यूमिनो वमन् शाअफ़ल यक्फ़रोग" कि कहदे कि यह तुम्हारे रब्ब की तरफ़ से हक़ है बस जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे इन्कार करे ईमान लानेवालों के लिये जन्नत और इन्कार करने वालों के लिये दोज़ख़ है।

(३) यह भी नतीजा है इस अमर का कि जबकि वह इन आज़ार से काम नहीं लेते मसलन जो बुरी सोहबत में बैठेगा ज़रूर है इसपर असर हो और जो चोरों की सुहबत में रहेगा तो चोर होगा। काफ़िरों का खुद अपना बयान है कि 'व क़ाल् कुलूबोन फ़ी अक्नतः मिम्मा तदऊनना इलैहेनफ़ी आज़ानेना व क़ुरू मैं यशाओव बैनना हिजावफ़ आमलइन्नना मिलन्" कि हमारे दिल इन बातों से जिनकी तरफ़ हम नहीं बुलाये हो परदों में हैं और हमारे कानों में बोझ हैं हमारे और तेरे दरम्यान बहुत सी रोकें और परदे हायल हैं तू भी काम कर हमभी अपना

काम करने वाले हैं शायद इसको आपने ख़ुदा की तर्फ़ मसूब करदिया है।

(४) आयत पेश करें।

(५) आयत पेशकरें।

(६) आयत पेश करें कु़रान शरीफ़ में तो साफ़ वारिद है कि क़यामत का इल्म ख़ुदा तआ़ला को है।

(७) उनबातों का बयान किया गया हैं जिनका क़ौमी इसलाह और तमद्दुन के लिये बयान करना ज़रूरी था।

६--तमाम उसूल हक़ीक़ी का मख़ज़न कुरान शरीफ़ है जो निजात हासिल करने के लिये ज़रूरी हैं।

(१) कु़रान मजीद की यही तालीम है कि जब इन्सान शादी के क़ाबिल हो शादी करे नियोग वग़ैरह को जायज़ क़रार नहीं दिया।

(२) यह सवाल ही बेहूदह है जब इन्सान को शादी की ज़रूरत हो वह शादी करले।

(३) तमाम उसूले मआ़शरत का कु़रान मजीद में बयान है।

(४) जिस क़द्र यूरुप में उलूम अक़लिया मुसलमान अरबों के ज़रिये से फैले हैं मुलाहज़ा हो किताब जान डोवन पोर्ट Jahn Doaan port वैसा ही राय बहादुर चेतन शाह साहब आनरैरी सर्जन और डाक्टर दस्सा मल सर्जन पंजाब रिव्यू जिल्द लहूम में लिखते हैं अहल यूरुप को इससे इन्कार नहीं हो सकता कि तमाम उलूम फ़लसफ़ा व तिब वग़ैरह बज़रिये अरब उन तक पहुंचे हैं। कैमिस्ट्री यानी इल्मे कीमिया भी अहल यूरुपने उन्हीं से सखतगरइस्त.मिया

में अरबों से हासिल किया है और इसके लिये कि-ताब मुसन्नफ़े मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब उलमुल कु़रान मुलाहज़ा फ़रमाएं सब उलूम से कु़रान का असबात किया गया है।

(५)वेदों से बढ़कर खुदाताअलाने कुरान मजीद में बयान फ़रमाया है एक उनमें से यही कि वह मखलूक हैं खु़द बखु़द क़दीम से वाजिबुल वजूद नहीं है खुदा के साथ क़दामत में शरीक नहीं।

(६)कुरान मजीद में बयान की गई है मसलन "हुरमत अलैकुम् और वेद में इसका ज़िकर नहीं।

(७)खुदा के विसाल का ज़रीया भी बयान किया गया है ख़ुदा की इबादत और उसके रास्ता में फ़ना हो जाना और दुआ वगैरह और कुरान मजीद पर अमल करने वालों में से तो हर एक ज़माने में ऐसे अशख़ास मौजूद रहे हैं जिनसे खुदा हमकलाम होता है मसलन इस जमाने में भी हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब मसीह मौऊद से पं: लेखराम की निस्बत पेशगोई करके साबित कर दिया है कि वाक़ई आपका तअल्लुक ख़ुदा से है और वह पेशगोई के मुताबिक़ क़त्ल हुआ और उसने जो तीन साल की पेशगोई आपकी निस्बत की थी वह बातिल साबित हुई।

(८)आख़िरत में अज़ाब जहन्नुम से बच जाना और ख़ुदाताअला की रज़ा को हासिल करना और सिर्फ़ ख़ुदा ताअला का हो जाना और जन्नत का हासिल करना असिल मुक्ति और निजात है।

(९) अपने खाविंद की मौजूदगी में जब तक कि वह उसके निकाह में है किसी दूसरे से निकाह नहीं कर सकती, नियोग का मसला क़ुरान मजीद में नहीं है।

१०—इस सवाल को मुफ़स्सिल लिखें और वह आयत पेश कर जिसपर आपको एतराज़ है।

११—ख़ुदा ताअला का जब से होना कहना उसके हुदूस को साबित करना है वह हमेशा से है "हुवल अव्वलो हुवल आख़िर" कोई चीज दुनिया की मौजूद न था और वह मौजूद था और जबसे ही वह मख़लूक़ को पैदा करता आया है। आप बताएँ रूह व माद्दा जबकि अलहदा थे कितनी देर के बाद उस परमेश्वर ने जोड़ना जाड़ना शुरू किया था।

१२—ख़ुदा ताअला क़ुरान करीम में फ़रमाता है"क़ुल्लोयो-मिन् हुवं फी शान"।

वह हर एक दिन हर जमाने हर वक्त में काम कर रहा है ख़ुदा ताअला की सिफ़ात दो किस्म की हैं एक ज़ाती है और वह उन सिफ़ात का नाम हैं जो बग़ैर हाजित वजूद मख़लूक़ के पाई जाती हैं जैसे कि उसकी वहदानियत इसका इल्म उसका तक़द्दुस है।

१३—१४—हम अदम महज़ ही मख़लूक़ात को वजूद नहीं मानते बल्कि हमारा यह अक़ीदह है कि मौजूद बिल ख़ारिज कोई चीज़ नहीं। आप ही बताएं कि आज जो मनाज़रा होरहा है, इसका ईश्वर को आज से सौ साल पहले इल्म था या नहीं, अगर था तो मालूम कहाँ था अगर नहीं तो क्यों?

१५—आप बतायें कि ईश्वर मुहीतुल् अशिया व अलीमें कुल है या नहीं और आया उसका इल्म या मर्जी एक चीज़ है या दो?

१६—आप मौसूफ और सिफत इल्लत और मालूम में माबिहल् इश्तिराक और माबिहल इफ्तराक़ और माबिहल् इम्तयाज़ और माबिहल् इनफिकाक़ बयान करें और बतायें कि उनके दरमियान निस्बतें अरबा में से कौन सी निस्बत पाई जाती है इसके मालूम होजाने पर जवाब खुद वाज़े होजावेगा।

१७-इसके एक हिस्से का जवाब तो सवाल नं० १३ में आचुका है। अब बाक़ी हिस्से के मुतल्लिक़ बयान करें कि किस आयत पर एतराज़ किया गया है?

१८—जन्नत में हम बदआमाल का करना नहीं मानते बल्कि क़ुरान करीम में खुदा ताअला फ़रमाता है "दावाहुम् फीहा सुभानेक अल्लहुम् व तहैयतुम् फीहासलाम व आखिरो दावाहुम् इअल् हम्द लिल्लाहे रबिल्आलमीन्" कि जन्नत में खुदाताअला की तस्बीह करेंगे उनका तुहफ़ा सलामती होगा और उनकी पुकार यही होगी कि तमाम तारीफें खुदा ताअला के लिये हैं कि जिसने रूह और माद्दे को पैदा किया और हमको इन्सान बनाया और हमारी परवरिश की और हमें इनआम का वारिस किया। पस जब इन्सान को जन्नत जैसा मुकाम दियागया है तो बलिहाज़ इन्सानियत ज़रूरी है कि वह शुकरिये में मशगूलरहे और हम्दो सना करे। तमाम मख़लूक से अमूमन और अम्बियाए जिन्स से खुसूसन प्यार व मुहब्बत करे और बुग्ज और कीने से बाज रहे इन्हीं आयतों में इन उमूर का ज़िक्र कियागया है "वक़ालुल् हमदुल्लाजी सदक़ना वादिह व अवरसनल् अर्ज़ीनतूब मिनल् जन्नते है सो नशाअफने मा अजरुल् आमिलीन वाहम ताअल्लुकात वन्जाअन माफी सुदूरेहिम् मिन् गिल्ली फीहा

अन्दा धे मुखं रजीन न अला सररिन मुतकाबिलीन बाय-मस्सुहुम्" नेक आमाल खुदा की हम्दो सना करना है इसलिये हम कहते हैं कि खुदा ताअला का फजल गैर महदूद है और जन्नत में जानेवाले व वजह इस हमदो सना के जो वह जन्नत में भी करेंगे हमेशा मदारिज में तरक्की करते रहेंगे।

१६—यह एतराज कुरान शरीफ की किस आयत की बिनावर है वह आयत पेश करें अगर आप जुबानी तहरीफ भी नहीं जानते तो ताजीरातहिन्द ही मुलाहजा करलेते कुरान मजीद में खुदाताअला फरमाता है "वल्लज़ीन हुमूके फरूजेहिम् हाफिजून् इल्ला अला अज वाजेहिम् औमामलक्त् ऐमानहुम् फइन्नहुम् गैरमलूमानफमनिबत् गोवराअजालेकं फऊ लायक हुमनल् आदूनं" इस आयत में खुद ताअला ने नियोग को भी ज़िनाही करार दिया है और इस को जायज़ करार नहीं दिया।

२०—इलहाम एक इलकाए गैबी है जिसका हुसूल किसी तरह के सोच और तरद्दुद और तफक्कुर पर मौकूफ नहीं होता और वाजे और मुन्कशिफ एहसास है जैसे सामै को मुतकल्लिम से या मज़रूब को ज़ारिब से या मलमस को लामिस से हो, महसूस होता है। और इससे नफ्स को मिस्ले हरकात फिकरिया के कोई आलमे रूहानी नहीं पहुंचता बल्कि जैसे आशिक अपने माशूक की सोहबत में बिला तकलीफ इस्तराहत व अम्बिसात पाता है वैसा ही रूह को इलहाम से एक अज़ाली व कदीमी राबता है जिससे रूह लज्जत उठाता है। गर्ज यह एक मिनजानिब अल्लाह आलामे लजीज़ है कि जिस को नफ्स और वही भी कहते हैं। एवआपके जितने एतराज थे सबके जवाबात दियेगये हैं।

ख्वाजा जलालुद्दीन शम्स एम. ए. १-७-२३

पर्चा नं० (३) जवाबुल् जवाब मिन्जानिब अहमदिया जमाअत बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्रहीम

१—जनाब यह चैलञ्ज कुरान मजीद में तेरहसौ सालसे मौजूद है उस वक्त आपसे बड़े दुश्मन मौजूद थे तमाम अरब की शहादत मौजूद है वह आपको अमीन के नाम से मुलक्किब करते थे तमाम अरब आपकी पाकीजगी का कायल था "जम्ब" के मानों के लिये कोई लुगत का भी हवाला दिया होता। कुरानमजीद में बशरी कमजोरी के मुतअल्लिक आया है और इसी आयत के जो मैंने माने बयान किये हैं उस पर आपने कोई एतराज नहीं किया और वही माने सहीह हैं जैसे फतेह और इनआम नेअमत और खुदाताअला तेरी मदद करेगा। नतायज उसकी ताईद कर रहे हैं और वाक़आत ने भी गवाही देदी। अब आपने फतह मक्का किया आपने तमाम को मुआफ करदिया और फरमाया "लातस्रिबो अलैकुमल् याम्" आज तुम पर कोई सरज़निश नहीं और उस वक्त सब इस्लाम ले आये।

२-ऋषि बग़ैर सिखाने के सीख जायेंगे-दावा बिला दलील है। वह भी इन्सान थे और दूसरे भी इन्सान। जब एक एक इंसान एक ज़ुबान से वाकिफ नहो वह खुद बखुद दूसरा ज़ुबान को, जब तक वह उसे सीख न ले जान नहीं सकता। ज़रूरी है कि कामिल किताब ऐसीज़ुबान में नाजिल हो और किसी न किसी मुल्क की बोली हो ताकि किताब के फहम में और उसके अल्फाज़ की तफसीर में महज ख़यालात पर बुनियाद न रक्खी जावे बल्के उस कामिल और ज़िन्दा किताब के लिये ज़िन्दा ज़ुबान का होना जरूरी है और इसी

ज़ुबान में नाजिल करना जो किसी मुल्क की ज़ुबान हो उस को समझाने के लिये दूसरी ज़ुबान में जिसको इंसान समझता हो खुदा का तर्जुमा करना पहली ज़ुबान को लग्व ठहराना है। अरबी ज़ुबान में नज़ूल की गरज़ तालीम बयान फरमाई है ताकि तुम अच्छी तरह समझ सको फिर ज़ुबान भी ऐसी है जो फसाहत और बलागत के लिहाज से सब ज़ुबानों से बढ़ कर और कामिल ज़ुबान है। जैसा कि फरमाया वलसाँ अरबी में ऐसी ज़ुबान में नाज़िल किया है कि जो खोलकर बयान करनेवाली अरबी ज़ुबान में है। हजरत मसीह मौऊद ने चैलेन्ज दिया था मगर किसी को ज़ुर्रत नहीं हुई कि वह मुकाबिल पर आता। दुश्मनों के सुकूत ने इस बात को साबित करदिया कि अरबी ज़ुबान वाकई एक कामिल ज़ुबान है वाकई खुदा जिन्दा है उसकी ज़ुबान भी जिन्दा होनी चाहिये मगर संस्कृत मुर्दह ज़ुबान होगई मगर अरबी ज़ुबान ने तो कुरान मजीद के नज़ूल के बाद भी इतनी तरक्की की कि वह मिश्र शाम इराक़ वगैरह इलाकों में भी इस्तैमाल की जानेलगी और वह भी अरबी बोलने लगगये।

३–कामिल इलहामी किताब के लिये यह जरूरी है कि वह इस बात का भी जवाबदे कि वेद चार ऋषियों पर क्यों नाजिल कियेगये। इब्तदामें तो इंसाना की हालत बकौल स्वामी दयानन्द यह थी कि वह सिर्फ भोग वगैरह करना जानते थे उनको तालीम वगैरह कुछ नहीं थी। तो वह चार ऋषि ही पवित्र होगये बाकी अपवित्र हैं कि उन पर वेद नाजिल नहीं किये जब इनपर नाजिल किये गये तो उनको बताया चाहिये था कि देखो हम सब से वह पवित्र है यह खुसूसियत पाई जाती है इसलिये उनकी अतबाअ करो बाद

में आने वालों का लिखना जो उस वक्त उनकी ज़ुबानों में नहीं थी काबिल ऐतबार नहीं होसकता। अब आप साबित करें कि यह उसी ज़ुबान की किताबें मौजूद लिखीहुई हैं कि जबसे ऋषियों पर वेदों का नज़ूल हुआ था। ये सनातनी तो उन ब्राह्मणों को इलहामी और स्वामी दयानन्द साहब इन्सानों की तसनीफ़ की हुई मानते हैं कुरान मजीद के आने की गरज़ यह है कि सब पहली किताबें यूँ ही तहर्राफ होचुकी थीं और अपनी असिल हालत पर क़ायम नहीं रही थी और वह नाक़िस थीं और उनके असूल इस क़ाबिल नहीं थे कि मौजूदह वक्त के लोगों के लिये काफ़ी हों। इसके मुतअल्लिक़ खुदाताअला फ़रमाता है "ज्वहरल् फ़सादो फ़िल् बर्रे वर बहने" बर्रे आज़मों में और समन्दरों और जज़ायर में खराबी और फ़िसाद ग़ालिब आया। लोगों की बदआमाली से जिसका नतीजा यह होगा कि खुदा ताअला उनके कजआमाल की उनको सज़ा देगा ताकि वह तोबा करें मुल्क में फिर कर देखो तो क़ुरान करीम के नज़ूल से जो पहली क़ौमें हैं उनके आख़िरी दिन कैसे हैं अकसर मुशरिक हैं यहाँ तक कि आर्यसमाज में रूह और माद्दे को खुदा के साथ वाजिबुल् वजूद और क़दीम मान कर शरीक बना रहे हैं। बस इस कामिल और महकम दीनकी तरफ़ मुतवज्जह हों। देखो जहान में आँ हज़रत की तशरीफ़ आवरी से पहले दुनिया परएक शिर्क और कुफ़्र और ज़ुल्म की तारीक व तार शब थी कि यकायक आफ़ताबे रहमत ने तुलूअ किया और लाखों इन्सानों को मुनव्वर कर दिया। फिर इस्लाम के इख़्त्यार करने वालों में बुतपरस्ती और शिर्क वग़ैरह दाख़िल नहीं हुआ मगर वेदों को मानने वाले बुतपरस्ती के शैदा रहे और शिर्क के मतवाले हुए।

क़ुरान करीम की तरतीब भी इलहामी है। अगर्चे क़ुरान करीम के अहकाम मुख्तलिफ़ औक़ात और आहिस्तह २ नाज़िल होते रहे हैं लेकिन फिर भी उसकी मौजूदह तरतीब क़ायम है यह इन्सान की दीहुई नहीं बल्कि ख़ुदाताअ़ला की दी हुई तरतीब है जैसा कि पहले परचे में लिख चुके हैं।

४—क़ुरान करीम जो हमारे पास तेरह सौ साल से चला आता है एक आयत भी मंसूख़ नहीं है आपने एक ही आयत पेश की होती। अगर किसी ने किसी आयत को नासिख़ और मंसूख़ कर दिया हो तो वह उस आयत के माने नहीं समझ सका हम इस बात के मुद्दई हैं कि क़ुरान मजीद में कोई एक आयत भी मंसूख़ नहीं। आपने एक ही पेश की होती। पहले इस किताब के उतारने का ज़िकर है यहूद यह चाहते हैं कि ख़ुदाताअ़ला की तरफ़ से तुमपर कोई रहमत नाज़िल न हो यहां रहमत से मुराद हो इलहामेइलाही और नबव्वत है। अब सवाल होता था कि पहले जो किताब नाज़िल कीगई थीं क्या वह मंसूख़ हो गई ? तो फ़रमाया कि हमारा तग़ैय्युर और तबद्दुल करना मसलहत के मातहत होता है जिस तरह से हकीम मरीज़ की तबदीली हालत या इसलिये कि पहली दवाओं का वक्त गुज़र जाये उस पहली दवाई को तबदील कर देता है। इसी तरह ख़ुदाताअ़ला के सब काम का तग़ैय्युर और तबद्दुल भी हुआ करता है। मसलन् तौरात में सिर्फ़ क़सास की तालीम पर ज़ोर दिया गया है और इन्जील में सिर्फ़ रहम पर इसलिये कि वह उन लोगों के मुताबिक़ थी। मगर कामिल किताब क़ुरान मजीद में दोनों को बयान किया गया है। फ़रमाया—"जज़ाओ सैयअतन् सैयअतुन् मिस्लोहा" कि तुम बदला भी ले सकते हो और अगर देखो कि

मुआफ़ करने से दूसरे की इसलाह होजायेगी तो मुआफ़ भी कर सकते हो।

५—फ़यारा........जहाँ २ दुहराया गया है वहाँ दुहराया जाना ज़रूरी था। आपको चाहिये था कि आयत आंयत लिखते और कहते कि इसके वाद यूँही दुहराया गया है। मगर आपने मिसाल तो कोई भी पेश नहीं की। एक कलाम पर बार २ ज़ोर दिया जाना भी बलाग़त की एक क़िस्म है और ज़हननशीन और समझाने का एक तरीक़ा है जो कामिल किताबे इलहामी का बयान करना ज़रूरी है जो क़ुरान करीम ने बयान किया है।

६—क़ुरान मजीद में सिजदह सूरज चाँद वग़ैरह केलिये सिवाये ख़ुदा के किसी के लिये जायज़ क़रार नहीं दिया मगर अताअत और हुक्म मानने से कहीं इन्कार नहीं किया कि रसूलों की अताअत न करो, इनका हुक्म न मानो और नहीं इससे रोका है कि ख़ुदाताअला के लिये शुकराने का सिजदह बजा लाया जावे कि उसने हमपर इनआम किया है अज़ाज़ील इससे मलऊन हुआ कि उसने ख़ुदाताअला के हुक्म से इन्कार कर दिया।

७—क़ुरान करीम की आयात से जो मतलब आपने निकाला है बिल्कुल ग़लत है। जिन औरतों से निकाह हो चुका है उनके अलावह ख़ुदाताअला पहली आयत में भी जिस तरह के पहले बीवियों वाले अपने निकाह के लिये निकाह की इजाज़त नहीं दीगई कि आप एतराज़ करें कि पहले निकाह की इजाज़त दीगई थी फिर मनाह कर दिया गया क़ुरान करीम को ग़ौर से मुताअला करें। लफ़्ज़ बाम मार्गी नहीं वाममार्गी है मुलाहज़ा हो सत्यार्थप्रकाश हिन्दी सुफ़ा

२६७ इसी तरह वामदेव ऋषि जिसका जिकर वेदों में है इसके मुताअल्लिक़ भी आप कहदें कि वह भी वेदों के ख़िलाफ़ अमल करनेवाला है। होसकता है कि वह भी जो वेदों से इस्तदलाल करते हैं सहीह हो और क़रीनेक़यास भी है जबकि स्वामी महीधर के तर्जुमे के मुताबिक़ घोड़े से भी नियोग जायज़ है मुलाहजा हो यजुर्वेद अध्याय २१ मन्त्र २० यजमान की स्त्री घोड़े के लिङ्ग को पकड़कर अपनी योनि में आप डालले और मन्त्र २६ में है कि पुरुष लोग औरत की योनिको दोनों हाथों से खींचकर बढ़ालें। जिस औरत का वीर्य निकल जाता है जैसा छोटा बड़ा लिङ्ग उसकी योनि में डाला जाता है योनि के इधर उधर अण्डकोश नाचा करते हैं क्योंकि योनि छोटी और लिङ्ग बड़ा होता है। जैसे गायके खुरखें बने हुए गढ़ेके जलमें दो मछलियां नाचें। इसी अध्याय के बहुत से मन्त्रोंसे स्वामी महीधर ने घोड़े से नियोग का सुबूत दिया है। अगर इस तर्जुमे को सहीह मान लिया जावे तो हम वाममार्गियों के अक़ादे सही होने में क्या शुबह है। इस्लाम का यह अक़ीदह हरगिज़ नहीं कि जो महरमान से सोहबत या निकाह करें इसपर हद नहीं मैं दावे से कहता हूं कि आपने जो इमाम अबूनीफ़ा की तरफ़ इस अक़ीदे को मंसूब किया है महज़ ग़लत और उसपर इलज़ाम है आप हरगिज़ इसका सुबूत नहीं दे सकते।

८—आप किसी सहीह हदीस से भी साबित नहीं कर सकते कि उसमें लिखा है कि पहाड़ से हामिला ऊँटनी पैदा हुई थी। अगर आप बुखारी या मुसलिम या सहाह सित्तह जो मुसलमानों के नज़दीक अहादीस की मुअतबिर कुतुब हैं निकाल दें तो आपको मौजूदह इनआम दिया जावेगा मगर

आप हरगिज़ नहीं दिखा सकेंगे। "वलोकानं वा अज्ञुकुम् ले बज़िन ज़हीरन् माज़ों" वग़ैरह का सुबूत क़ुरान मजीद में भी साबित है मगर इस वक्त इसपर बहस नहीं है और कलमे के दोनों अजज़ा भी कुरान मजीद में वारिद हैं और बुखारी और मुसलिम और सहाह सित्तह की कुतुब में सराह तौर पर नमाज़ों और कलमे का ज़िक्र है और ख़ुदाताला ने फ़रमाया है "वमाआता कुमुर्रसूलंफ़खुज़ू हो" जिस चीज़ का हुकुम तुम्हें रसूल दे उसको मानो और अमल करो।

९—यह बात क़ुरान मजीद की क़ानूने कुदरत के खिलाफ़ नहीं है मशाहदह है कि बेहोश वग़ैरह के सरपर और ताज़ह २ क़त्ल किया हुआ बिल्कुल मुर्दा नहीं होता देरके बाद उसकी रूह निकलती है वह बेहोशी की हालत में होता है इस लिये उसपर ताज़ा गोश्त रखने से होश आजाता है और जर्मनी में तो आजकल आर्टिफ़िशियल तरीक़े पर मौजूदह साइन्सदाँ कई मिनट तक ऐसे अशख़ास को होशमें लाकर हालात दरयाफ़्त करलेते हैं।

१०-"जऊलनं मिनहमुल् क़िर्दत वल ख़नाज़ीर" से अगली आयत पढ़लेते तो आपको मालूम होजाता कि ज़ाहिरतौरपर बन्दर और सूअर नहीं बने थे क्योंकि आगे फ़रमाया है कि "वइज़ज़ाओकं" (और जब वह तेरे पास आते हैं) भला बन्दर और सूअर आया करते थे। अरबी ज़ुबान का कायदा है और इस तरह दूसरी ज़ुबान मेंभी बवजह मुशाबहत ताम्मा के पाये जाने के दूसरे नाम दिये जाया करते हैं मसलन् सख़ी को हातम और बेवक़ूफ़ को गधा कह देते हैं इस तरह उन्होंने जब बन्दरों और खंज़ीरों जैसे काम करने लगे तो उन्हें खंजीर और बन्दर कहा गया है। लुगत में आता है खंजर अलरजल

आदमी ने खंजीर का काम किया। इसलाम में हैवानों से जिना करना जायज करार दिया है अगर आप कुरान करीम या अहादीस सहीया से साबित करदें तो आपको एक हज़ार रुपया चेहरे शाही इनआम दिया जावेगा अलबत्ता अहादीस में आता है जो शख्स हैवान से जिना करता हुआ पाया जावे उसको कत्ल कर दिया जावे।

११—आपको जो सबूत दियागया है उसकी तो तरदीद कर नहीं सके। कुरान मजीद ने जब एक दफ़ा बयान किया है और उसवक्त किसी ने तरदीद नहीं की बल्के उनका बयान सेहर मसमर के अलफ़ाज में बताभी दिया कि जब शक्कुल कमर हुआ तो इन्सानों ने उसे जादू करार दिया। अब आज आकर किसी शख्स का एतराज़ करना कैसे दुरुस्त होसकता है और यह भी ग़लत है किसी तारीख की किताब में इसका सुबूत नहीं। तारीख फरिश्ता मकाला याजदहुम में इसका ज़िकर पाया जाता है।

१२—उसको आप ज्यादा जानते हैं या अरबीदां ? अपनी ज़ुबान पर ही ग़ौर करते किसी चीज की खाल उतारना किन मानों में इस्तेमाल होता है। मसलन् बालकी खाल निकालना मशहूर मसल है और मुराद इससे इसकी बारीकियों का निकालना और उसकी जरा २ अन्दरूनी हालत जाहिर करना है। यही माने यहां मुराद हैं। क्या आस्मान की खाल उतारी जायगी यानी उसके अन्दर जो सितारे और बारीकियां वग़ैरा पाई जाती हैं वह उलूम के जरिये से मालूम की जायँगी।

१४—मैं कहता हूं कि असल फ़लसफ़ा वही है जो इलहामी किताब बतादे। मैंने एक मिसाल पेश की थी उसको तोड़ दिया हुआ। फ़लसफ़ा इलहामी किताब के ताबे है न इलहामी

किताब इंसानी मन्तिक और फलसफे के। आप मन्तिकी दलायल और फलसफे के मुतअल्लिक कहें तो आप रूह और माद्दे की अज़लियत और मख़लूक होनेपर अज़ रूए क़ुरान मजीद या वेद बहस करलें मैं भी क़ुरान मजीद से रूह व माद्दे के मख़लूक होनेपर मन्तिक व फलसफे के दलायल पेश करूंगा और आप उसकी अज़लियत पर वेद से पेश करें। इस बहस से एक तो इस अक़ीदे पर एक मुकम्मिल बहस हो जावेगी दूसरे वेद और क़ुरान मजीद का भी मुक़ाबला हो जायगा कि कौन फलसफा और मन्तिकी दलायल पेश करता है।

१५--अगर मुक्ति में सिर्फ रूह रहती है तो उस मुक्ति का क्या फ़ायदा रूह जिस्म से अलहदा होकर आराम व दुःख नहीं भोगसकती तो बेचारी रूह को क्या आराम मिला बाक़ी यह मैं बता चुका हूं कि जन्नत के मुक़ाम को दुनिया पर क़ायम नहीं करसकते। खुदाताअला उनको इसी तरहपर जिस्म देगा और ऐसी गिज़ाएं उनके लिए होंगीं कि वह बूढे न होंगे बल्कि हमेशा वह जवान ही रहेंगे और बहिश्त में जो उन नेआमतों का ज़िकर किया गया है वह इसलिये मिलेंगी कि ख़ुदाताअला जानता है कि इसके सच्चे परस्तार इस दुनियां में रूह ही से उसकी बन्दगी और अताअत नहीं करते बल्कि रूह और जिस्म दोनों से करते हैं और ख़लकत इंसानी का कमाल दोनों के इम्तज़ाज से पैदा होता है इसलिए इंसान को पूरा २ अजर देने के लिए दोनों किस्मों की लज़्ज़ात दीं और अपनी दूसरी नेआमतें भी बारिश की तरह बरसाईं और फ़रमाया ... सबसे बड़ी नेआमत तो ख़ुदाताअला की रज़ामन्दी होगी जो रूह की असल गिज़ा है जिसके लिए वह हर वक्त बेकरार रहती है।

१६— कुरान मजीद ने इन्हीं मानों में बाप भी कहा है बल्कि बाप से बढ़कर दरजा बताया है। जहाँ खुदाताअलाने उनके बाप होने की नफी फरमाई है वह ज़ाहिरी लिहाज से है जहानी तौरपर आप किसी के बाप नहीं जब कि लोग जैद को आपका बेटा क़रार देते थे। के लफ़ज से इस्तसना किया गया है कि आप अल्लाह के रसूल हैं इसलिए आपकी और आपकी बीबियों का मोमिनों की माएँ होना आपकी रिसालत और नबव्वत के लिहाज से था इसलिए आप मोमिनों के बाप भी हुए जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है।

१६- मैंने जो हवाला वेद से पेश किया है उसका मतलब यह है कि खुदा के सिवा कोई चीज़ नहीं थी और वह मौजूद था फिर उसने सब चीज़ों को पैदा किया क्योंकि इब्तदाई लतीफ़ अनासर और परमाणु भी उसी ने पैदा किये और यही हमारा अकीदा है कि कोई चीज़ मौजूद नहीं थी और खुदाताअला ने महज़ अपनी कुदरत से सबको पैदा करदिया। आप फ़ना होने से क्या मुराद लेते हैं अगर कहें कुछ नहीं रहे तो यह ग़लत है हम रूह को बेशक फनापिज़ीर मानते हैं उसपर दलील यह है कि जो चीज़ अपनी सिफ़ात को छोड़ देती है उस हालत में उसको फ़ानी कहते हैं। अगर किसी दवा की तासीर कभी बिल्कुल बातिल होजाये तो उस हालत में हम कहेंगे कि दवा मर गई ऐसाही रूह भी बाज़ हालत में अपनी सिफ़ात को छोड़ देती है। मौत सिर्फ़ मादूम होने का ही नाम नहीं है। आप यह बतायें कि यह कहां से साबित हुआ कि जो चीज़ हादिस है उसके लिये मादूम होना ज़रूरी है। हम रूह की बक़ा के क़ायल हैं फिर साथ ही उसके फ़ना यानी मुतग़य्यर और तबद्दुल होने को

भी तसलीम करते हैं और हादिस चीज़ के लिये मुतग़ैय्यर होना ज़ुरूरी है मादूम होना ज़ुरूरी नहीं।

१७-आपने कोई तशरीह नहीं की तशरीह की होती तो लोग मवाज़ना कर सकते थे।

१८-यह महज़ धोखा है कि रूह के मुतअ़ल्लिक़ वेद में बहुत कुछ बयान कियागया है। कुरान ने अलावा इसके मख़लूक़ होने के इसके क़रीने और इस्तअ़दादों का भी बयान किया है मसलन मालूम और मुअ़ारिफ़की तरफ़ शायक़ होने की कुव्वत उलूम को हासिल करने की कुव्वत उलूम को महफ़ूज़ रखने की कुव्वत मुहब्बते इलाही की कुव्वत वग़ैरह। वेदों की अज़लियत के मुतअ़ल्लिक़ हम इससे पहले बहस कर चुके हैं। जो मन्त्र पेश किया है वह धोका है दलील नहीं।

१९-इससे तो मालूम होता है कि वेदों में उसूल नामुकम्मिल हैं। और यह भी नहीं बताया कि ज़िना बुरी चीज़ है या नहीं चोरी बुरी चीज़ है कि नहीं हम तो मानते हैं कि वक़्तन फ़-वक़्तन लोगों की हालत के क़ाबिल तालीमें आती रहीं। आख़िर ज़माने में कुरान मजीद कामिल किताब आई जबके तमाम क़िस्म की बुराइयाँ लोगों में फैल चुकी थीं।

२०—जब ख़ुदा का नाम रुलाने वाला है वैसे ही मैंने भी लिखा था कि जो गुमराही का काम करता है तो ख़ुदा ताअ़ला गुमराह करता है हर एक को नहीं 'लेयज़दादू' में लाम आक़िबत का है जैसा कि अरबी का एक शायर कहता है।

कि जाएँ अपने बच्चों को गिज़ा में इसलिए देते हैं कि न यह मरें और घर इसलिए बनाये जाते हैं कि वीरान हों।

यहाँ लाम-आक़िबत का है कि अंजाम उनका मौत और घरों के बनने का अंजाम आख़िर ख़राबी और वीरानी होती है।

इसीतरह खुदाताअला फ़रमाता है कि हम इंसान को मुहलत देते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि और भी गुनाह में पड़ते हैं हालाँ कि उनको चाहिये था कि वह अपनी इसलाह करते। कुरान मजीद पढ़ने के वक्त खुदाताअला ने "अऊज़" पढ़ने का हुक्म दिया है इसलिए जैसा कि मुख़ालफ़ीन को कुरान करीम पढ़ने से शैतान क़िस्म २ के शुबहात डालते हैं तो क़ुरान करीम के पढ़ने वाले को वसावस पैदा न हों और आयत "लायज़ालून मुख़तलफ़ीन" से यह साबित नहीं होता कि उनको इख़तलाफ़ केलिए पैदाकिया गया है "इल्लाअारहेम" एक की तर्फ़ इशारा किया गया है उनको पैदा इसलिये किया गया है कि ता उनपर रहम कियाजावे और हम पहले आयत लिख चुकेहैं कि इन्सान आमाल के बजालाने में मुख़तार है।

"कुतेलल् इन्सानमा मग़फ़रह" आपने पहले परचे में बिलकुल पेश नहीं की। यहां खुदाताअला कोसता। नहीं बल्कि फ़रमाता है कि इन्सान अपने कुफ़्र और नाशुकरी की वजह से मलऊन होगया क़त्ल के माने यहाँ लुड़न के हैं देखो ताजुल उरूस वग़ैरह।

बाकी आपकी सब पेश करदह बातों का पहले परचे में जवाब लिखदिया गया है उसको बग़ौर पढ़ लीजिये। "वनफ़ख़्त फीहा मिन् रूही" में रूहको इज़ाफ़ मलिक की है मैंने पैदा की हुई रूह फूकी। दूसरे क़ुरान मजीदमें रूह से मुराद कलामे इलाही है कि मैंने इस पर इलहाम किया खुदा के फ़ज़ल से आपके सब सवालों के जवाब दिये मगर आपने इस परचे में अपने सवालात की शिकों को भी मुस्तकिल सवाल समझकर बीस की ताअदाद पूरी करनी चाही है। सवाल नं० ६ में नं० ६ व ८ के मुतअल्लिक कुछ नहीं

लिखा। इसी तरह सवाल नं० ७ की पाँचों शिकें छोड़गये छुआतक नहीं। सवाल नं० ८ की शिक़ जीम, दाल, हे जे, सब छोड़गये। और सवाल नं० ६ की शिक़ बे, जीम, दाल, रे, और हे सब छोड़गये। इसी तरह सवाल नं० १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १६ व २०, को छुआ तक नहीं है। हमने आपके सब एतराजात के जवाबात खुदाके फजलसे जो रूह और माद्दे का खालिक और क़ादिर मुतलक़ है, सब सवालों के पूरे तौर पर जवाबात दिये हैं इससे क्या साबित हुआ? वह यही कि खुदाताअला एक है आंहजरत सल्ले अला उसके पाक रसूल हैं और खुदा की कुरान मजीद ही एक कामिल व मुकम्मिल इलहामी किताब है और उसके बाद कोई शरीअत नहीं आयगी। सच है-नूरे फुरकाँ है जो सब नूरों से आला निकला, पाक वह जिस से यह अनवार का दरया निकला। हक़ की तौहीद का मुरझाही चला था पौदा नागहाँ गैब से यह चशमए अरफां निकला। सब जहां छान-चुके सारी किताबें देखीं, मये अर्फान का बस एक ही शीशा निकला। या इलाही बड़ा फुर्क़ां है कि एक आलिम है, जो जरूरी था वह सब इसमें मुहईया निकला। है कुसूर अपना ही अन्धों का वगरना यह नूर, ऐसा चमका है कि सद नैय्यरे बैज़ा निकला।

ख्वाजा जलालुद्दीन शम्स एम. ए. अहमदी मनाजिर २-७-२३

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जवाबुल जवाब परचे आर्यसमाज मिन्जानिब जमाअत अहमदिया कादियान

आपने कल भी शराबत के खिलाफ किया कि सात बजे के बजाय ८। इ... परचा भेजा हालां कि हम अपना

परचा ए·न सात बजे मुताबिक शरायत प्रधान आर्यसमाज के पास पहुंच गये थे। दूसरी शरायत के मुताबिक परचे पर मन जिर के दस्तखत होने चाहिये थे मगर कल के परचे पर सच्चिदानन्द मन्त्री आर्यसमाज भौगाँव के दस्तखत थे हालां कि मुनाजिर और मनाजिर पं० रामचन्द्र देहलवी हैं। फिर आज आपने खिलाफ शर्त नं० १० परचा खुशखत स्याही से लिखा जायगा, परचा पेंसिल से लिखकर भेजा है। चौथे आपने परचा हिन्दी में लिखा है हालां कि पहला परचा उरदू आम मुरव्विजा जुबान जिसमें आर्यसमाज और दीगर मुसलमानों के मनाजरे होते रहते हैं उरदू है। अगर हिन्दी में मनाजरा करनाथा तो पहले शरायत में लिख दिया होता कि हिंदी में परचे लिखे जायंगे पर हिन्दी भी ऐसे तरीक पर लिखी है कि जिसका पढ़ना मुश्किल है। पाँचवी बात जो आपने शरायत के खिलाफ की है वह कुरान मजीद पर नये एतराजात हैं हालांकि शरायत में तै होचुका है कि बीस एतराजात हमारी तरफ से वेदों पर होगे और बीस एतराजात आपकी तरफ से कुरान मजीद पर पहले परचे में किये जाचुके हैं उसके बाद नये एतराजात कुरान मजीद पर शरायत के खिलाफ हैं। आपके तमाम परचे के पढ़ने पर एक अक्लमन्द और जीइल्म समझ सकता है कि आपने मेरे एक सवाल का भी मुदल्लिल जवाब नहीं लिखा और आपसे एक एक मन्त्र हर एक दावे के सुबूत में तलब किया गया था मगर आपने वह भी पेश नहीं किया। हमने आपके वेदों पर जो एतराजात किये तो सिर्फ वेदों केही हवाले नहीं दिये बल्कि जो वे इबारतें नकिल कीं और इसी तरह कुरान मजीद के

जवाबात देतेहुए आयतें दर्ज की हैं । हमने पहला सवाल वेदों की तादाद और उनके मुलहमीन और उनकी असलियत के मुतल्लिक किया था जिसका पण्डित साहब ने कोई माकूल जवाब नहीं दिया। मुलहमीन के इख्तलाफ के मुतल्लिक तो चार ऋषियों को भी ब्रह्मा बनाने की कोशिश की है मगर वेसूद। क्योंकि स्वामी जी तो ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका सुफा १२ में ब्रह्मा को चार ऋषियों का शागिर्द बताते हैं और सत्यार्थप्रकाश सुफा १७० में कहते हैं "सवाल–उपनिषद् का कौल है कि ब्रह्मा जी के दिल में वेदों का इजहार हुआ" बस आपकी तावील बातिल है। आपके अकीदे की रू से तो वे चार शख्श हैं और ब्रह्मा के अकीदे की रुसे एक मुलहम मानना पड़ता है यह चार को एक बनाना किस बुरहान की बिनापर और किस फलसफे के असूल के मुताबिक है? आप जिनको ऋषि करार देते हैं वह आग, सूरज, हवा और चांद करार देते हैं। फिर चार के अकीदे पर यह एतराज पड़ता है कि आया वेदों का नजूल पिछले आमाल की बिना पर है या बगैर आमाल के। अगर कहो बगैर आमाल के तो तनासुख का अकीदः बातिल और अगर पहली शिक इख्तयार करो तो उस पर सवाल यह है कि उन्होंने भी पहले वेदों पर अमल किया होगा और वह भी चार ऋषियों पर नाजिल हुए होंगे फिर उनके मुतअल्लिक सवाल होगा तो इस तरह दौर और तसलसुल लाजिम आयगा जो तमाम उलमाए मन्तिक व फलसफे के नजदीक मुहाल है और बदीही बुतलान है और अक्ल भी उसके मुर्दद हैं। और यह क्या वजह हैं कि हमेशा चार ही शख्स वेदों के नजूल के काबिल होते हैं कभी ऐसा भी हुआ कि पांच पर वेद नाजिल होजायें या

कोई भी ऐसा न हो कि उस पर वेदों का नजूल होसके आखिर इस इत्तफाक की क्या वजह है ? आप लिखते हैं कि वेदों में से दिखाया जाय कि चार ऋषियों पर नाजिल हुए तो यह भी होसकता क्योंकि वेद तो अजली हैं और दूसरे इस से मानना पडेगा कि इसमें तारीखी बातें है और ये इलहामी किताब में नहीं होना चाहिये आखिर इसका फैसला कौन करेगा कामिल इलहामी किताब का फर्ज है कि वह खुद इन शकूक और एतराजात को मिटाए जो उसपर पड़ें और उनका जवाब दे।

लीजिये आप लिखते हैं कि वेदों में कोई नाम नहीं है वर्न मानना पड़ता है कि उसमें तारीखी वाकआत दर्ज हैं इसीलिये वह इलहामी किताब नहीं होसकते। जनाब स्वामी दयानन्द साहब सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—

सवाल—आगाज़ दुनिया में एक या कई एक इन्सान पैदा हुए ?

जवाब—क्योंकि जिन जीवों के कर्म ईश्वरसृष्टि में (बिला मा बाप) पैदा होने के थे उनकी पैदाइश शुरू दुनिया में परमेश्वर नेकी यह यजुर्वेद में लिखा है इससे भी अज़लियत वेदका दावा बातिल होगया। क्योंकि अगर किसी किताब में यह लिखा हो कि यकुम् दिसम्बर सन् १९२० ई० को छः बजे पैदा हुए तो ला मुहाला मानना पड़ेगा कि यह किताब बाद यकुम् दिसम्बर १०२० ई० के बनी हुई है और सत्यार्थप्रकाश सुफ़ा २३७ में जो स्वामी जी लिखते हैं कि रिवायात जिसके मुतअल्लिक़ लिखे जाते हैं वह उसके पैदा होने के बाद लिखे जाते हैं इसलिये वह किताब भी गोया उसके पैदा होने के बाद बनी हुई है। वेदों में से तारीख़ के हवाले सुनिये—स्वामी साहब सत्यार्थप्रकाश हिन्दी सुफ़ा २३८ एडिशन १२ में लि-

खते हैं कि इसीलिये वेदों वगैरह शास्त्रों में व्यवस्था (क़ानून) व इतिहास (तारीख़) लिखे हैं उसका मान्य (तसलीम) करना भद्रपुरुषों (नेकलोगों) का काम है। (२) यजुर्वेद १२/४ में लिखा है जो अङ्गिरा विद्वान् से कहा है। (३) वामदेव ऋषि का नाम (यजुर्वेद) १२/४ यजुर्वेद भाष्य स्वामी दयानन्द जी जिल्द अव्वल सुफ़ा २७४ यजुर्वेद के मन्त्र नाम ग्रहण करने व छोड़नें योग्य कारोबार के लायक वामदेवऋषि ने जाने पढ़ाये। (४) हिमालय पहाड़ का नाम यजुर्वेद २५/१२ ऐ लोगो जिस तरह सूरज के भारी पनसे यह हिमालय वगैरह पहाड़। (५) फिर यह फ़िकरह कि तुमने पहले मैदानों में दुश्मनों की फ़ौज को जीता है तारीखी वाके को ज़ाहिर नहीं करता तो और क्या है? और यह बात कि वेदों में सिर्फ़ तीन मज़मून हैं गलत है। जबकि पहले ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका से साबित कर चुके हैं कि वेदों में चार मज़मून हैं ऋग्, यजुः और साम जहाँपर मन्त्रों के नाम लिखे हैं वहाँ आप इल्म की मुराद ले सकते हैं क्या अथर्ववेद ही गरीब ऐसा था कि वह उसको अपने साथ मिलाते ही नहीं? और छन्दांसि और छन्द का तर्जुमा अथर्ववेद करना सहीह नहीं क्योंकि छन्द के माने इल्म अरूज़ और बहर के हैं जैसेकि हम पहले पर्चे में लिख चुके हैं। और इसी तरह स्वामी दयानन्द यजुर्वेद के भाष्य में छन्दांसि के अर्थ उष्णिग् आदि छन्दों के किये हैं। आपको चाहिये कि लुगत की किताब निरुक्त से छन्दांसि के माने अथर्व वेद के बताएँ। और ऋग्वेद मण्डल १० के मन्त्र का तर्जुमा ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के फिर नोट में मुतरज्जम ने कर

दिया है उसका लफ़्ज़ी तर्जुमा यह है। "इस सर्वहुत यज्ञ से ऋक् और साम पैदा हुए और उससे छन्द पैदा हुए यजुर् भी इसीसे ज़ाहिर हुआ। "छन्द भी इसीसे ज़ाहिर हुए" का फ़िक़रा साफ़ बता रहा है कि छन्द से मुराद इल्म अरूज़ के हैं अथर्ववेद मुराद नहीं सोचकर जवाब दें इन जङ्गली और वहशी आदमियों को कामिल तालीम का देना जो सिर्फ़ भोग वग़ैरह जानते थे जैसाकि हम पहले हवाले उपदेशमञ्जरी से साबित कर चुके हैं कहाँ तक अक्ल के मुताबिक़ है वह बेचारे वेदकी तालीम को क्या समझ सकते थे हाँ नियोग की तालीम खूब अच्छी तरह समझ सकते थे क्योंकि उनको नियोग करने और खाने पीने के सिवाय और कुछ मालूम ही नहीं था। कुरान मजीद के आने से इलहाम का सिलसिला बन्द नहीं हुआ बल्के इलहाम का सिलसिला इसलाम में जारी है जबकि इस ज़माने की मिसाल भी कुरान मजीद के एतराज़ात के जवाबात में लिख चुका हूँ कि पं० लेखराम के क़त्ल के मुतअल्लिक़ पेशगोई एक इस्लाम के पहलवानने ही की थी और स्वामी दयानन्द साहब के मरने की खबर भी तीन माह पहले इसी मर्दे मैदाँने खुदा से पाकर दी थी। आगे रहीं आपकी रूहें जो तनासुख के चक्कर में पड़ी हैं उन्होंने कहाँ तरक्की करनी है जिनको खबर ही नहीं कि वह पहले कहाँ थे बन्दर थे या सूअर। जब उनको पहले का कुछ भी इल्म नहीं तो वह कैसे तरक्की कर सकते हैं अल्बत्ता इसलामी उसूलों के लिहाज़ से इन्सानी रूह हमेशा तरक्की करता रहता है यहाँ तककि जन्नत में भी जाकर मदारिज में तरक्की करते रहेंगे। दूसरे सवाल का जवाब आप ने कुछ नहीं दिया है वेद ऋषियों पर नाज़िल हुए हैं यह एक दावा है जिसकी दलील चाहिये क्योंकि आपने हवाला कोई

पेश नहीं किया इसलिये उसके मुतअल्लिक़ हम कुछ नहीं लिखते अल्बत्ता हम दावे से कहते हैं कि कोई माकूल दलील वेदों में से आप उनके इलहामी होने पर नहीं दे सकते। तीसरे सवाल के जवाब में जो आपने मन्त्र पेश किया है वह कोई दलील नहीं है दोपरोंवालों से यह साबित होगया कि वह रूह और माद्दह हैं ग़ौर तो करो किसी अक़्लमन्द से अक़्ल खरीदलो, तो जवाब दो। वेदों से दावा पेश करो कि प्रकृति और जीव अनादि और अज़ली हैं फिर उसकी दलील पेश करो लेकिन हरगिज़ दावा और दलील पेश नहीं करसकेंगे। वलौकान

और जो हमने वेदों की तारीफ़ के मुताअल्लिक़ हवाले जात लिखे हैं उनसे वेदों से इलहाक और कमी बेशी का होना अज़हर मिनशम्स है। स्वामी जी तो इसीलिये फ़रमाते रहे कि यह बड़े दुःख की बात है। कुरान मजीद में ऐसा कहीं नहीं लिखा। जताने वाला उपनिषद्का एक मन्त्र जो स्वामी जीने अथर्ववेद में शामिल करलिया है इससे मालूम हुआ कि ऐसे तरीक़ पर दाख़िल किया गया हैकि उसका पता नहीं लग सकता

मुलाहज़ा हो अथर्ववेद सुफ़ा १६४ और बाक़ी हवाले-, जात पर भी ग़ौर किया होगा। कुरान मजीद के मुतअल्लिक़ ऐसा नहीं कहा जाता। कुरान मजीद में ज़ो तेरहसौ सालसे चला आता है उसमें महज़ माहमा की जगह लिखा हुआ आप नहीं दिखा सकेंगे। सुनिये—

सर विलियम म्योर की शहादत "जहाँ तक हमारे मालूमात हैं दुनिया में कोई ऐसी किताब नहीं जो इसी (कुरान-करीम) की तरह बारह सदियों तक हर क़िस्मकी तहरीफ़ से पाक रही हो (दीबाचा लाइफ़ आफ़ मुहम्मद सुफ़ा २१ तबा सोयम्)

४—खुदा ताअ़ला की मिसाल आयत में नहीं दीगई बल्कि इस आयत में पहले "अल्ला हो नूरुस्समावात वलअर्ज़" से फ़ैज़ाने आमको बयान किया गया है "और असलो नूरही" से फ़ैज़ाने खासको जो अम्बिया के साथ वाबस्ता है उसकी मिसाल से आंहज़रत को पेश किया है। ग़ौर तो करें खुदा को सूरज की मिसाल देना कहाँतक दुरुस्त है? कुरान मजीद में खुदा ताअ़ला फ़रमाता है। उसकी मानिन्द कोई चीज़ नहीं। किसी के साथ उसकी तशबीह नहीं दी जासकती। हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया है चाँद को कल देखकर मैं सख्त बेकल होगया, क्योंकि कुछ २ था निशाँ उसमें जमाले यारका।

१—जनाब यहाँ इस्तआरात याद आगये हमारी चीज़ोंको मत चुरा और चुरवा और कोई लफ़्ज़ नहीं मिलता था क्या चोरी का ही लफ़्ज़ रह गया था जो एक जुर्म है और फिर इसी से मालूम हुआ कि खुदा भी चुरवाता है।

२—आपके आमाल के बायस क्यों हमल गिरेंगे वह तो पिछले आमाल के नतीजे से होगा जो कुछ होगा।

३ - ग़ौर से इबारत पढ़ें परमेश्वर की तरफ़ मंसूब है।

४—किसी अक्लमन्द से इस इबारत का मतलब समझें कि हरकत किसकी तरफ मंसूब है। उस्ताद और शागिर्द के साथ जो तालीम दीगई है वह भी बतलाई जा चुकी है कि वह यह है कि मैं तेरे लिङ्ग को साफ़ करता हूं।

५—आपने मन्त्र या हवाला कोई पेश नहीं किया वेद से कोई मन्त्र पेश करें यह तो दावा बे दलील है।

६—अगर नियोग बुरा नहीं तो कोई फहरिस्त क्यों नहीं पेश की जाती और मेरे मतालबात का क्यों नहीं जवाब दिया

गया। इसलाम में मुतवन्ना बिलकुल जायज़ नहीं क़ुरान मजीद में साफ़ आयत मौजूद है और जो सूरत आपने पेश की है वह बिलकुल मोहमिल है अगर वह अपने ख़ाविन्द से हामिला हुई थी और उसीका नुतफ़ा था तो वह उसकी औलाद होगई अगर नहीं तो फिर वह उसकी औलाद नहीं बल्के जिसका नुतफ़ा हो उसी की औलाद होगी और अगर शादी न की और उसने ज़िना किया तो ज़िना के साबित होने पर इसलामी शरीअत की रू से उसे संगसार किया जावेगा।

७—यह तो ग़लत बात है कि उसकी आर्यसमाज को ज़रूरत न पड़ती हो क्या आर्यसमाजी धर्म की ख़ातिर या दौलत की ख़ातिर परदेश नहीं जाते? शरीअत के मुक़ाबले में रिवाज क्या चीज़ है आपको चाहिये था कि आप इसी उसूल को फैलाते मगर ऐसे जवाब से मालूम होता है कि आप लोगों से डरते हैं और आपकी फ़ितरत इस तालीम को धक्के देती है और आप नियोग कराने को तैयार नहीं हैं। इसलाम में मुतवन्ना जायज़ ही नहीं तो आप उसे बेटा कैसे क़रार देते हैं।

८—जो मैंने सवाल किया उसका जवाब नहीं दिया गया।

९—आपने जो मन्त्र पेश किया है उसमें शादी के मुतअ़ल्लिक़ कहां ज़िकर है आपको चाहिए कि मन्त्र पूरा पेश करते और का ज़िकर कहां है और किस नमाज़ का तर्जुमा है। फिर जिन ऋषियों के मुतअ़ल्लिक़ हमसे सवाल किया गया है उसके मुतअ़ल्लिक़ वेदों से.ही हुक्म बना दिया होता। देखिये यह तुम लोगों के महज़ लफ़्ज़ और दावे ही होते हैं। इस पर दलील क्या है कि जिनको क़ुरान मजीद ने हराम क़रार नहीं दिया वह मायूब नहीं और कोई बहिन के ब्याह के मुतअ़-

तिलक जो आपने फरमाया है सगे बहन भाई का रिश्ता मना किया गया है क्या वेदों ने ममनूअ क़रार दिया है।

जिला शाहपुर वग़ैरह में हिन्दू क़ौम के भी तुम्हारे इस ख्याल को ग़लत नहीं साबित कर दिया है और चमार और पासियों में क़रीब रिश्तों में शादियाँ करना शुरू कर दी हैं यहां तक कि हिन्दुओं के बड़ों ने भी उन रिश्तों को किया जिनको कुरान मजीद ने जायज़ क़रार दिया।

'अम्महातकुम्' से तो दादी वग़ैरह सब और 'बनातकुम्' से बेटियां सब आजाती हैं मुलाहज़ा हो ताजुद्दीन और क़ामूस वग़ैरह।

१०—मेरे एतराज का जवाब नहीं है। मेरा सवाल यह है कि यह तालीम आलमगीर तालीम नहीं हो सकती बाक़ी रिश्तों से शादी करना मना कीगई है सिर्फ एक को जायज़ क़रार दिया गया है कि जिसमें माँ बहन और बेटी की मानिन्द हो उससे शादी होनी चाहिये।

११—यह अजीब फलसफा बयान किया गया है कि भूरी आँख वाली से अगर काली आँख वाले शादी करें तो बहुत से अमराज पैदा होते हैं कोई मिसाल तो पेश करें जब आप नयी तिब ईजाद करेंगे और मशाहदात और वाक़आत से साबित करेंगे तो आपकी बात मानली जावेगी यहां कहां लिखा है कि भूरी आँखों वाले से उसकी शादी हो सकती है।

से नियोग वग़ैरह को मना करके कहा गया है कि ज़ानिया लौंडी को भी सज़ा दीजावे ताकि वह नियोग या ज़िना या किसी से याराना न लगाये।

१२—यह ग़लत बात है इबारत को ग़ौर से मुलाहिज़ा कीजिये जिसका मुर्दा है उस ही को हुक्म है कि वह इसी

तरीके पर जलायें। चाहे उसको भीक मांग कर क्यों न घी वगैरह मुहैया करना पड़े।

१३—खाविंद और औरत से पहले यही सवाल दरयाफ्त करना चाहिये दुनिया की कोई मुहज्जब कौम ऐसा हरगिज़ आनेवाले मह-नों से दरयाफ्त नहीं करेगी और मैं इसही से यह कहता हूँ कि आर्यसमाज भी इस पर कारबन्द नहीं। सवाल सिर्फ सफरही का नहीं है बल्के हरवक्त हमेशा अपने साथ रखनका है।

१४—बैल के साथ जो बेटों की कामना करने की तशबीह दी गई है वह सिर्फ कामना करने में ही नहीं बल्के वह औलाद बढ़ाने में भी है। जैसे बैल गाय को गाभन करके पशुओं को बढ़ाता है वैसे तुम प्रजा को बढाओ जैसे वह कई गायों को गाभन करता है वैसे ही तुम भी करो। लेकिन बैल के साथ तशबीह देना ठीक नहीं था क्योंकि वह तो माबहन को भी नहीं देखता। "फातो हर्सकुम्" खेती के साथ तशबीह तो स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में औरत के साथ दी है और "फनफखना फीहा मिन् रूहनो" से मुराद कलामेइलाही है।

१५—मेरे सवाल का कोई जवाब नहीं दियागया।

१६—वाह जनाब खूब कहा मुहताज फ़कीर जिसके पास कुछ न हो उसको कहा जाता है इहतयाज के मतलब पर गौर करने के लिये मेरे सवाल को दोबारह पढ़ें। वह फ़कीर नहीं जो खुद हरएक चीज़ बना सके मोहताज और फ़कीर वह है जो खुद कुछ नहीं बना सकता खुदाताअला के लिये फ़रमाया "अल्लाहो ख़ालिको कुल्लो शैअन" खुदा हरएक चीज का ख़ालिक है इसीलिये रूह और माद्दह वगैरह पैदा की हैं वह कैसे मुहताज हो सकता है। पं० लेखराम

१७—जनाब आपका जवाब कुल्लियात आर्यमुसाफिर में देखुके हैं मुलाहज़ा हो लिखा है आर्यमुसाफ़िर नुफ ३८ यह तो इल्मतिब की रू से भी साबित है कि इंसान का ख़ुमूल्लन तमाम जिस्मानी हिस्सा सात बरस के अर्से मे बदल जाता है और पहले परमाणु या ज़र्रात के बजाय दूसरे परमाणु या जर्रात आजाते हैं अब बताइये एक जोड़ा पैदा हो तो उनके कौल के मुताबिक़ सात बरस के बाद वह मावहन नहीं रहनी चाहिये रिश्तों का तो ताल्लुक बकौल आपके सिर्फ़ जिस्म से था और वह तबदील हो गया और उसकी मा-मा-और बाप बाप नहीं रहना चाहिये। यह बेटे की वहू नहीं थी।

मैं उसकी तरदीद की गई है।

१८—परदे का हुक्म ना मुकम्मिल नहीं दियागया बल्के मुकम्मिल दिया गया उम्महात रूहानी रिश्ते की वजह से मा क़रार दी गई है क्योंकि नबी उम्मत के रूहानी बाप है और उनकी उम्महात कहकर हुरमत क़रार दी गई है कि नबी की बीबियां बमंजिले माके हैं और मर्द औरतों को हुक्म दिया कि।

पारदा भी साथ ही बता दिया और ऋग्वेद में परदे का कहीं हुक्म नहीं यूँही हवाले लिखदिये गये हैं।

चाहिये था मन्त्र पेश किये जाते।

१९—स्वामी दयानन्द जी महर्षि और पं० लेखराम तौ न पासके उनकी नहीं मालूम निजात कैसे हुई ?

२०—मेरे सवाल का बिलकुल जवाब नहीं है कलीमुल्ला आप में क्या किसी ने हांना है जिसके महर्षि भी निजात न पासके और तनासुख के चक्कर में फँसगये।

ख्वाजा जलालुद्दीन एम० ए० २-७-२३

जवाबुल जवाब अज तरफ आर्यसमाज मौगांव व जवाब जवाबुलजवाब अहमदी साहबान।

१-अपनी जिंदगी के बारे में यह दावा करना विला दलील कि मैं नेक हूं मानने के काबिल नहीं। जबकि कुरान में खुद साफ लफजों में रसूल के गुनाहगार होने का बयान है। यह और बात है कि वह माफ करदिये गये जो मुसल्लमा फरीकैन नहीं "जंब" के मानी लुगात अर्बी में साफ तौर पर गुनाह के हैं लग़जिशे बशरी कुदरती चीज़ होने से शुमार में भी नहीं आसक्ती और उसका यकसां तअल्लुक एक पारसा और जिनाकार शख्स के साथ है कोई खुसूसियत नहीं।

२-ऋषि मुनि विला जमाने के फर्क के जवाब और मानों को साथ २ जान गये क्योंकि उनमें पूर्व पुण्यों की बिना पर यह योग्यता मौजूद थी कि ईश्वर से विलावास्ता गैरी फौरन ज्ञान को शब्द अर्थ संबंध के साथ मालूम करलें। विला जवान के जवान सीखने की मिसाल खुदाने हर शख्स के घर में देदी है जो औलाद वाला है कि उनकी औलाद जो पैदा होती है वह विला जवान के ही जवान सीख जाती है पंजाबी बच्चा पंजाबी बोलता है और अरबी बच्चा अरबी बोलता है। जिसके मानी साफ है कि विला किसी पहली जवान के जवान बोलता या सीखता है वक्त का फर्क जरूर है जो ऋषियों में अपनी काबिलियत की वजह से नहीं रहता साथ २ होजाता है। ख्वाजा कमालुद्दीन खाँ साहब ने कुछ ही साबित किया हो आखिरकार अरबी ज़ुबान इंसानी जवान ही रहेगी और उस में वह काबिलियत नहीं होसकती जो खुदा की बातों में हो सकती है। इसीलिये कुरान तमाम बारीकियों से जो वेदों के बयान की हैं खाली है। कुरान में साफ लिखा है कि

"फइन्नमा मस्सर नाहो बिलि सानिक" कि हमने सहल कर दिया है इसको तेरी जुबान में जिसके साफ मानी हैं कि कुरान किसी पहली जबान से जो जारी थी सहल कर दिया गया है। और वह पहिली जबान देववाणी ही होसकती है। जिसके मानी खुदा की जबान के हैं जिंदा और मुर्दा ज़बान कहना यह एक इस्तलाह है असलियत नहीं। संस्कृत हमेशा विद्वानों की जबान रही है और जो लोग यानी लकड़-हारे तक बोलते रहे हैं (राजाभोज के जमाने में) वह लौकिक संस्कृत थी। फर्क बहुत ही कम था। मैं जिंदा जुबान उसे कहता हूं जो बारीक से बारीक ख्याल को जाहिर करने में समर्थ हो और खुदा की जबान हो-क्योंकि खुदा जिंदा है उस की जबान भी जिंदा होगी अगर खुदा के मानने वाले दुनियां में कम होजावें तो खुदा मुर्दा या कमजोर नहीं कहला सक्ता।

३-वेदों में ऋषियों के हालात होने ही नहीं चाहिये यह हमारा दावा ही नहीं कि किसी का नाम वेदों में हो। यह तवारीखी अमर है वेद इससे पाक हैं अगर आपको हालात देखने हो तो पढ़ो गायत्री उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण, वगैरह जहां बयान किया है कि उनकी जिंदगी वेद प्रचार में गुजरी हालात के जानने की जरूरत इब्तदाई पुरुषों के वास्ते नहीं होसकी क्योंकि दुनियां के शुरू में कोई शख्स भी बिला इम-दाद खुदा किसी भी मुफीद या मुजिर शै को नहीं मालूम कर सक्ता या जाहिर कर सकता है। इसवास्ते उनकी जिंदगी के मुतल्लिक किसी तहकीकात की जरूरत ही नहीं जो भी इब्तदाई मुलहम होंगे पवित्र होंगे अपवित्र नहीं। अपने दिल से गढ़लेने या कुछ भी बनालेने का शक और इमकान दुनियां के बीच में मुलहम होने के दावीदार के मुताल्लिक होसक्ता है।

जहाँ मक्कारी का इमकान है इब्तदा में ऐसा इमकान ही ना मुम्किन है। आपने कुरान के बारे में यह जो कह दिया कि उसमें और किताबों की पाक तालीम भी आगई है लेकिन उस बात को बयान नहीं किया जिसकी वजह से इसका आना जुरूरी हुआ-कोई नया उसूल बतलाइये जो इसमें प्रकट किया हो। जब सिर्फ दूसरी किताबों का मजमून ही दुहराया गया है तो इसका आना बिल्कुल बेमानी और बेकार है। तअज्जुब है कि जनाब फिर भी इस कुरान को सबसे बढ़कर बताते हैं हाँ बढ़कर के आगे अगर बेकार और फिजूल बढ़ादें तो बात ठीक बन जाती है।

मौजूदह कुरान मजीद की तरतीब इल्हामी कहना यह बड़ी दिलेरी की बात है। क्या सबसे पहले सूरे फातहा उतरी थी? या "इकरा बिस्मेरब्बे का,, उतरी थी? तफसीर बैजवी को उठा कर देखेंगे तो मालूम हो जावेगा कि जो दावे मैंने कुरानी आयात के जाया होने से मुतल्लिक किये है वह सहीह हैं। शिया तो जिंदा सुबूत मेरे दावे का है। लाइफ आफ मोहम्मद जिसका आप हवाला देते हैं उसको मैंने पढ़ा नहीं है और दूसरे उनका लिखा हुआ पहिली किताबों की निस्बत मानने के काबिल नहीं हो सका।

(४) "माननसख मिन् आयतिन" वगैरह से किसी पहिली किताब का इशारा नहीं है लेकिन इसी कुरान की तरफ इशारा है जिसकी आयात नासिख और मंसूख मानी जाती हैं। देखो तफ़सीर हुसेनी और और हुनफी लोगों के इ.फ़ायद और शाने नुज़ूल और "ग़यासुल्लग़ात" जिसमें तमाम आयात का बयान है। अगर आपसे फिर मिलना हुआ तो उन आयात को भी पेश करके बता दिया जावेगा।

(५)"फ़बिअय्ये आलाएरब्बिकुम् तुकं जेबानं" की तकरार का कोई जवाब नहीं डाला कि इसकी ताईद "सरसैयद अहमद साहब" ने भी की है। सिजदे के बारे में चाहे वह फरमाँबरदारी का हो या इबादत का उसमें यानी इबादत में भी फ़रमाबरदारी ही मकसूद है। कुरान ने फैसला कर दिया है। कि पैदाशुदा चीज़ को भिजदा न किया जावे देखो "लातस्जुदू" ४१। ५ सिजदा करो न चांद को और न सूरज को सिजदा करो अल्लाह को कि जिसने इनको बनाया है अगर तुम को उसकी इबादत करनी है। इसी बिना पर अज़ाज़ील ने सिजदा करने से आदम को इन्कार किया-लेकिन लानती ठहराए जानें से कुरान की तालीम पर नुक्स मर्दुमपरस्ती का आता है। रसूल से बांदियों के मुताल्लिक आज़ादी छीनली इसके वास्ते देखो सूरह अहज़ाब-"रुकूअ आयत १२" "ला यहिल्लो लकन्निसाओ" वगैरह वेद के आमिलीन के मुताल्लिक तो आप क्या बता सकते हैं कि वह मा से ज़िना करते थे। लफज 'वाम' यह जाहिर करता है कि वाम मार्गी वेद से उलटा चलने वालों का नाम था, न कि वेद पर चलने वालों का। इस लाम में अबनक यह अकीदा है कि अगर कोई शख्स मुहर्रमात अबदी से कि जिनको खुदा ने हराम किया है जैसे मां बेटी बहन वगैरह के निकाह करले और उनसे सुहबत करे तो अबू हनीफा के नजदीक उसपर हद नहीं आती। हिदाया छापा मुस्तफाई जिल्द १ सुफा ४८५ क्या ऐसे शख्स भी मुंह लेकर बात कर सकते हैं। कुरान ने वेद वालों की तरदीद तो की लेकिन वेद का नाम तक लिखते न बना, यह सब ढकोसला है कि वेद वालों की तरदीद की है। पहाड़ का हामिला ऊँटनी का मुफस्सल बयान हदीसों व तफ़ासीरों में मौजूद है कुरान

में ऊँटनी की मौजज़ा लिखा है क्या आप हदीस वगैरह नहीं मानते सारे कुरान से नमाज़ ५ वक्त पढ़नी चाहिये ज़रा यह तो दिखादें-अथवा कलमा ही कुरान से इकट्ठा दिखादें।

आप अहादीस वगैरह को छोड़कर एक कदम आगे नहीं चल सकते। गोश्त सिर पर रखना जिंदा के बारे में तो कहा जा सकता है लेकिन मुर्दा के बारे में एक बिल्कुल फिज़ूल बात है आपने इसका जवाब कुछ भी नहीं दिया। यह फेल कानून कुदरत के खिलाफ है। बंदर और सुअर इसी जिस्म में बनगए इसकी तरदीद आपने किसी सुबूत से नहीं की। 'वज अला-मिन हुमल् किरदता वल् खनाज़ीर' साफ उसी जिस्मका बन जाना ज़ाहिर करता है। मैं एक बात और कहना भूल गया कि इस्लाम में हैवानों से ज़िना करना जायज़ करार दिया है। शक्कुल कमर का बयान किसी भी तवारीख में नहीं। आसमान की खाल खींचना माहियत जानने के वास्ते कुरान जैसी फसीह किताब का ही मुहावरा होसकता है। वेद में नेस्ती से हस्ती का कहीं भी सुबूत नहीं नो-"सदासीत्" इसकी साफ तरदीद करता है पैदा शुदा चीज को खुदा हमेशा कायम रख सका है इसकी कोई दलील और मिसाल नहीं दी। एक और नया दावा करदिया मंतिक और फिलसफा और कोई चीज नहीं है लेकिन दुनियां के मुताल्लिक सहीह नतायज निकालने का इल्म, भला इसका ताल्लुक इलहामी किताब से कैसे नहीं। मुक्ति में सिर्फ रूह रहती है जो गैर पैदा शुदा है इस वास्ते बूढ़ी होना नामुमकिन है लेकिन जन्नत में जिस्म भी होगा क्योंकि उसकी चीज़ें और बयान उसका होना साबित करता है औरतें लौंडे, फल, शराब, दूध की नहरें, शहद की नहरें वगैरह सब मुमकिन चीज़ों का सुबूत है। रसूल की बीवी जिस मानों में

मां बताई गई है उन्हीं मानों में रसूल आप क्यों नहीं बताए गये कुरान में तरदीद क्यों की है 'सपर्यगाच्छुक्रमकायम्" वगैरह मंत्र के मुकाबिले में आपकी कुरानी आयत कुछ भी नहीं देखो यजु० अ० ४ नं० ८ वेद में जो बयान खुदा व रूह के मुतालिक दिया है उसका सानी दुनियां भर की किताबों में नहीं पाया गया। मैंने आपको कल साबित करके बताया है कि वेद परमात्मा से पैदा हुए हैं और वह उसने इब्तदाय दुनियां में जाहिर किये हैं। जैसा कि इन आगे वाले मंत्रों से साबित है उसने अपना बयान भी मुकम्मिल दिया है और यह भी साबित करदिया है कि इब्तदा में कैसे होसकता है "तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।" इस वेद मंत्र में साफ तौर पर यह जाहिर करदिया कि वेद ईश्वर ने उत्पन्न किए और उनके नाम यह हैं-छंद शब्द और अथर्व एकार्थवाची हैं यहांतक कि चारों वेदों पर आम तौर पर इसका इतलाक होसकता है। खास खूबी यह है कि अथर्व वेद का समावेश तीन विद्याओं में ही होजाता है। जिसको विज्ञान कहते हैं" बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्ने यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेरणा तदेषां निहितं गुहावि ऋ० मं० १०-७१-१ इस वेद मंत्र ने सिद्ध करदिया कि बृहस्पति वेद के मालिक ने वेद को इब्तदाय दुनियां में प्रकट किया जो जबानों से सब से अव्वल है यानी मां है लुगतों से मुबर्रा है शब्द सब में प्रकाशित हुई है और सबसे श्रेष्ठ है और बुद्धियों में इसका प्रकाश हुआ है किसी इन्सान की वकालत उसमें शामिल न थी और वह साक्षात् रूप से परमात्मा से प्रकट हुए आपका

यह फरमानः कि इब्तदा में लोगों की हालत ऐसी होगी कि वह किसी बात को अब के लोगों की तरह न समझ सके होंगे, सो सामाजिक नियम की उसूली बातों से उनको जरूर वाकफियत होनी चाहिये वर्ना वह कुछ भी काम नहीं कर सकते। आपने कहा कि वह चोरी और जिना से नावाकिफ होंगे और उनको यह कहना कि चोरी और जिना नकरो चोरी और जिना का सबक सिखाना होगा। हजरत! आपकी अकल की हम दाद देते हैं। आपने खूब समझा अजी हजरत जब उन को शादी का उसूल समझा दिया तो जिना के समझाने की जरूरत ही क्या रही यानी यह कहना कि तुम अपनी ही मन-कूहा बीबी को बीबी समझना और को नहीं, इसी के मानी तो निकाह और जिना दोनों के समझा देने के हैं। बहुत सी औरतों में से किसी खास औरत को मुकर्रर करने से यह सवाल कुदरती तौर पर पैदा होता है कि और औरतों से मुमानियत क्यों कीगई? इसका जवाब यही तो होगा कि तुम्हारी तो एक ही है बाकी दूसरों की अपनी २ जहां अपना पन समझाया जायगा वहाँ गैरियत पहिले समझाई जायगी जिसके मानी यह हैं कि जिना बिला निकाह के निकाह बिला जिना के समझाया ही नहीं जासकता, क्या हजरत आदम को इस अमर से नावाकफियत थी कि जिना क्या है? अगर थी तो उन्होंने चाहे जिस औरत से जो उनकी बेटियां ही होंगी या पोतियाँ जरूर सम्भोग करलिया होगा और अगर उन्होंने अपने को रोका तो जरूर जिना से वाकिफ थे। वेद ने क्या ही अच्छा कहा है कि जो मनुष्य विद्या और अविद्या दोनों को एक साथ जानता है, वही बुरे कामों से बचकर नेकी की तरफ रुजू करता हुआ निजात पासकता है देखो यजु० ४०

अध्याय-"विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह, अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यायाऽमृतमश्नुते ।' खुदा का रुलाना तो करीने क़यास है कि बंदों को उनकी बुराई की एवज रुलाता है लेकिन अगर उनकी बुराई को बढ़ावे और गुमराह करे तो नुक्स आता है । इसलामी खुदा करीब २ बल्कि बिल्कुल इबलीस की तरह लोगों को गुमराह करता है । परदा डालना-खुदा की तरफ से कुरान में साफ बयान है देखो-सूरत १७ रुकूअ ५ "इजाकरातल् कुरआना" फासिक लोगों को भी उनके फिस्क की सजादे नकि उनके मर्ज को बढ़ावें । मोहलत के मानी आपने जो किये हैं वह कोई अक्ल नहीं मान सकती "लेयजदादू इस्मा" के साफ मानी हैं कि गुनाह और समेट ले और इसी लिये हम उन को ढील दे रहे हैं अगर इन्सान फेल मुख्तार है तो कुरान में जो यह लिखा है "वलायजा लूवा मुख नले फानि इल्ला मर्रहिमा रब्बुका वले ज़ालिक खलकाहुम" में साफ उनको मजबूर साबित करता है यानी खुदा ने इरादतन कुछ लोगों को इख्तलाफ के वास्ते और कुछ पर रहम करके दो तरह की तबीयत वाले इन्सान पैदा किये हैं जनाब ने "कुतेलल् इन्सानो माहुम् अक् फराहुम्" का कुछ भी जवाब नहीं दिया कि खुदा कोसता है और अपनी ना उम्मेदी साबित करता है । उसूले हकीकी के बारे में सिवाय माशरत के जनाब ने कुरान में किसी के भी होने का सुबूत नहीं दिया । ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, और वानप्रस्थ वगैरह का कोई सुबूत कुरान से नहीं । आपने कहभी दिया कि जब चाहे शादी करले बहुत से आदमी बीमारी की हालत में शादियाँ कर लेते हैं कब उन्हें न करनी चाहिये और कितने ही आदमी बुढ़ापे में ख्वाहिश से खाली नहीं होवे तो आखिरकार इसकी कोई हद है या नहीं

जबकि औलाद के पैदा करने से कुवा में एक जमाने के बाद कमजोरी पैदा होने लगती है। इल्म हिंदसे वगैरह का कुछ भी जवाब नहीं कुरान में किसी जगह भी माद्दे की पैदायश नहीं है रूह के बारे में तो कुछ बयान है।

चौथा पर्चा जवाबुल जवाब जो बजवाब जवाबुल जवाब अहमदी साहब आर्यसमाज की तरफ से भेजा गया।

हमने शरायत के खिलाफ कोई ऐसा काम नहीं किया जो एत राज़ के काबिल हो-जवाबात के वास्ते हमने उतने ही वक्त तक तहरीर जारी रक्खी जब तक तीन घंटे हुए पर्चा चाहे हमको कितने ही बजे मिला हो हमने कुरान पर नये एतराज कोई नहीं किये आप महरबानी करके जाहिर करें मुदल्लल जवाब के बारे में वह लोग फैसला करेंगे जिनको इनके छपजाने के बाद पढ़ने का मौका मिलेगा। हमको इनके बारे में कोई फिक्र नहीं है। आपने कुछ जवाब कुरान पर एतराजात का दिया है, वह मेरे ख्याल में वैसा ही है जैसा लोग तसव्वर करेंगे, वेदों की तायदाद का मुदल्लल और माकूल जवाब दे चुका हूं। मालूम होता है आपकी दौड़ आपके मुकर्रिर दायरे से बाहर नहीं मालूम होती क्यों कि आप मेरे सबूत को जो मैंने ऋग्वेद में से अथर्ववेद के मुतअल्लिक दिया है, बिल्कुल ही पीगये। ऋग्वेद में अथर्ववेद का जिक्र है देखो ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त १५ मंत्र १७ अब अगर कुछ भी शर्म है तो यह न कहना कि सिवाय अथर्व के किसी वेद में अथर्व का नाम नहीं-ब्रह्मा शागिद भी था जिसने चारों वेदों को इन ऋषियों से सीखा क्योंकि चारों वेदों के जानने वाले का नाम ब्रह्मा है। दूसरे यह पदवी होने

से चारों ऋषियों पर लग सकी है जो चारों वेदों के मुलहम थे, मैंने अहमदी वगैरह की मिसाल देकर साफ़ तौर पर समझा दिया है यह नाम अनासर के नहीं हैं, खास पुरुषों के हैं 'अल हक "मीर कासिमअली के अखबार का भी नाम था और खुदा का भी नाम है। अगर कोई यह कहे कि अलहक मर गया तो क्या आप यह मान लेंगे कि खुदा मर गया मेरे ख्याल में कोई भी उसको माकूल शख्स नहीं कहेगा जो ऐसे बे मौके मानी ले इसी तरह अग्नि वगैरह के बारे में समझ लें। तसलसुल यह नाकिस है जो बिना किसी इल्लत के हो हर दुनिया के आग़ाज में वही शख्स वेदों के मुलहम बनते हैं जो उससे पहिली दुनियाँ में ऐसी योग्यता प्राप्त कर चुके थे, हर दुनिया दो फना के बीच में है और हर फना दो दुनिया के बीच में है इस वास्ते पहिली दुनिया के आमाल की बिना पर दूसरी दुनिया में मुलहम हो जाता है। आपने जब से खुदा है तब से दुनिया को मानकर तसलसुल को तसलीम किया है जो इस बयान के खिलाफ़ है मुलहम के योग्य जितने होते हैं वह सब मुख्तलिफ़ दुनिया में चले जाते हैं या यूं समझ लीजिये कि अव्वल के चार पर वेद नाज़िल हो जाता है और बाकी के और तरह पर उनके ज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं। वेदों में चार वेदों का जिक्र होने से ऋषियों का लफ़्ज पड़ा हुआ है जो चार पर ही दलालत करता है तवारीख चार को ही बताती है। सायण ने भी अपनी ऋग्वेदभाष्यभूमिका में इनको पुरुष विशेष माना है और चार माना है इलहामी किताब का काम उन्हीं सवालों का जवाब देना है जो उसकी शान के खिलाफ न हों। वेद में तारीखी बयान दर्ज नहीं जो शख्सी हो। नोअ से जो भरा पड़ा है यानी गधे कुत्ते घोड़े आदमी वगैरह का नौई या जिन्सी तरीक पर

बयान है शख्सी तौर पर नहीं। शख्सी तवारीख पैदाशुदा होती है अनवाअ कदीम होने से नौई तवारीख में कोई नुक्स नहीं। इंसान का खास्सा घोड़े का खास्सा दुनिया की पैदाइश फल वग़ैरह .का बयान वेद की खूबी को बढ़ाता है लेकिन किसी खास शख्स या घोड़े का या किसी खास दुनिया का बयान उसको उस शख्स और घोड़े और दुनिया से पीछे का साबित करेगा. इस वास्ते वेदों में तारीखी बयान नहीं है।

इब्तदाय दुनियां में चूंकि हमेशा ईश्वरी सृष्टि के योग्य कर्म वालों को पैदा किया जाता है इस वास्ते यह बयान एक अज़ली सदाकत के तौर पर बयान कर दिया गया। यह किसी खास दुनिया का नियम नहीं था इसका तो तअल्लुक हर दुनिया के साथ है। स्वामी जी का मतलब शख्सी रवायात से है जैसी कुरान में दर्ज है न कि नौई और जिन्सी। जरा समझकर एतराज किया कीजिये "वामदेव" के मानी आलिम और वारीकवीं के हैं और जीवात्मा के भी प्रशस्त और विद्वान् तो आम तौर पर माना जाता है इस वास्ते वामदेव ऋषि के मानी हैं, प्रशस्त ऋषि के मानी हैं जो वेद मंत्रों के अर्थ का द्रष्टा है। हिमालय के मानी हिम-आलय-यानी वर्फ के पहाड़ के हैं जो हर दुनिया में होते हैं और कई जगह होते हैं इस हिमालय से ही सिर्फ मुराद नहीं है जो हिन्दुस्तान में है यह पहाड़ तो हिमालय की नौ का एक फर्द है, यह सिपहसालार को हिदायत है कि हर दुनिया में उन सिपाहियों को उपदेश दें और जोश दिलावें जो पहिले भी जंग में जाकर मैदान फतेह कर चुके हैं यह भी एक आम हुक्म है जो तीनों जमानों में सादिक आसकता है। छन्द के मानी अच्छी तरह खोल दिये गये हैं शायद आपने उसपर ध्यान नहीं दिया, निरुक्त के प्रमाण

से ही "छन्दांसि छादनात्" ऐसा कहकर अर्थ करदिया है। जहां छन्द के मानी इल्म उरूज़ के हैं वहां वह मानी भी हैं जो निरुक्त के हवाले से लिखे हैं हमारे मानी ज्यादा क़दर के क़ाबिल हैं क्योंकि वह मज़हबी है। पं० लेखराम और स्वामी दयानन्द की मौत के बारे में बयान बिल्कुल गैर मुताल्लिक है ऐसे बदकार शख्स दुनिया में बहुत हैं जो वह बात मुंह से निकाल कर उसको नाजायज़ तौर से पूरा करने की कोशिश करते हैं मौलवी सनाउल्ला और हजरत गुलाम अहमद आप की छातीपर मूँग क्यों दल रहे हैं मिस्टर आथम ने पेशीन गोई की मिट्टी पलीद कैसी की, बेगम का हाल तो मालूम ही होगा क्यों ज्यादे पुराने मुर्दे उखड़वाते हो। जन्नत में जाकर मदारिज में तरक्की को जनाब फिर तो आपको पूरा आनन्द या मुकम्मिल सुख मिल ही नहीं सकता क्योंकि हर रोज़ बढ़नेवाला सुख अपने आपको नाकिस साबित करता है। क्या अगर खुदा को हर रोज़ बढ़ने वाला माना जाय तो उसकी खूबी में कुछ इज़ाफ़ा हो सकता है ऐसे सुख को हमारी मुक्ति के आनन्द से क्या निसबत जो पूर्णता से प्राप्त होता है और वैसे ही इख्तताम जमाना मुक्ति तक बना रहता है। आगे आपने सिर्फ इतना ही लिख दिया है (कि दूसरे सवाल का जवाब नहीं दिया) बताया नहीं कि वह कौनसा सवाल है 'द्वासुपर्णा' में ईश्वर की प्रकृति साफ़ साबित है द्वा-दो-सुपर्णा-अच्छे २ गुणों वाली सहयुजा-मुहीत और मुहात या पिता और पुत्र या हाकिम और महकूम के तरीक पर हमेशा से मिले हुए-सखाया-आपस में एक दूसरे के माफिक या मित्रता युक्त यानी जीव खुदा से फ़ायदा उठा सकें और वह उसको फायदा पहुंचा सकें समानं वृक्षं-यानी वैसे ही वृक्ष पर यानी क़दीम

प्रकृति में कार्य करते हैं, वृक्ष-लफ़्ज़ जिस मसदर से बना है उनके मानी हैं छेदन-भेदन करने के यानी जो बशक्ले ज़वाल होसके या परिवर्तनशील हो। परिषस्वजाते-यानी सब ओर से व्याप्त है, तयोरन्यः-उन दोनों में से एक पिप्पलं-फल को यानी अपने कर्मों के फलों को स्वाद्वत्ति-खाता है या भोगता है अनश्नन् अन्यः-और दूसरा नहीं भोगता-यानी अपने लिये कर्म नहीं करता हुआ भोगता अभिचाकशीति-वह अच्छी तरह से उसके यानी पहिले के आमालों को वाच करता है। किस कमाल तरीक से तीनों चीज़ों को साबित किया है। मैंने जो दूसरा मंत्र दिया था, उसको क्यों छोड़ दिया? उसपर तो कुछ एतराज़ किया होता। नूरके मुतअल्लिक जवाब महज़ आप की तावील है हकीकत में कोई एतबार के काबिल बात नहीं "लैसकमिस्लहीशै" खुदा को अपनी तमाम सिफ़ात के साथ किसी का मिस्ल नहीं बनाती लेकिन एक २ सिफ़ में मुशाफिकेन की वजह से कुरान ने साफ़ ("अल्लाहो नूरुस्समावाते वलअर्ज़े") कहा है साफ़ लफ़्ज़ अल्लाह का है। कोई और तरफ़ यह खींच नहीं सकता लिहाज़ा मेरा सवाल कायम है। चोरीका लफ़्ज़ लोक में यानी दुनिया में बुरे मानों में लिया जाता है वरना जिस मसदर से यह लिया है उसके मानी ले जाने के हैं या हटालेने के या कबज़ा कर लेने के,खुदा इसी तरह तमाम सामान हमसे हमारी बद आमालियों की एवज़ दूरकर देता है। आम तौरपर मुतकब्बिर और काहार मग़रूर और ज़ालिम के मानों में इस्तमाल होते हैं लुग़ते उर्दू भी यहीमानी बयान करती है लेकिन लुग़ते अर्बी बड़ाई वाला और ग़ालिब बयान करती है और इसी तरीक़ पर यह है अगर हम खुदा को उर्दू लुग़त की बिना पर मग़रूर ज़ालिम लिखें तो आप

खामोश न रहेंगे बल्कि कुरान में एक जगह तो मुतकब्बिर होने से इबलीस की सज़ा है, लेकिन खुदा के मुतक़ब्बिर होनेसे उसको ज़रा भी बुरा नहीं कहा जाता। हरकत करने से मुराद हरकत पैदा करना है नकि खुदा हरकत में आ जाता है। लिंगको साफ़ वगैरह का एतराज़ फ़िज़ूल है यह गुरु और शिष्य के मुतल्लिक है यानी जब लड़का गुरुकुल में पढ़ने जावे तो गुरु इसको इन तमाम चीज़ों का पवित्र करना खुद सिखावे, बहुत से छोटे बच्चे जो पांच साल के जो गुरुकुलों में भेज दिये जाते हैं उनको यह बात गुरु को खुद करके सिखानी होती है इसमें ख़राबी क्या लाज़िम आती है। जब खुदा भी इस बात का उपदेश देने से बुरा नहीं कहलाता। पांडु आदि नियोग से उत्पन्न हुए, इस्लाम में यह मस्ला अभी तक है कि एक शख्स अपनी मुहर्मीन से भी शादी कर सकता है उसपर कोई हद कायम नहीं होगी—"रदुसार" लफ़्ज़ तीनों के वास्ते आया है मा-बहन-बेटी अगर 'उरमतोकुम' में दादी आजाती है तो सास वगैरह का क्यों ज़िक्र है फूफी और खाला भी तो 'उरूदातोहुम' के मातहत आसकते हैं तफ़सील के बाद इजमाल भी उसीको बताना फ़िज़ूल है। बीबी को साथ रखने के ऐसे नामाकूल मानी भी नहीं कि पाखाने में भी साथ लेजाओ इसके मानी हैं कि सफ़र में साथ रक्खो जैसे हज़रत साथ रखते थे हज़रत की बात तो पी जाते हैं। दैत से भोग का सबक हमारे लिये सिर्फ़ इतने हिस्से में है कि हम बेवक्त सम्भोग न करें और पूरी जवानी और तन्दुरुस्ती में औलाद पैदा करें। बाकी एक से ज्यादा से भोग करना और बहन या मां से भोग करना हमारे लिये सबक नहीं हो सकता "फ़ामफ़ख़ना" वगैरह में आपने कलामे इलाही मुराद ली है

जनाव साफ़ लिखा है कि उस की शर्मगाह में अपनी रूह फूँक दी यह तावीलात काम नहीं देंगी। जिसके पास वक्तपर चीज़ नहीं वह फकीर है और जिसके पास है वह मुहताज नहीं अदम से वजूद बेदलील और बेमिसाल है। रिश्ता मैंने महज़ जिस्म से नहीं माना रूह और जिस्म का किन्हीं खास आमाल से तअल्लुक टूट जावे अगर उसको रूहानी लिहाज़ से बयान किया है तो आप भी रूहानी लिहाज़ से होसकता है लेकिन वहां तो बात ही और थी हज़रत आपकी तावील ही इस बात को साबित करती है कि रसूल के फेल की आप कितनी कदर करते हैं खुदा को चीज़ों के पैदा करने के इरादा करने वाला नहीं मानते हम खास्से से दुनिया पैदा करने वाला मानते हैं और खुदा का नाम और इरादा या मर्जी आप एक ही चीज़ मानते हैं तो साफ़ लिखें आप तो मुझसे पूँछते हैं जो मौजूं नहीं मैंने औसाफ़ और सिफत में इल्लत और मालूल का तअल्लुक पूँछा आपने महज़ कुछ इस्तलाहात को लिखदिया है और उनके मानी को भी शायद समझा हो माबिहल इश्तराक के मानी हैं जिस अमर में मुआफिकत हो किन्हीं से या दो से ज्यादा अशिया में माबिहल इम्तयाज़ और माबिहल इफ्तराक दोनों हम मानी हैं किन्हीं दो अशिया का ऐसी सिफत वाला होना जिससे उनमें फर्क पैदा हो माबिहल इन्फ़काक= के मानी है जो किसी चीज़ से किसी को मुनफ़क करें। रिश्तों के मुतालिक सात या आठ साल में कोई फर्क नहीं आता क्योंकि असल तबदील नहीं होती जैसे नीम का पेड़ नीम ही रहता है चाहे परमाणु तबदील होजायें इसी तरह बेटी बेटी रहती है चाहे परमाणु तबदील होजायें आपने रिश्तों की तबदीली का कोई जवाब नहीं दिया। रामचन्द्र ३-७-२३

इस शास्त्रार्थ पर विशेष विचार

सज्जनों ! इस शास्त्रार्थ में उत्तर देने के लिये समय इतना न्यून था कि उसमें प्रश्नों के उत्तर जैसे विचार के साथ देने चाहिये थे वैसे नहीं दिये जा सके इसलिये इन प्रश्नोत्तरों पर पुनः विचार किया जाता है जिससे प्रत्येक सत्य के खोजी को विदित हो जावे कि वास्तव में सत्य धर्म क्या है ? अब हम दोनों ओर के प्रश्नोत्तरों टीका टिप्पणी सहित विस्तार के साथ दर्शाते हैं जिससे आगे वैदिक धर्मी शास्त्रार्थ कर्त्ताओं को विशेष सुगमता होजाय । कादियानी मौलवी साहब के प्रश्नों का सार यह है—

१—वेदों का प्रचार किन पर हुआ ? उन मुसलमान के नाम वेद में दिखाओ ?

२—वेद तीन हैं या चार ?

३—वह सृष्टि के आदि में प्रकाशित हुए वा नहीं ?

४—सनातन धर्मी कहते हैं कि वेदों का प्रकाश ब्रह्मा पर हुआ ?

५—आर्य समाजी कहते हैं कि चार वेद चार ऋषियों पर प्रकाशित हुए ?

६—वेद तीन ही हैं; क्योंकि ऋग्, यजुः, साम अथर्व का ज़िकर नहीं ?

७—यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभा विवाराः । यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं

प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु । यजुः ३४।५
में केवल तीन ही वेदों का जिकर है।

८—"एदमगन्म देवयजनम्पृथिव्या यत्र" यजुः अध्याय ४ मन्त्र १ में तीन वेद हैं ?

९—तेभ्यः स्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्त अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः । शतपथकाण्ड ११ अध्याय ५ में तीन वेद हैं ?

१०—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ... ३३ वर्ष में तीन ही वेद पढ़ना लिखा है ?

११—वेदों में चार मज़मून हैं ऐसा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है सिर्फ तीन नहीं ?

१२—छन्दांसि जज्ञिरे में "छन्द" शब्द अथर्ववेद वाचक नहीं किन्तु उरूज़ यानी छन्दोविद्या से आशय है ?

१३—ऋग्यजुः साम में से कोई मन्त्र अथर्व को बताने वाला दिखाओ ?

१४—वेद सृष्टि के आदि में नहीं हो सक्ते क्योंकि उस समय मनुष्य केवल खाना और भोग करना जानते थे। यजुर्वेद अध्याय ३१ में यह वर्णन है ?

१५—सृष्टि की आदि में यह कहना कि चोरी और जिना मत करो, चोरी और जिना सिखाना है ?

१६—इन अगले मन्त्रों से सिद्ध है कि वेद आदि सृष्टि में प्रकाशित नहीं हुये देखो ऋग्वेद अष्टक ८।२।४६।२, अथर्व का १५ अनु० २ व० ६ ऋग्वेद मं० १० सूक्त १६१ मं० २, संस्कारविधि पृष्ठ ३३३।

१७—ईश्वर की तरफ से चारों वेद आये यह वेदों से सिद्ध करो ?

१८--चार वेद चार ऋषियों पर आये यह बात वेदों से सिद्ध करो ?

१६--आवागमन के विषय में वेदों से प्रमाण और युक्ति दो ?

२०--जीव और प्रकृति नित्य है यह वेदों से युक्ति सहित सिद्ध करो ?

२१--सायणाचार्य ने वेदों में पौराणिक कथायें मिला दी हैं और ब्राह्मणों ने भी श्लोक वेदों में मिला दिये हैं। अथर्व में अल्लोपनिषद् मिला दिया है। ऋ० भू० उर्दू सु० २५। उपदेश मञ्जरी सु० ३०।

२२--वेदों का पढ़ना पढ़ाना लोगों ने छोड़ दिया है ?

२३--यजुर्वेद अध्याय २५ में स्वामी जी ४८ मन्त्र लिखते हैं और पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र ४७ लिखते हैं।

२४--दिन और रात ईश्वर की दो बग़ल हैं। सूर्य की धूप और बिजली की चमक यह दोनों ईश्वर के होंठ हैं। अन्तरिक्ष ईश्वर का मुख है।

२५--ईश्वर चोरी करता करवाता है। ईश्वर हमल (गर्भ) गिराता है।

२६--ईश्वर कम इल्म है। वह पढ़ता है, विद्या वृद्धि करता है।

२७--ईश्वर सुनकर ज्ञान प्राप्त करता है। 'द्वे सृती अशृणवम्'

२८--परमात्मा ने कष्ट उठा कर सृष्टि को पैदा किया। यजुः अ० ६। १४ में गोपथ १।२।

२६--ईश्वर हरकत करता है। यतो यतः समीहसे० यजु० ३६। २२।

३०--अग्निहोत्र में व्यय अधिक है प्रत्येक निर्धन नहीं कर सकता।

३१—नियोग काबिले अमल नहीं। नियोग करने वालों की फहरिस्त कहां है?

३२—सोमः प्रथमो विविदे० में तीसरे को अग्नि क्यों कहा। उसमें हरारत क्यों है?

३३—वेदों में यह नहीं कि किस २ से विवाह करें। कौन २ औरतें हराम हैं।

३४—वाममार्गी अपनी मा बहन से शादी करना बनाते हैं।

३५—स्वामी जी "प्रजापतिर्दुहितुगर्भं दधाति" से कन्या से विवाह बताते हैं।

३६—स्वामी जी मनु के हवाले से भूरी आँख वाली कन्या से विवाह का निषेध बताते हैं।

३७—क्या आर्य समाजी भूरी आँख वाली या नदी आदि नाम वाली कन्याओं से विवाह नहीं करते?

३८—भूरी आँख वाली में क्या हानि है; उनसे विवाह कौन करे?

३९—मुर्दा जलाने में सर्फ़ बहुत होता है; हर इंसान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

४०—कुहस्विद्दोषा० ऋग् ७। ८। १८। २ में प्रश्नोत्तर नाक़ाबिल अमल हैं। क्या आप लोग ऐसा करते हैं?

४१—पुरुष स्त्री को हर समय अपने साथ रक्खे क्या यह आर्यसमाजी करते हैं?

४२—"वाचन्ते शुधामि" में फ़ोहशबयानी है।

४३—बैल जैसे प्रजा बढ़ाता है ऐसे प्रजा बढ़ाओ। यह ठीक नहीं

४४—दिन में सोना मना लिखा है; क्या आर्यसमाजी नहीं सोते?

४५—गाना मना है तो नगरकीर्तन नहीं करना चाहिये।

४६—वेदों में परदे का हुक्म नहीं है। 'बलवानिन्द्रिय-ग्रामो विद्वांसमपि कर्षति' के विरुद्ध है।

४७—इंसानों के मरने के बाद वसीयत का जिक्र वेदों में नहीं।

४८—रूह माद्दा क़दीम होने से ईश्वर मुहताज ठहरता है।

४९—ईश्वर को कुह्मार से तशबीह दी है।

५०—आवागमन मानने में मनुष्य हराम की हुई माँ वग़ैरह से भी शादी कर सकता है क्योंकि कोई पैदा होने के समय कर्मों की फ़हरिस्त साथ नहीं होती।

५१—वेदों में सौ बरस की उम्र बताई फ़ी जमाना कोई सौ साल तक जिन्दा नहीं रहता।

५२—चार सौ साल की उम्र कोई नहीं पाता।

५३—इस समय कोई ऐसा आर्य नहीं जिससे ख़ुदा कलाम करे मिर्ज़ा साहब से ख़ुदा कलाम करता था।

५४—पं० लेखराम के शहीद होने की हमारे रसूल मिर्ज़ा साहब ने पेशीनगोई की।

५५—स्वामी जी ने भंग पी थी पं० लेखराम ने मूर्तिपूजा की इसलिये उनकी मुक्ति नहीं हुई क्योंकि यह पाप कर्म हैं और पाप क्षमा नहीं किये जाते।

आर्यसमाज की तरफ़ से क़ादियानियों पर किये हुये एतराज़ात का सार

१—कुरान सृष्टि के आदि में नहीं हुआ। मनुष्य की प्रकृति इस ही प्रकार की है कि उसे कोई नैमित्तिक ज्ञान कहीं से प्राप्त हो; कुरान ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता।

२--कुरान में कोई ऐसी नई बात नहीं बताई जो पहिली किताबों में न हो।

३--इल्हाम किसी देश की भाषा में न हो। कुरान अरबी में है जो अरब की भाषा है इसलिये कुरान इल्हामी (ईश्वर विज्ञान) नहीं है।

४--कुरान में किस्से कहानियां भरी पड़ी हैं जो कि इल्हाम में नहीं होनी चाहिये।

५--कुरान में रसूल की औरतों के झगड़े भरे पड़े हैं अतः मामूली इंसान की भी बनाई हुई यह किताब (कुरान) नहीं।

६--कुरान में ६६ आयतें नासिख और मंसूख हैं। ईश्वरीय ज्ञान में ऐसा नहीं होना चाहिए देखो 'माननस्खमिनआयतिन्'।

७--सामयिक कुरान की वैसी तरतीव (क्रम) नहीं जैसा वह उतरा था।

८--बहुत सी आयतों को बकरी चर गई।

९--दस पारे कुरान में से निकाल दिये गये। ४० पारे का कुरान पटने की लाइब्रेरी में अब तक विद्यमान है।

१०--कुरान में निरर्थक पुनरुक्ति (तकरार) व्यर्थ वाक्य हैं जैसे "फ़बियप्र आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्जेबान" को बार बार दुहराना।

११--ईश्वर से भिन्न को प्रणाम (सिजदा) कराना।

१२--इन्कार करने पर शैतान को धिक्कृत (लानती) ठहराना।

१३--अपने कहने का स्वयं खण्डन करना।

१४--आदि में आदम से हव्वा को पैदा करके बेटी से विवाह कराना।

१५—आदम के बेटी बेटियों से विवाह कराके सगे बहन भाई का विवाह कराना।

१६—पुनः इसका खण्डन "हुर्रमतं अलैकुम् अम्महात कुम्" कह कर इसको निषिद्ध (हराम) ठहराना।

१७—रसूल को बीबियों की आज़ादी देकर पुनः छीन लेना। सूरते 'अहजाब'।

१८—कुरान में असम्भव बातें हैं—जैसे पत्थर में डंडा मार कर स्रोत (चश्मा) बहाना।

१९—पहाड़ में से ऊंटनी का निकल आना।

२०-मृतशरीर को गोमांस छुआकर घातक का पता लगाना।

२१—मनुष्यों को इसी शरीर में बन्दर और सुअर बना देना।

२२—शक्कुल कमर (चांद का दो टुकड़े होना) का होना

२३—याजूज माजूज का वह दीवार बनाना जिसका कुछ पता न हो।

२४—आसमान की खाल खेंचना।

२५—खुदा का आग में से बोलना।

२६—असत् (नेस्ती) से सत् (हस्ती) की उत्पत्ति होना।

२७—उत्पन्न हुई को नित्य मानना।

२८—कुरान अदम से वजूद (असत् से सत्) मानता है सो कैसे?

२९—अत्यन्ताभाव की उत्पत्ति कैसे हुई?

३०—नित्य धर्मात्मा और पापियों को दण्ड और अनुग्रह देना! कैसे

३१—रसूल की स्त्रियां मायें हैं परन्तु रसूल बाप नहीं वह कैसे?

३२—जन्नत (स्वर्ग, में सदैव युवती और युवा रहने वाले औरतें और लौंडे कैसे ? यह सारी बातें युक्तिप्रमाण विरुद्ध हैं।

३३—खुदा और शैतान दोनों गुमराह करते हैं। "अतरुदूना अन्नहदू बलायह सवअल्लजीना"।

३४—जन्मसे ही पापी और पुण्यात्मा बनाना "लौशा अल्ला तुलजा अलाकुम्"

३५—लोगों के दिलोंपर खुदा का परदा डालना, कान में गिरानी करना "इजा करातल,कुरआना"

३६—खुदा का बेइल्म होना "मामन् अना अन् नूरसिल्ला इल्लालैन अलमा"

३७—खुदा को नाउम्मीद और निराश बनाना। "वहक्कना कलिमतोरब्ब काल अन्न खिजन्न वकलीलुलम् मिन् इबादियश-शकूर"

३८—क़यामत (प्रलय) के समयसे बेखबरी "इन्नमा इलमोहा इन्दा-रब्ब"

३९—खुदा का मुहम्मदसाहब की स्त्रियों के झगड़े में पड़ना।

४०—खुदा का इंसानों को कोसना। "कुतिलल इंसानो-मा अकफ़राहू"

४१—ब्रह्मचर्य की शिक्षा कुरानमें कहां है ?

४२—विवाह योग्य मनुष्य कब होता है ?

४३—खानादारी (गृहस्थ जीवन) कबतक लाभदायक है ? कब हानिकारक ?

४४—गणित, ज्योतिष, पदार्थविद्या, तर्क, सृष्टि की उत्पत्ति और बीजगणित विद्यायें कुरान में कहाँ है ?

४५—जीव और प्रकृति के लक्षण और उनका परिज्ञान कुरान में नहीं।

४६—विवाह सम्बन्धी संपूर्ण नियम कुरान में कहाँ हैं?

४७—ईश्वरप्राप्ति के साधन दिखाओ?

४८—एक स्त्री अपनी आयु में कितने पुरुषों से निकाह करा सकती है?

४९—मुक्ति के साधन कुरान में क्या हैं? मुक्ति का लक्षण क्या है?

५०—कुरान खास इनसान का पक्ष क्यों करता है? यथा "नगह्रम् यूमिम् बिल्लाहि व कज़ालिका औदैजा इलैका।

५१—खुदाने अपने से कितने पहले दुनिया पैदाकी?

५२—क्या ईश्वर में व्यर्थ बैठे रहने का भी गुण है? यदि है तो क्यों?

५३—सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व संभव और असंभव में कोई भेदथा? यदि था तो वह क्या? यदि न था तो उत्पत्ति के पश्चात् क्यों विद्यमान हुआ? एक अभाव का अत्यन्ताभाव हुआ और दूसर. ईश्वर से भी नष्ट न हो सका।

५४—सृष्टि से पूर्व ईश्वर का मालूम (ज्ञेय) क्या था?

५५—ईश्वर के ज्ञान का कारण क्या है?

५६—क्या ज्ञेय ही ईश्वर के ज्ञान का कारण है?

५७—यह सृष्टि ईश्वर के ज्ञान के अनुसार है वा इच्छा के अनुसार?

५८—क्या गुण और गुणी में कार्यकारण का संवन्ध होसकता है? यदि नहीं तो क्यों? यदि हो सकता है तो किस प्रकार?

५९—अमुक मनुष्य अमुक २ कर्म करेगा यह अकारण ज्ञान ईश्वर को कैसे हुआ जबकि सृष्टि प्रवाह से अनादि नहीं है?

६०—आप स्वर्ग में आत्मा का शुभाशुभ कर्म करना मानते हैं या नहीं ? यदि मानते हैं तो उनका फल कहां मिलेगा ? यदि कर्म करना नहीं मानते तो इसका प्रमाण कुरान से दो ?

६१—व्यभिचार, निर्लज्जता और परस्त्रीगमन में क्या अन्तर है ? इनके पृथक् २ लक्षण कहो या व्यभिचार का लक्षण ही कहो। कुरानी आयत होतो अच्छा है ?

६२—इल्हाम का लक्षण क्या है और इस शब्द के क्या अर्थ हैं ?

यह दोनों ओर के प्रश्न हैं जिन पर दफा फिर विचार करना है। आर्यसमाज की ओर से जो उत्तर दियेगये वह तफ़सीलवार क्या हैं और जो इसलाम की तर्फ से उत्तर दिये गये हैं उनकी हक़ीक़त क्या है यह सब ही बातें हम आगे लिखेंगे पाठकगण ध्यान से पढ़ें और परिणाम निकालें।

शिवशर्म्मा उपदेशक,
सभा यू. पी.

आर्यसमाज की ओर से विवरण सहित उत्तर और उनपर विशेष।

१—वेदों का प्रकाश चार ऋषियों पर हुआ। इसमें प्रमाण-

"यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्। तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभिसंनवन्ते" ॥

ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ७१ मं० ३ ॥

वेद भगवान् सृष्टि के आदि में होने से अपने अन्दर किसी ख़ास इन्सान का नाम नहीं रखते। आगे चलकर वेदों में आये हुए गुणवाचक शब्दों द्वारा दूसरे मनुष्य अपने २ पुत्रादि के नाम रखते हैं देखो इसमें मनु का प्रमाण ।

सर्वेषां तु सनामानि कर्माणिच पृथक् पृथक् ।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ॥१॥२१

ऋषीणां नामधेयानि याश्च वेदेषु दृष्टयः ।
शर्वर्यन्ते प्रसूतानां तान्येवैभ्यो ददात्यजः ॥१॥२२

वेद चार हैं; विद्या तीन हैं । देखो महाभाष्य ।

"चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः०॥ चत्वारि शृङ्गेति वेदा० नि० १३।७ चत्वारो वा इमे वेदा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ब्रह्मवेद इति ।

चत्वारो वेदा वेदैर्यज्ञस्तायते २।२४ चतुर्षु वेदेषु ३।१ चत्वारो वेदाः ३। १७ गोपथब्राह्मणे ।

विद्या तीन हैं जिनको वेदत्रयी भी बोलते हैं, देखो छान्दोग्य उप० २।१३

देवा वै मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्या प्राविशन्० प्रपाठक १ खं० ४। २।

एवमेषां लोकानामासां देवतानामस्यास्त्रय्या विद्यया वीर्येण०।

छान्दो० प्र० ४ खं० १७। ८

"यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋचः सामयजुर्मही०"
अथर्व का० १०। अ० ४ सूक्त ७ मं० १४

तत्तद्यत् सत्यं त्रयी सा विद्या। शतपथ।६।५।१।१६

२—इसमें चार ऋषियों पर सृष्टि के आदि में चारों वेद प्रगट हुए लिखा है।

तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयी विद्या सम्प्रास्रवत्० छान्दो० प्रपाठक २ ख० २३, २६ और

"तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्त"

शतपथ के वचन को मिलाकर देखिये कि त्रयी विद्या में चारों वेद शामिल हैं या नहीं ? इसीप्रकार सबस्थानों पर जहाँ चारों वेदों का ज़िकर आवे वहां पर तीनों विद्या समझो और जहाँ २ तीनों विद्याओं का ज़िकर आवे वहाँ २ चारों वेदों को समझना चाहिए।

३—वेद सृष्टि के आदि में प्रकाशित हुये इसमें वेद का प्रमाण दिया गया वह यह है—

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः। यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥ ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ७१ मं० १॥

४—वेद किसी एक पुरुष पर प्रकट नहीं हुए किन्तु चार पर हुये क्योंकि "सपूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।" योग सूत्र इसमें शब्द "पूर्वेषाम्" पड़ा है जो बहुवचन है। यदि एक ब्रह्मा पर प्रगट होते तो "पूर्वस्य" एकवचन होता। इससे सिद्ध है कि एक और दो से भी अधिक ऋषियों पर वेद प्रगट हुए। सनातनधर्मी भी चार ऋषियों पर ही वेदों का प्रकाश

मानते हैं। देखो-निगमागमचन्द्रिका भाग १५ संख्या ७ पृष्ठ १३८ पर "जगदीश्वर ने सृष्टि के आदि में अग्नि वायु सूर्य इन (शिक्षक) ऋषियों द्वारा वेद त्रयी प्रकट की" यह पत्रिका सनातनधर्म महामण्डल काशी की ओर से निकलती है।

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम्। मनु वाक्यपर देखो सनातनी कुल्लूक की टीका—

पूर्वकल्पे ये वेदास्तएव परमात्ममूर्तेर्ब्रह्मणः स्मृत्या-रूढ़ास्तानेव कल्पादौ अग्निवायुरविभ्य आचकर्ष ब्रह्माद्या ऋषि पर्यन्ताः स्मारका नतु कारकाः।

कुल्लूक।

ब्रह्मा से लेकर सम्पूर्ण ऋषि वेदों के द्रष्टा हैं न कि बनाने वाले।

सनातनी सायण क्या कहता है सुनिये—

ईश्वरस्याग्न्यादिप्रेरकत्वेन निर्मितत्वं द्रष्टव्यम्।

सायणभाष्य ऋगुपक्रमाणिका पृष्ठ ४ पंक्ति ६ छापा कलकत्ता।

और भी सनातनी सायण लिखते हैं—

जीवविशेषैरग्निवाय्वादित्यैर्वेदानामुत्पादितत्वात्"

सायण उप० पृष्ठ ४ पं ७ छापा कलकत्ता।

५—आर्यसमाजी सच कहते हैं कि चार वेद हैं जैसे ऊपर सिद्ध किया है।

६—यजुर्वेद में अथर्व का ज़िकर देखो यजुर्वेद अध्याय ३० मं० १५ "यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाम्०" म० ब्लूमफील्ड भी अपने अथर्व की अँगरेजी टीका के उपोद्घात पृष्ठ ३८ पर

मानते हैं कि "भवनांका" स्त्री है और "अथर्वभ्यः" से अथर्व वेद का ग्रहण है। ऋग्वेद में अथर्व का ज़िकर—

सोऽङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद्० ।

१।१००।४ व १।७।८।

इममुत्यथर्ववदग्निं मन्थंति वेधसः ।

ऋग्वेद मं० ६ सूक्त १५। मं० १७।

७—हम ऊपर कह चुके हैं कि जहाँ तीन वेदों का ज़िकर आता है वहाँ तीन विद्या समझो। यह वैदिक शैली (मुहावरा) है।

८—इसका भी उत्तर पूर्व ही आगया है कि तीन विद्याओं से आशय है।

एवं वा अरस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः ॥ शतपथ कां० १४ अ० ५ ॥

९—शतपथकार तीन विद्याओं को चारों वेदों के अन्तर्गत मानते हैं।

१०—तीन वेदों से त्रयीविद्या का आशय है।

११—ठीक है मज़मून ४ हैं परन्तु विद्या तीन ही हैं। विषय (मज़मून) और विद्या इन दोनों शब्दों में अर्थभेद है। मज़मून ये हैं विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान। विद्या यह हैं ज्ञान, कर्म, और उपासना। विज्ञान कहते हैं विशेष ज्ञान को जो ज्ञान से भिन्न नहीं है। इसीलिये चौथा वेद जो तीन वेदों का सार है, अथर्ववेद कहाता है और विज्ञान युक्त है। इन विद्या और विषयों के वर्णन करने की शैली २ भिन्न २ है।

कहीं केवल दो ही विद्यायें कही हैं जैसे "द्वे विद्ये वेदितव्ये" वेदों में बहुत से मजमून हैं और विद्यायें भी बहुत सी हैं परन्तु वे सब मजमून और विद्यायें ४ और तीन जगह इकट्ठी कीगई हैं। सिर्फ विद्या के मफ़हूम को फिर दो जगहों पर इकट्ठा किया १-परा-जिससे ब्रह्म की प्राप्ति हो और दूसरी अपरा-जिससे उससे (ब्रह्मसे) भिन्न पदार्थों का ज्ञान हो। आशय यह हैं कि वेदादि शास्त्रों का पढ़ना मात्र अपरा विद्या कहाती है। और इनको पढ़कर ज्ञान प्राप्त करके योगाभ्यासादि द्वारा ब्रह्मको प्राप्त करलेना परा विद्या की प्राप्ति कहाती है। सार यह है कि केवल प्रकृति ज्ञान को अपरा और ब्रह्मज्ञान को परा कहा गया है।

१२—"छन्दस्" शब्द के अर्थ गायत्री आदि सात छन्द भी हैं और अथर्ववेद के भी हैं। प्रायः 'छन्दाँसि' शब्द जहाँ तीनों वेदों के साथ आता है। वहां पर उसके अर्थ अथर्ववेद के होते हैं वर्ना वेदों में छन्द तो पूर्व ही से होते हैं। देखिये।

सत्या वाचा तेनात्मनेदंधंसर्वमसृजत यदीदं किञ्चर्चो यजूंषि सामानि छन्दांधंसि०" बृहदारण्यकोपनिषद् १।२।५ ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह०" अथर्व अ० ४ सू०८ मं० २४॥

"तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। तस्मात् यजुस्तस्मादजायत„ अथर्व १९ कां। अ० १ सू० ७। १३

छन्दास्यङ्गानि यजूंषि नाम साम ते तनू० यजु० १२।४

वेदादि में अथर्ववेद के लिये छन्दस्, अथर्वाङ्गिरस्, ब्रह्म और मही आदि शब्द आते हैं।

१३—इस सवाल का जवाब ऊपर आचुका है।

१४—मनुष्य के अन्दर प्रकार ज्ञान इस समय मौजूद है। १-नैत्यिक २-नैमित्तिक। नैत्यिक ज्ञान सदैव मनुष्य में रहता है और अन्य प्राणियों के समान उसको उसके सीखने के लिये किसी गुरु की आवश्यकता नहीं होती। जैसे खाना, सोना, दुःख, सुख का अनुभव करना, और सन्तान उत्पन्न करना आदि। परन्तु नैमित्तिक ज्ञान के लिये किसी निमित्त (वसीला) की आवश्यकता है; वह निमित्त सृष्टि के आदि में ईश्वर होता है। इसलिये परमात्मा ने सृष्टि के आदि में वेद भगवान् मनुष्यादि के कल्याण के लिये दिये। यदि विना ज्ञान दाता के ही मनुष्य ज्ञान प्राप्त करलेते तो उस ज्ञान की अनावश्यकता (अदम जरूरत) होती। परमात्मा फ़िज़ूल काम नहीं करते अतः इलहाम की कोई जरूरत नहीं रहती।

१५—सृष्टि के आदि में विधि और निषेध (अमर और नवाही) दोनों को ही बताना ईश्वर का काम है जिसे उसने पूरा किया जब इंसान बिना बताये ही विधि निषेध को जानले तो उसका बताना व्यर्थ है। क्यों जनाब खुदा को क्या ज़रूरत थी जो आदम से कहाकि फुलाँ दरख्त का फल मत खाना? क्या इसको "मस्तॉरा सरोद" नहीं कहते हैं? शायद आप कड़ुवे नतीजे को ही देखकर कहते हैं कि सृष्टि के आदि में ऐसा नहीं होना चाहिये?

१६—सङ्गच्छध्वं संवदध्वम्० ऋ०८।८।४९।२ में "यथापूर्व" शब्द आया है याद रखना चाहिये कि "पूर्व" के अर्थ पहले या क़दीम के ही सिर्फ़ नहीं हैं और भी हैं। स्वामीजी महाराज ने

ऋ० भा० भू० में लिख भी दिये हैं। पूर्वत्व (तकद्दुम) तीन तरह का होता है:—

कालकृत, गुणकृत और पदकृत यानी तकद्दुम बिज्जमां तकद्दुम बिस्सिफात और तकद्दुम बिलरुतबा। सब स्थानों पर इसके अर्थ कालकृतपूर्वता के ही नहीं लिये जाते हैं प्रकरणानुसार (हस्बमौका) तीनों ही अर्थ आते हैं। वेदों में जहाँ २ इस प्रकार पूर्व शब्द आयगा वहाँ २ गुणकृत और पदवीकृत भी होंगे।

वेद भगवान् केवल इसही सृष्टि में नहीं हुए किन्तु 'यथापूर्व-मकल्पयत्' इसवेद मन्त्र के अनुसार हर सृष्टि के आदि में अनादि काल से होते आये हैं इसलिये हर समय का मनुष्य यहाँतककि सृष्टि के आदिऋषि अथवा अमैथुनी सृष्टि के मनुष्य भी अपने से पूर्वों (पहिलीसृष्टिवालों)को कह सकते हैं इसलिये कोई दोष नहीं। जहाँ पूर्व के अर्थ गुणकृत होंगे वहाँपर इसके अर्थ गुरु के होंगे और इसी तरह नूतन (मुआखर)के अर्थ शिष्य के होंगे। कभी२ पूर्व शब्द संज्ञावाचक भी आता है। जैसे 'पूर्वे-षामपि गुरुः' यहाँ 'पूर्वेषां ऋषीणाम्' के अर्थ में है अर्थात् पूर्व ऋषियोंका। इसलिये इन मन्त्रों के अर्थ होंगे-'जैसे गुरुलोगों ने' और 'जैसे विद्वानों ने' इस विषय में सब स्थानों पर ऐसा ही जान लेना चाहिये।

१७—यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋचः साम यजुर्मही।
एकर्षिर्यस्मिन्नार्पितः स्कम्भंतंब्रूहि कतमःस्विदेवसः।
-अथर्व १०।७।१४

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं

दधानाः । यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः । ऋ० मं० १० सू ७१ मं० १

यज्ञेन वाचःपदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् । तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभिसंनवन्ते ॥ ऋ० मं० १० सू० ७१मं० ३ यस्मादचो अपातक्षन्० अथर्व १० । ७ । २० ॥ ये पुरुषेषु ब्रह्मविदुः अथर्व १० । ७ । १७ । यस्मिन्नृचः सामयजूंषि० यजुः० ३४।५ ॥ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे० यजु० ३१ । ७ ॥ वेदोसि येन त्वं देववेद० यजु० २।२१॥ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते०यजु० १२।४ स्तोमश्च यजुश्च ऋक्च सामच बृहच्च० यजु० १८ । २९ ॥ ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह । अथर्व ११।७।२४

इस प्रकार वेदभगवान् स्वयं साक्षी दे रहे हैं कि वेद ईश्वरीयज्ञान हैं।

१८—"यत्र ऋषयः प्रथमजाः०" अथर्व १० । ७।१४ ऋषिषु प्रविष्टाम् ऋ० १०।७१।३ इवालेजात को देखिये कि वेद ऋषियों पर उतरे।

१९—असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनःप्राणमिह नो धेहि भोगम् । ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडयानः स्वस्ति ॥ १ ॥ पुनर्नो असुं पृथिवी

ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् । पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्ति ॥ ऋ०अ० ८ अ० १व० २३ मं० ६ । ७ पुनर्मनः पुनरायुर्म आगन्पुनः प्राणः पुनरात्माम आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगन् । वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् ॥ यजुः अ० ४ मं० १५ ॥ इसही प्रकार देखो अथर्व का० ७ अनु० ६ व० ६७ मं० १ और अथर्व कां ५ । अनु० १ व० १ मं० २ ॥ यजुर्वेद १६ । ४७ ॥

इसके अतिरिक्त और भी बहुत से प्रमाण हैं जो विस्तारभय से नहीं लिखते । ये वेदों के प्रमाण आवागमन सिद्ध करते हैं । संसार में जितनी भी नई व पुरानी भाषायें हैं सबही में आवागमन के लिये शब्द विद्यमान है इससे सिद्ध है कि आवागमन का सिद्धान्त सदैव रहा है । बिना पूर्वजन्म के माने परमेश्वर पर अन्याय दोष लगता है। बिना पूर्वजन्मकृत कर्मों के प्राणियों को सुखी और दुःखी बनाना नितान्त अन्याय है आवागमन मानने वालों का ईश्वर न्यायी और न मानने वालों के मत में परमेश्वर अन्यायी ठहरता है ।

जीव, ईश्वर और प्रकति को अनादि कहने वाला प्रसिद्ध मन्त्रयह है-

द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते । तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति । ऋ० १ । २२ । १६४ । २० ॥

यहाँ पर प्रकृति को वृक्ष के साथ उपमा दी है। वृक्ष शब्द—ओव्रश्च छेदने धातु से बना है जिस प्रकार प्रकृति के कार्य छिन्न भिन्न होते रहते हैं वैसे ही यह वृक्ष रूप जगत् है इसके सत्, रजस, तमस यह फल हैं इसमें जीव फंसता है ब्रह्म नहीं। 'समानं वृक्षम्' से स्पष्ट सिद्ध है कि नित्यता में यह (प्रकृति) ईश्वर के समान है। सयुजा सखाया से यह सिद्ध है कि जीव और ईश्वर का नित्य सम्बन्ध है। इसलिये जीव, ईश्वर और प्रकृति तीनों ही नित्य हैं। वृक्ष शब्द प्रकृति का वाचक और स्थानों पर भी आया है। यथा-

किंस्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः। ऋ० १०। ८१। ४।

यहाँ पर प्रश्न है कि वह कौनसा वृक्ष था जिससे आकाश और पृथिवी आदि को बनाया? अगले मन्त्र में उत्तर है—

"सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः" ऋ० १०। ८१। ५॥ "संबाहुभ्यां=धर्माधर्माभ्याम्" महीधर जी कहते हैं यहाँ 'बाहुभ्याम्' से आशय पूर्वसृष्टि के धर्म अधर्म जो मनुष्यों के थे उनसे है। "पतत्रैः"=परमाणुओं से जगत् की रचना परमात्माने की।

द्वासुपर्णा० मन्त्र के अर्थ श्री स्वा० शङ्कर भी ईश्वर, जीव और प्रकृति के अनादि परक ही करते हैं। यथा—

द्वा द्वौ सुपर्णा सुपर्णौ शोभनपतनौ सुपर्णौ पक्षिसामान्याद्वा सुपर्णौ सयुजा सयुजौ सदैव

सर्वदा युक्तौ सखाया सखायौ समानख्यातौ समानाभिव्यक्तकारणौ एवम्भूतौ सन्तौ समानमविशेषमुपलब्ध्यधिष्ठानतया एकं वृक्षं वृक्षमिवोच्छेदन सामान्यात् शरीरं वृक्षं परिषस्वजाते परिष्वक्तवन्तौ । सुपर्णाविवैकं वृक्षं फलोपभोगार्थम् । अयं हि वृक्ष ऊर्ध्वमूलमवाक् शाखोऽश्वत्थोऽव्यक्त मूलप्रभवः क्षेत्रसंज्ञकः सर्वप्राणि कर्मकलापाश्रयस्तं परिष्वक्तवन्तौ सुपर्णाविवाविद्या कामकर्मवासनाश्रयलिङ्गोपाधि आत्मेश्वरौ । तयोः परिष्वक्तयोरन्यएकः क्षेत्रज्ञो लिङ्गोपाधिर्वृक्षमाश्रितः पिप्पलं कर्मनिष्पन्नं सुखदुःखलक्षणफलं स्वादु अनेक विचित्रवेदनास्वादुरूपं स्वाद्वत्ति भक्षयत्युपभुङ्क्तेऽविवेकतः । अनश्नन्नन्य इतर ईश्वरो नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः सर्वज्ञः सत्वोपाधिरीश्वरो नाश्नाति । प्रेरयिता ह्यसौ उभयोर्भोज्यभोक्त्रोर्नित्य साक्षित्वसत्तामात्रेण स त्वनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति पश्यत्येव केवलम् दर्शनमात्रेण हि तस्य प्रेरयितृत्वं राजवत् ॥ शंकरभाष्य ॥

ऐसा ही आनन्दगिरि टीकाकार भी लिखते हैं—

अव्यक्तमव्याकृतं मूलमुपादानमन्वयि तस्मा-

त् प्रभवतीति अविद्या कामकर्मवासनाश्रय-
लिङ्गमुपाधिर्यस्यात्मनः सजीवः इत्यादि ॥

अतः सारे वैदिकधर्मी इससे प्रकृति जीव और ईश्वर का अनादित्व सिद्ध करते हैं।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तᳬ शरीरम् । यजु० अ० ४० मं० १५ इसपर देखिये स्वामिभाष्य (वायुः) धनंजयादिरूपः (अनिलम्) कारणरूपं-वायुम् (अमृतम्) नाशरहितं कारणम्। अर्थात् वायुका कारण (अव्यक्तप्रकृति) नित्य है ॥

'सूर्याचन्द्रमसौ धाता य यापूर्वमकल्पयत्' 'याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः'। अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां वह्वीः प्रजाः सृजमानाः स्वरूपाः ॥ इत्यादि ॥

२१—सायण वा अन्य किसीने वेदों में कुछ नहीं मिलाया न मिला सकते हैं। वेदों का प्रबन्ध जैसा मज़बूत है वैसा किसी पुस्तक का नहीं सायण ने वेद मन्त्रों के अर्थ करते हुए पौराणिक कथाओं के साथ सङ्गति मिलानी चाही है। अर्थ करने का हर शख़्स को इख़्तयार है और नतीजा भी वह अपनी इच्छा के अनुसार निकाल सकता है, इसको मिलाना नहीं कह सकते। मन्त्रों में कोई न्यूनाधिकता नहीं करसकता। अर्थों में उसकी इच्छा है जैसा चाहे वैसा करे। ब्राह्मण लोग वेद के नाम से चाहे श्लोक बनालें चाहे सूत्र, परन्तु मूल मंत्र में कुछ शामिल नहीं कर सकते न करसके। जैसे फ़ैज़ी को

अधिकार था कि वह "बेनुक़त" कुरान के नामसे तफ़सीर लिखे। वह उसकी बनाई हुई एक स्वतन्त्र पुस्तक थी। कुरान नाम होने पर भी वह असली कुरान (मौजूदा कुरान) से पृथक् ही थी और उसका नाम भी कुरान था, चाहे वह बेनुकत हो या बानुकत हो परन्तु नाम उसका अवश्य कुरान रक्खा गया। इसही तरह वेदों के विषय में समझ लीजिये। किसी की सामर्थ्य नहीं जो वेद भगवान् जैसी पुस्तक की रचना कर सके। कपिल ऋषि कहते हैं कि "मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात्" अर्थात् मुक्त और बद्ध दोनों की योग्यता से बाहर है कि वेद जैसा परिपूर्ण ज्ञान प्रकाशित कर सके। अक्षर २ गिनकर रखदिये गये हैं यथा—सन्मूलो यजुराख्य वेदविटपी जीयात् समाध्यन्दिनिः शाखा यत्र युगेन्दुकाण्डसहिता यत्रास्ति सा संहिता। यत्राग्राब्दिलताविभाङ्कशरशैलाङ्केन्दुभिर्न्यद्दलैः पञ्चद्वीशनभोङ्कवर्ण मधुपैः खाग्न्यर्कॐ गुञ्जितैः॥ इसमें यजुर्वेद के अक्षर और ॐकार तक गिनकर लिख दिये हैं। फिर किसकी शक्ति है जो न्यूनाधिक करसके? ऋग्वेद के विषय में देखिये यूरूपियन लोग क्या लिखते हैं। प्रोफ़ेसर मैक्समूलर लिखते हैं—

The texts of the rodas hone bun handed damen to us with such accaraey that there is hardly a various readiny in the proper seance of the ward, ar oren an un certain accent in the whale of the Rigveda. Origin of religion. Page 131.

दूसरी साक्षी और लीजिये—

Since that time, nearly three thousand years

ago, it (the text) has suffered no changes whatever, with a care such that history of other literatures has nothing similer to compare with it. Kaegis' Rigveda Page 22.

इससे सिद्ध है कि वेदों में किसी स्वर का भी परिवर्त्तन नहीं हुआ।

कभी किसी वेदों के शत्रु ने मिलाने का साहस भी किया तो तत्काल वेदपाठियों ने उसको चोर के समान पकड़ लिया। अब रही अल्लोपनिषत् की बात। उसके विषय में भी सुनिये। यह किसी अर्बी और संस्कृत के पढ़े लिखे की करतूत है। उसने इसमें अल्ला और मुहम्मद शब्द डालकर यह सिद्ध करना चाहा है कि हमारे अल्लाह और मुहम्मद भी वैदिक हैं! परन्तु उसको भी इतना साहस नहीं हुआ कि वह इस अपनी करतूत का नाम वेद रख सके। उसने उसका नाम परक न रखकर उपनिषद्परक अर्थात् "अल्लोपनिषत्" धरा। यदि वेद में कुछ मिलाया जा सकता तो यह वेद का एक अंग बन जाती; परन्तु नहीं बन सकी, कारण कि मानुषी कृति ईश्वरीय ज्ञान में सम्मिलित नहीं हो सकती और यदि वह वेदवत् होजाती तो श्री स्वामी जी महाराज व पूर्व के आचार्य उसको वेद से पृथक् अब तक क्यों रखते?

२२—लोगों ने वेद का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दिया इससे यह मतलब है कि वेद वा उसका ज्ञान लुप्त होगया? आपकी भली समझ है!! यदि अमरीका आदि देशों में जहाँ पर मुसलमान न्यून हैं वा किसी देश में कुछ भी न रहें तो क्या उनसे कुरान का पढ़ना पढ़ाना नहीं छुट जायगा? तो क्या इसका आशय यह होगा कि कुरान संसार से लोप होगया।

हम इस समय प्रतिबन्धी (इलजामी) उत्तर नहीं दे रहे हैं। हम अपना मत वेदों से सिद्ध करते हुए केवल आपके आक्षेपों के उत्तर दे रहे हैं। जिस समय हमारे आक्षेप कुरान पर होंगे तब देखना कि कुरान कितनी बार लोप हुआ है और नयी २ रीति से बनाया गया है। जिस समय बौद्ध धर्म का प्रचार देश में अधिक होगया तो यह बात होनी ही थी कि वेदों के पढ़ने पढ़ाने का प्रचार न्यून होजवे। न्यून होने से यह नहीं कहा जा सकता कि पढ़ने पढ़ाने वाले दोनों का अत्यन्ताभाव (अदम मुतलक) होगया। उस समय भी कुमारिल और शङ्कर जैसे वेदज्ञ विद्यमान थे। इस ही प्रकार और भी बहुत से वेदानुयायी उससमय उपस्थित रहे। श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज प्रगट हुये और वेदों के शत्रुओं के हाथों से उनकी रक्षा की।

२३—वेदों में कोई मन्त्र एक बार से अधिक भी दूसरे स्थानों पर आया है। यजुर्वेद का यह मन्त्र अध्याय ३ में भी आया है। "तन्त्वा शोचिष्ठ" आदि देखो यजुर्वेद ३।२६ और यही मन्त्र २५ वें अध्याय में भी आया है देखो २५।४८।३।२६ वाले मन्त्र ऋषि देवता अन्य हैं और २५।४८ वाले मन्त्र के और हैं। महीधर ने 'अग्ने त्वं नो अन्तम०" ३।२५ के आरम्भ में "ग्नस्रो द्विपदा विराज आग्नेय्यः" लिखा है अर्थात् अगले चार मन्त्रों का अग्नि देवता है। स्वामी जी महाराज भी इसके अग्नि देवता मानते हैं। स्वामी जी और महीधर दोनों ही इसका ऋषि सुबन्धु मानते हैं। परन्तु यही मन्त्र पुनः अध्याय २५ में ४८ वाँ मन्त्र स्वामी जी ने लिखा है। इसका ऋषि गोतम है विद्वान् देवता है भुरिग्बृहती छन्द हैं। ऋषि और देवता भेद से स्वामी जी ने इसको पुनः अध्याय २५ का ४८ वाँ मन्त्र लिखा है।

२४—दिन और रात स्वयं ईश्वर की बगलें नहीं हैं किन्तु "बगल के समान हैं" ऐसा ऋ० वे० भा० भू० में सृष्टिविद्या प्रकरण में पृष्ठ १३४ पर "श्रीश्चते०" मन्त्र का भाष्य करते हुए श्री स्वामी जी महाराज लिखते हैं। "तथाहोरात्रे द्वे तव (पार्श्वे) पार्श्ववत्स्तः।" भाषा में भी इसके अर्थ ऐसे ही लिखे हैं। "जो दिन और रात्रि ये दोनों बगल के समान हैं।" आक्षेप सच्चाई के साथ करना चाहिये। वेदों के अलङ्कारों को समझना बड़ा कठिन है। जब मनुष्यकृत काव्यालङ्कार समझने में बुद्धि चकरा जाती है तो वेद भगवान् के अलङ्कारों को, जो गुरुवत् परमात्मा ही ने मनुष्यों को सिखाये हैं, सहज में कैसे समझे जा सकते हैं? और तिस पर भी एक विपक्षी मुसलमान से! जिनके यहाँ अक्ल को कोई दखल नहीं। सुनिये पुरुष सूक्त के पहिले चार मन्त्रों में परमात्मा की महिमा वर्णन की है। पाँचवे में बताया कि ऐसे पूर्वोक्त महान् परमात्मा से यह प्राकृतिक "विराट्" उत्पन्न हुआ। अर्थात् प्रकृति जो नित्य है और कारण रूप है उससे इस जगत् की उत्पत्ति हुई। यह सारा जगत् परमात्मा की महिमा को दर्शा रहा है। यही परमात्मा की सेवा है। जैसे जीवात्मा के अधिकार में उसका शरीर होता है और उस देह के संयोग से उसके हाथ पैर बगल मुख नेत्र आदि कहाते हैं, जो वास्तव में जीवात्मा के नहीं होते, वैसे ही परमात्मा के अधिकार में सारा जगत् होने से अलङ्कार से (इस्तआरा से) उस परमात्मा के बगल आदि वर्णन किये हैं वास्तव में परमात्मा के अपने हाथ पैर और बगल नहीं होते। समय की दो बगले (पहलू) होती हैं एक दहनी अर्थात्, दिन, दूसरी बाईं अर्थात् रात। समय यहो दोनों करवटें बदलता रहता है। उत्पत्ति और प्रलय ये भी

रात दिन के समान दो करवटें (बग़लें) हैं जिनके द्वारा इस जगत् में अनादि और अनन्त क्रिया होती है। आगे होठ और मुख का आशय भी पूर्ववत् समझ लीजिये। यह सब ही अलङ्कार रूप से वर्णन किये गये हैं।

२५—"चुर, स्तेय और मुष्" यह तीन धातु एकही अर्थ रखती हैं।

चुर = प्रच्छन्नापहरणे = बिना जनाये पृथक् कर देना। **स्तेय** भी इसी अर्थ में है। **मुष् = खण्डने हृते वञ्चिते**। इन सब धातुओं के अर्थ बिना दूसरे को जनाये उसकी वस्तु उससे पृथक् करदेने के अर्थ में हैं। देखो शब्द चिन्तामणि कोष और कोषों में भी ऐसे ही अर्थ हैं। परमात्मा पापी मनुष्यों के धनादि को उन पापियों के बिनाजाने ही हरलेता है, खण्डित करदेता है अथवा उन धनादिकों से उस पापी को वञ्चित करदेता है। इसलिये वेद भगवान् आज्ञा देते हैं कि तुम्हारे प्रिय धन पात्रादि तुम से पृथक् न हों ऐसे कर्म करो। दूसरी भाषाओं में भी ऐसे शब्द विद्यमान हैं जो ईश्वर के लिये आये हैं परन्तु लोक में वह बुरे अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। वे सारे शब्द हम कुरान पर आक्षेप के समय लिखेंगे। हमारे ऐसे कर्म भी नहों जो संसारी मनुष्य हमारे प्रिय धनपात्रों को हमसे बिनाजाने पृथक् करसकें। यही इन मन्त्रों का आशय है।

२६—वेद भगवान् ने विद्या की बृद्धि ईश्वर में नहीं बताई है किन्तु अध्यापक (मुअल्लम) में बताई है देखिये—

"अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूरियर्ठ सा मयि०" यजु० अ० ५ मं० ६। नैवं हे अध्यापक त्वमहं चैतौ विदित्वा परस्परं धार्मिकौ विद्वांसौ

मेवेच यतो नाचावयोर्विद्याद्दृद्धिः सततं भवेत।
इसमें अध्यापक और शिष्य की विद्यावृद्धि कही है न कि ईश्वर की। स्वामी जी लिखित संस्कृत भाष्य की देशभाषा करते समय पण्डितों से "अध्यापक शब्द लिखने से छूट गया है, यही कारण है कि जो संस्कृत नहीं जानते उनको भ्रम होजाता है।

२७– द्वे सृती अशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्। ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरञ्च ॥ यजुः १९। ४७

इस मन्त्र का अर्थ करते हुए स्वामी जी लिखते हैं (अशृणवम्) श्रुतवानस्मि। दो प्रकार के जन्म को सुनता हूं; इस मन्त्र में "अहम्" वा "मैं" ईश्वर के लिये नहीं है अर्थात् ईश्वर नहीं कहता कि मैं सुनता हूं"; परन्तु गुरु कहता है कि मैं सुनता हूं। वेदों में जहां २ सर्वनाम आते हैं वे उन २ की तरफ से होते हैं जो उस कथन को कहने के योग्य होते हैं। वेदों में इस प्रकार का उपदेश है कि मानों परमात्मा उन्हीं की जिव्हा से कहारहा है। इस मन्त्र से पहिला मन्त्र देखिये "ये समानाः समनसः" इस मन्त्र में "श्रीर्मयि कल्पताम्" आया है जिसके अर्थ हैं लक्ष्मी मेरे समीप सौवर्ष तक रहे। तो क्या "मयि" अस्मद् सर्वनाम परमात्मा के लिये है? कदापि नहीं, किन्तु पुत्र कह रहा है कि पिता आदि की लक्ष्मी सौ वर्ष तक-मेरी आयु पर्यन्त रहे। ऋग्वेद में "गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मयापत्या" अर्थात् तेरे सौभाग्य के लिये तेरा हाथ पकड़ता हूं। तो क्या यहां पर "मैं" शब्द परमात्मा केलिये है? कदापि नहीं, किन्तु पति के लिये है। पति विवाह समय अपनी पत्नी से कहता है कि मैं तेरा हाथ पकड़ता हूं। इसही प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये।

२८—यजुर्वेद अध्याय ६ मं० १४ में कदापि नहीं है कि ईश्वर कष्ट उठाता है।

२९—"यतो यतः समीहसे" यजु० ३६। २२ में हरकत करने का अर्थ हरकत देना है। देखो भावार्थ इसी मन्त्र का "हे परमेश्वर! भवान् यतः सर्वाभिव्याप्तोऽस्ति०" हे परमात्मन्! चूंकि आप सर्वव्यापक हैं। इससे सिद्ध है कि इस मन्त्रमें परमेश्वर को सर्वव्यापक कहा है और सर्वव्यापक में गति (हरकत) नहीं होती अतः यही अर्थ है कि जहां २ आप हरकत देते हैं। अन्यस्थानों पर भी ईश्वर गति न करनेवालाही बताया गया है जैसे।

"अनेजदेकं मनसोजवीयो ०" यजु० ४०। ५

(अनेजत्) न एजते कम्पते तदचलत् स्वावस्थायाश्च्युतिः कंपनं तद्रहितम्

एजृ कंपने धातु है। हरकत अथवा कंपन से वह बरी है यह मतलब होता है। और भी सहस्रों ऐसे प्रमाण हैं जिससे सिद्ध है कि परमात्मा कूटस्थ अविचालीहै।

३०—जो मनुष्य निर्धन हो उसको उचित है कि वह केवल समिधाओं से ही हवन करे जिससे उसको कर्मकाण्ड विस्मृत (भूलजाना) न होजाय देखो मनु की आज्ञा—

दूरादाहृत्य समिधः संनिदध्याद् विहायसि।
सायं प्रातश्च जुहुयात् ताभिरग्निमतन्द्रितः॥
मनु २। १८६॥

इसमें बतलाया है कि जैसे ब्रह्मचारी निर्धन होने से घी वगैरह से हवन नहीं करता सिर्फ समिधाओं से करता है। देखो टीका पं० भीमसेनजी। इस ही तरह नादार गृहस्थी।

३१—जिस कर्म के जब अधिकारी नहीं रहते हैं वह नाक़ाबिल अमल मालूम होने लगता है। नियोग की शर्तों को पूरा करने वाले जिस वक्त पैदा होजावेंगे तब वह क़ाबिले अमल होजावेगा। नियोग केलिये यह आवश्यक है कि स्त्री पुरुष दोनों पूर्ण इन्द्रिय जीत हों। इस समय दूसरी जातियों के कुसङ्ग से आर्य जाति में पूर्ववत् गुण नहीं रहे; रहते भी कैसे जबकि वह जातियें भारतवर्ष में आगईं जिनके पूर्वजों ने ब्रह्मचर्य को जाना ही नहीं। जो विषयासक्ति (शहवतपरस्ती) की साक्षात् मूर्ति (मुजस्सिम पुतले) थे। उनकी पुस्तकों ने खुली आज्ञा दी कि जो इसमें कसर बाक़ी रक्खेगा वह धर्मात्मा नहीं!! यदि नियोग करने वालों की फ़हरिस्त चाहिये तो महाभारत का इतिहास पढ़ जाइये। सब कुछ मिल जायगा। नियोग आपद्धर्म (मुसीबत का धर्म) है जैसे सुअर मुसलमानों के लिये। सुअर खाने वालों की फहरिस्त आप भी दें।

३२—तीसरे नियुक्तपति को "अग्नि" इसलिए कहा कि जिसका नियोग पहले दो पुरुषों से होचुका, उसके साथ कोई हरारत वाला ही करेगा। मानलीजिये कि कोई मनुष्य अत्यन्त ग़रीब है और इतना ग़रीब है कि बक़ौल शख्से पेट से पत्थर बांधे फिरता है ऐसे को कौन अपनी कुमारी लड़की दे देगा और ख़ासकर उस हालत में कि कुछ पढ़ा लिखा भी न हो, जिससे कुछ माकूल गुजारह कर सके ऐसा इंसान चाहे स्वयं २५ वर्ष का पट्ठा क्यों न हो वह तो भूखे की तरह सूखी रोटी के मानिन्द ४० वर्ष की भोगी लुगाई को ही हूर समझ कर अपना लेगा बक़ौल सादी शीराज़ी—"कोफ़्तारा नानजवीं कोफ़्ताअन्द"। ऐसे को लोग कहेंगे कि यह मुजस्सिम हरारत है जो खुद २५ वर्ष का होकर ४० वर्ष की से औलाद पैदा

करने को तैयार होगया !! तीसरे से आगे वालों को मामूली इन्सान कहा जिनमें हरारत के अतिरिक्त और भी थोड़ी बहुत शरीरी कमजोरियां रहती हैं। इसलिए ये नाम ठीक ही हैं।

३३—वेदों में गम्या अगम्या का विधान विद्यमान है, यदि किसी को ज्ञात न हो तो वेदों का क्या दोष ? देखिये—

नवा उत तन्वा तन्वं ? सपपृच्या पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्। ऋ० मं० १० सू० १० मं० १२ ॥

यजुर्वेद अध्याय ११ मन्त्र ७१ में बता दिया है कि अपने कुल से (गोत्र से) भिन्न कन्या हो। यथा—'यत्राहमस्मि तां २॥ अव" स्वामीजी महाराज लिखते हैं—"यत्र कुले अहमस्मि", अर्थात् जिस गोत्र में मैं हूं इससे सिद्ध है कि कन्या और पति के गोत्र पृथक् २ हैं। बहन के लिये "जामि" शब्द है जिसके अर्थ हैं जामये भगिन्यै। जामिरन्येऽस्याँ जनयति जाममपत्यम् निरुक्त। ३। ६। यजु० १४। २ में "कुलायिनी" शब्द बताता है कि वह किसी दूसरे उत्तम कुल की है। मातादि अपने कुल में होती है इससे उनका निषेध है। "जामिः प्रदीयते परस्मै" निरुक्त ३। ६ ॥

३४—माबहन से विवाह करना पुराने अरब वालों से वाममार्गियोंने सीख लिया होगा। हमारा उनसे कोई मतलब नहीं। वाद विवाद इस समय आर्यों से है नकि वाममार्गियोंसे। वाममार्गियों के मतका आर्यसमाज उत्तरदाता नहीं।

३५—स्वामी जी कन्या से विवाह बताते नहीं किन्तु मिसाल देते हैं। जैसे सूर्य पिताके समान है और दो कन्यायें प्रभा और उषा। उषा जो उससूर्य की कन्या के समान है उसमें अपनी किरण रूप वीर्य को स्थापन करने के दिन रूप पुत्र को

उत्पन्न करता है। जल से यह पृथिवी उत्पन्न हुई है इसलिये, जल पिताके समान है और पृथिवी पुत्री के समान है अतः जल वीर्य रूप होकर पृथिवी में औषध आदि रूप सन्तान उत्पन्न करता है। इसमें मनुष्यों के लिये ऐसा करने की आज्ञा कहां है ?

३६—स्वामी जी लिखते हैं कि "जिसके पीले बिल्ली के सदृश नेत्र नहीं" पीले नेत्र कमलवाओ (यरकां) रोग में होते हैं जिसकी वजह जिगर का खराब होजाना है। अगर रोगिणी कन्याके साथ विवाह का निषेध किया तो क्या बुरा किया ? अनमेल विवाहसे नसल भी बिगड़ती है

३७—आर्यसमाज में ऐसे निषिद्ध नामही नहीं रखे जाते। अगर किसी का पुराना नाम रक्खा हुआ हो तो वह बदला जा-सकता है। एक बात औरभी याद रखिये पीली आंख वाली या बुरे नाम वाली 'हराम" नहीं है। केवल इसलिये उसके साथ विवाह करने की अहतियात बताई है कि बुरे नाम रखना लोग छोड़ दें। इसीलिये आर्यसमाज में ऐसे नाम नहीं रक्खे-जाते। जिसको यरकाँ की बीमारी हो उससे नहीं २ करतें।

३८—जैसी गन्दी सत्ता वैसे ऊत पुजारी" की मसल मशहूर है। वैसाहीकोई उससे करलेगा। यह तमाम दुनिया का कायदा है कि सबही अच्छी खूबसूरत स्त्री से विवाह करना चाहते हैं। इसमें किसी खास कौमसे क्या सम्बन्ध ? क्या आप किसी लूली लॅगडी अन्धी नकटी कोढ़नसे शादी बशर्ते कि आपको कोई अच्छी नहीं मिले, करलेंगे? जनाब! जैसेको तैसे मिल ही जाया करते हैं।

३९—मुर्दा जलाने का इन्तज़ाम स्वामी जी ने बता दिया है। जिन को बाइस गज़ कफ़न नहीं मिलता आखिर वह भी तो दफ़न करते ही हैं।

४०—"नाक़ाबिल अमल" कहदेना और बात है। परन्तु मन्त्रों के गूढ़रहस्य को समझकर तदनुकूल चलना और बात है जो आपकी समझ में नहीं आती उसको आप "नाकाबिले अमल" कहदेते हैं! सुनिये इसका आशय और फिर नाकाबिले अमल न कहिये। जब किसीसे कोई संबन्ध किया जाताहै तो इतनी बातें पृछ्य (दर्याफ़्तलब) होती हैं-१- आपकी सुकूनत कहाँ है? २-क्या पेशा करते हो? ३-तुह्मारी जायदाद क्या२ और कहाँ२ हैं? ४-वारिद हाल कहां हो? तुम पूर्व विवाहित तो नहीं हो? ६-तुम में से किसीने किसीसे नियोग तो नहीं किया है? यह सब बाते हैं जो विवाह करने वालों को स्वयं वा उनके वारिसों को बूझलेनी चाहिये। कहिये इसमें कौनसी बात नाक़ाबिले अमल है?

४१—क्या हर समय का आशय आप यह समझ रहे हैं कि दस्त और लघुशङ्का शौच आदिको जावे तो भी अपने साथ रक्खे? यदि ऐसा समझ है तो बलिहारी! स्वामी जी के कहने का आशय यह है कि यदि परदेश में बहुत काल के लिये जावे तो स्त्री को अपने साथ रक्खे, नहीं तो पीछे स्त्री को विविध प्रकार के कष्ट होने सम्भव हैं। सो ऐसा आर्य भी करते हैं और अन्य लोग भी इस अच्छी शिक्षा से लाभ उठाते हैं।

४२—"वाचन्ते शुन्धामि" इस मन्त्र में कोई फ़ोहश बयानी नहीं। गुरु को उचित है कि वह सारी ही स्वच्छता की बातें शिष्य को सिखावे। मनुजी कहते हैं "शिक्षयेच्छौचमादितः" आरम्भ में शिष्य को शौचकर्म सिखावे। इन्द्रियों का शौचकर्म दो प्रकार का है-एक तो स्वयं इन्द्रिय को जल आदि से पवित्र रखना; दूसरे उस इन्द्रिय से कोई अशुभ काम

न करना । वेद भगवान् कहते हैं-'भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम" यह कान को पवित्रता है। 'भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्रा."यह आँख की पवित्रता है। आगे बतलाया कि "स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः" । इसमें सारे अङ्ग प्रत्यङ्गों की शुद्धि का उपदेश किया है। आँख की शुद्धि है किसी पर कुदृष्टि न डालना। कान की शुद्धि है अभद्र न सुनना। वाणी की शुद्धि है सत्य और मिष्टभाषी होना। नाककी शुद्धि है दुर्गन्ध से बचना। मेढ़ (लिङ्ग) की शुद्धि हैं व्यभिचार न करना, व्यर्थ वीर्य को स्खलित न करना आदि। गुदाकी शुद्धि है विधिपूर्वक मल त्यागना। मल त्यागने की विधि मनु महाराज इस प्रकार बताते हैं।

मलमूत्र त्यागने की विधि।

न मूत्रं पथि कुर्वीत न भस्मनि न गोव्रजे ॥४५॥ न फालकृष्टे न जले न चित्यां न च पर्वते। नजीर्णे देवायतने न वल्मीके कदाचन ॥४६॥ न ससत्वेषु गर्तेषु न गच्छन्नापि च स्थितः । न नदीतीरमासाद्य न च पर्वतमस्तके ॥ ४७ ॥ वाय्वग्निविप्रमादित्यमपः पश्यंस्तथैव गाः। न कदाचन कुर्वीत विण्मूत्रस्य विसर्जनम् ॥ ४८ ॥ तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना। नियम्य प्रयतो वाचं संवीताङ्गोऽवगुण्ठितः ॥४९॥ मूत्रोच्चारसमुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ् मुखः। दक्षिणाभिमुखो रात्रौ संध्ययोश्च यथा दिवा ॥५०॥ छायायामन्धकारे वा रात्रावहनि वा

द्विजः । यथासुखमुखः कुर्यात् प्राणबाधा भयेषु च ॥ ५१ ॥ प्रत्याग्निंप्रतिसूर्यंञ्च प्रतिसोमोदकाद्विजात् । प्रतिगां प्रति वातंच प्रज्ञा नश्यति मेहतः ॥५२॥ मनु अध्याय ॥४॥

यह मलमूत्रके नियम हैं। इन नियमों को गुरु सिखाता है। मानो वह इन्द्रियों का उचित प्रयोग सिखाकर सब इन्द्रियों को शुद्ध करता है। इसही लिये स्वामी जी लिखते हैं "विविधशिक्षाभिः" वे सारी शिक्षायें मनुजी महाराज ने वर्णन करदी हैं।

४३—गृहस्थियों को बतलाया है कि तुम प्रजाओं को ऐसे बढ़ाओ जैसे बैल बढ़ाता है। इसका आशय यह है कि बैल गर्भिणी गौ के साथ संभोग नहीं करता। तुम भी अपनी गर्भिणी स्त्री से भोग मत करो। बैल की ओर संकेत इसलिये किया कि गर्भिणी से भोग न करने वाले पशुओं मेंसे बैलही मनुष्यों के अधिक समीप रहता है; इसलिये उसके दृष्टान्त से हर मनुष्य अच्छे प्रकार इस नियम को समझ सकता है। जितना मनुष्यों को काम गोजाति से पड़ता है उतना अन्य से नहीं। ऋतु समय में भी नाभि से ऊपर और घुटुओं से नीचे भोगकी शिक्षाप्राप्त किये हुए इन बातों को क्या समझें?

४४—सामान्यतया सबको और विशेषतया ब्रह्मचारी और राजाको दिन में सोना मना है। इससे ब्रह्मचारी और राजाके पढ़ने और राज्य के प्रबन्ध में गड़बड़ होनी सम्भव है। "दिवा मास्वाप्सीः" "दिवा जागरणाय रात्रिः स्वप्नाय" यह आज्ञायें सब मनुष्यों के लिये हैं। जो मनुष्य इनसे लाभ उठाना नहीं चाहता न उठावे, उसकी इच्छा। वैद्य, डाक्टर और

हकीम, किन्हीं विशेष अवस्थाओं को छोड़कर, सबही दिनमें सोने का निषेध करते हैं। स्वामीजी महाराज ने निषेध कर दिया तो भला ही किया।

४५—गाना दो प्रकार का है—एक हरिभक्ति का और दूसरा व्यसन का। जिस गाने से परमात्मा की भक्ति की वृद्धि हो, उस को गाना अच्छा है; वा जो गान विद्यारूप है उसको सीखे और गावे। परन्तु व्यसन (लतवा धत्त) में न पड़े। नगरकीर्तन में परमात्मा की भक्ति दर्शाई जाती है इसीलिये कोई दोष नहीं ब्रह्मचारी सामवेद का गान सीख सकता है और गा सकता है। शौकिया गाना उसको मना है जनाब लखनऊ के वाजिद अलीशाह नवाब किस बातमें बिगड़े? यह देखकर भी अक्ल नहीं आती अफ़सोस !!!

४६—मनुमहाराज कहते हैं कि "मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत् । बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति" ॥ २ । २१५ ॥

इसमें बतलाया है कि मा बहन बेटी के साथभी एकान्त में न बैठे। क्योंकि बड़े २ विद्वानों को इन्द्रियां अपनी ओर खैंच लेती हैं। यहाँपर परदे की कोई चर्चा नहीं है हां स्त्रियों के साथ एकान्त में न बैठे। परदे का हाल न बूझिये। हमने वह सब किताबें देखी हैं जिनमें लिखा है कि रूम और दिल्ली आगरे के महलों में परदों के अन्दर क्या २ गुल खिले। यहीं तक नहीं इससे बहुत आगे की परदेवालियों की करतूतें हमारे सामने हैं। वक्त आयगा सब ज़ाहिर करेंगे; सब्र रखिये। स्त्रियों का परदा उनकी लज्जा, शील और पतिव्रतधर्म आदि हैं न कि एयर टाइट डोलियां या नक़ाब और बुर्क़ा। इनमें रहने वाली तो हमने बहुत देखी और सुनी हैं। परदा कैसे चला आगे

यह भी आपको बतादेंगे। हिन्दोस्तान में भी सरहद्दी मुसलमानों में परदा नहीं परन्तु वहां व्यभिचार बिल्कुल नहीं। बहुत सी और भी कौमें हैं जैसे घांसी वगैरह उनमें परदे के न होने से व्यभिचार नहीं। लखनऊ रामपुर वगैरह परदे की खान हैं; वहाँ जाकर असिल हकीकत देखो।

४७--वेदों को देखे सुनेही बिना आप ऐसे आक्षेप कर दिया करते हैं। वेदों में दायभाग मौजूद है देखिये--

'शासद् वह्निर्दुहितु नर्प्त्यंगाद्विद्वां ऋतस्य दीधितिं सपर्यन्। पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्जन्त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे। ऋ० ३।३।५।१॥

इस पर निरुक्तकार लिखते हैं:--

अविशेषेण मिथुनाः पुत्रा दायादा इति॥ निरुक्त ३।४॥ तस्मात् पुमान्दायादोऽदायादा स्त्रीति विज्ञायते। निरुक्त ३।४॥

नजामये तान्वो ऋक्थ मारैक्चकार गर्भं सवितुर्निधानम्। यदी मातरो जनयन्त वह्निमन्यः कर्त्ता सुकृतोरन्य ऋन्धन्। ऋ०

इस पर निरुक्तकार लिखते हैं:--

यदि मातरोऽजनयन्त वह्निम् पुत्रमवह्निञ्च स्त्रियम् अन्यतर सन्तान कर्त्ता भवति पुमान्दायादः अन्यतरो अर्चयित्वा जामिः प्रदीयते परस्मै॥ निरुक्त ३।६॥

आसीनासोऽअरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय। पुत्रेभ्यः पितर स्तस्य वस्वः प्रयच्छततऽइ-होर्जंदधात। यजु १६।६३ येसमानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाथं श्रीर्मयि कल्पतामस्मि-ल्लोके शतथंसमाः॥ यजुः १६।४६

ये ऊपर लिखे मन्त्र दिग् दर्शनवत् लिखे जाते हैं। इसही प्रकार के और भी बहुत से मन्त्र हैं जो दायभाग (वसीअत) को बताते हैं।

४८—प्रकृति और जीवके नित्य होने से ईश्वर मुहताज रहता है, यह बात समझ में नहीं आती! यह किसतरह? आप फ़रमाते हैं ईश्वर में इहतियाज लाज़िम आती है। पहले यह सोचना चाहिये कि इहतयाज (दीनता) कहांपर पाई जाती है। जबकि हम तीनों पदार्थों को नित्य मानते हैं तो सर्वत्र प्राप्त पदार्थ परमात्मा में दीनता कैसी? हाँ दीनता वहां पाई जाती है जहाँ उसके पास कुछ भी नहो। आप इस विषय में दुनिया को मन्तिकी उलझनों में डालना चाहते हैं, परन्तु ऐसा हो नहीं सकता। वह उलझन क्या है सो हम पाठकों को बताते हैं। "फ़र्ज करो एक कुम्हार है; वह घड़ा बनाना चाहता है। उसको घड़ा बनाने के लिये मट्टी की ज़रूरत है। जबकि उसके पास मट्टी नहीं है वह मट्टीका मुहताज है, अब वह घड़ा नहीं बना सकता। अगर उस कुम्हार में इतनी कुद्रत है कि वह मट्टी भी खुद पैदा करसके तो वह मुहताज नहीं, क्योंकि उस में मट्टी पैदा करने की शक्ति मौजूद है और वह पैदा करलेता है और घड़ा बना देता है। बस इसही तरह ख़ुदा भी दुनिया बनाने के लिये अपने पास माद्दा और

रूह क़दीम से नहीं रखता परन्तु वह इनदोनों को पैदा करने की ताकत रखता है, इसलिये इहतयाज लाज़िम नहीं आती।" यह है जनाब का भक्ति की वर्षा। वहम इस उलझन को सुलझाते है- दुनिया में दोलफ़्ज है एक ग़नी और दूसरा मुहताज। ग़नी की तारीफ़ यह है कि जिस के पास सब कुछ हो। और मुहताज उसे कहते हैं कि जिसके पास कुछ भी नहो यह अमर मुसल्लमा फ़रीक़ैन (उभयपक्ष सम्मत) है। अब एक तो कुरानी खुदा है जिसके पास कुछ भी नहीं है; दूसरे वैदिक ईश्वर है जिसके पास सब कुछ है। इन दोनों में मुहताज (दीन) किसको कहना चाहिये? उसही को जिसके पास कुछ नहो और गनी वह है जिसके पास सब कुछ है। अब सिर्फ यह सवाल है कि वह इसलिये मुहताज नहीं है कि वह पैदा कर सकता है। नेस्ती से हस्ती आना यह उभयपक्षसम्मत नहीं है। पहिले फ़रीक़सानी (प्रतिपक्षी) को समझा लीजिये कि हस्ती से नेस्ती या नेस्ती से हस्ती (भाव से अभाव वा अभाव से भाव) होभी सकती है। यह बात दोनों पक्ष मानते हैं कि निधन को मुहताज और धन वाले को धनी कहते हैं लेकिन उलटी बात कहते हैं कि जिसके पास सब कुछ हो वहतो मुहताज होगया परन्तु जिस के पास कुछ नहीं वह ग़नी कहावे। अब हम और बारीकी के अन्दर, बतरीक़ सवाल जवाब के, घुसते हैं और इस मसले को हल करते हैं।

सवाल—किताब का छपना छापे पर मौक़ूफ़ है इसही तरह जहाँ पर मौक़ूफ़ और मौक़ूफ़ अलैह (सापेक्ष) सम्बन्ध होगा वहां पर इहतयाज़ लाज़िम होगा।

जवाब—बेशक किताब का छपना छापेखाने पर मौकूफ़ है, परन्तु छापेखाना भी नित्य हो तबतो कोई दोष न हीं आता।

सवाल—यहाँ पर सवाल सिर्फ किताब और छापे काही नहीं है किन्तु वह मनुष्य जो किताब छापता है वह तो छापे का मुहताज है। इसलिये छापने वाले में इहतयाज का होना लाज़िम है।

जवाब—प्रत्येक कार्य (मालूल) के लिये कारण की आवश्यकता होती है। बिना कारण के कार्य नहीं होता। सूर्यचन्द्र घटपटादि सब कार्य हैं तो कारण से ही कार्य को उत्पन्न करना इहतयाज नहीं है।

सवाल—हमतो इसको भी इहतयाज मानते हैं कि वह बिना कारण के कार्य को न पैदा करसके।

जवाब—सारे ही संसार का कारण प्रकृति है; फिरप्रकृति का ईश्वर को कौनसा कारण मानोगे निमित्त अथवा उपादान? यदि उपादान कारण मानोगे तो कारण के गुण कार्य में होने चाहियें सो दीखते नहीं। यदि निमित्त (इल्लते फाइली) मानते हो तो बिना इल्लते माद्दी के कोई चीज़ पैदा नहीं होती। इसमें दृष्टान्त का अभाव है।

सवाल—दृष्टान्त का अभाव नहीं है। जैसे मट्टी में घड़े की शक्ल का अभाव है परन्तु कुम्हार के दिल में उसकी शक्ल मौजूद होने से वह कुम्हार उस घड़े को बनादेता है। जैसे शक्ल अदम से वजूद में आई है वैसे ही माद्दह अदम से वजूद में आया है। वह ईश्वर के इल्म में था।

जुवाव--हम मट्टी में घटरूप का सद्भाव मानते हैं उत्पत्ति नहीं। घट में आकृतिका उद्भव मानते हैं न कि उत्पत्ति। उत्पत्ति मानने से तुम्हारे पक्ष की हानि है, क्योंकि तुम्हारे मत में ईश्वर से भिन्न और कोई अदम से वजूद में लानेवाला नहीं है इसही लिये सिर्फ ईश्वर को ही वाजिबुलवजूद कहते हो; यही ईश्वर का ईश्वरत्व है। यदि ईश्वर से भिन्न भी अभाव से भाव उत्पन्न करनेवाले होंगे तो असंख्य वाजिबुल वजूद होजायेंगे।

४६—जिस प्रकार यह कहना कि "सच्चे हाकिम की तरह ईश्वर न्यायकारी है" तो इसमें क्या हानि होगई? केवल सच्चे न्याय अंश से दृष्टांत देने में कोई दोष नहीं आता। हां सर्वांश में तत्तुल्य कहते तो अवश्य दोष था। इसी प्रकार रचनामात्र अंश में कुम्हार का दृष्टान्त देने में कोई दोष नहीं।

५०—जीवात्मा किसी के मा बहन नहीं होते हैं। आत्मा और शरीर सहित मा बहन कहाते हैं। जीवात्मा के नित्य होने से उनका ही पुनर्जन्म होता है। शरीर अनित्य है वह नष्ट होजाते हैं। यथा "भस्मान्तꣳशरीरम्" यजु ४०। अगर कोई मनुष्य एक मकान को छोड़कर दूसरे मकान में चला जाय तो क्या वह मय मकान के चला गया, या मकान के असरात को साथ लेगया? जीवात्मा निर्लेप होने से किसी असर को अपने अन्दर शामिल नहीं करता। आपके मिर्जा साहब ने हज़रत मसीह की गद्दी संभाली है। आप उनके चेले हैं तो आप ईसाई होगये-याद रखिये!

५१—इंसान की उम्र तवई सौ साल की है। आगे पीछे मरना उसके कर्मों का कारण है। नियम और सदाचार से

रहने वाले अब भी और उससे अधिक वर्ष जीते हैं। सैकड़ों नहीं लाखों मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो मौजूदा जमाने में सौ और उससे जियादा उम्र के हैं।

५२—योगी लोग योगाभ्यास से चार सौ वर्ष की आयु प्राप्त करते हैं। वे लोग बहुत कम संसारी पुरुषों से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे संसारी पुरुष उनको नहीं देख सकते। जरा हिमालय पहाड़ की गुफाओं में चक्कर लगाइये सब कुछ देखने को मिल जायगा। स्वर्गवासी स्वामी दर्शनानन्द जी मेवाड़ के एक गहन वन में ३०० वर्ष से अधिक आयु वाले योगी के दर्शन और वार्तालाप भी उनसे करआये थे।

५३—हज़रत मसीह इब्ने मरियम पेश्तर ही कह गये हैं कि दुनिया में बहुत से अपने को पैगम्बर कहते आवेंगे। अकसर ऐसा होता ही है कि शुहरत पसन्द लोगों की ज़बान में पानी भर ही आता है कि जब वह पहिले बुजुर्गों की शुहरत सुनते हैं इसी तरह पर आपके मिर्जा साहब के मुह में पानी भर आया। जनाब! एक कलीमेखुदा मूसा साहब थे उनको ही कलमत को अज़रुए अक्ल साबित करना दुनिया को मुश्किल पड़ रहा है; दूसरे आप साहबानने ताज़े कलीमेखुदा तैयार कर दिये। भाई साहब! क्यों मज़हबी दुनियां पर बार २ इतना बोझ इन कलीमेखुदाओं का लादे जाते हो। मुसलमानों में पेश्तर से ही बहुतेरे फिरके हैं।

५४—दुनिया में अकसर ऐसे इंसान होते हैं कि जो पेश्तर किसी न किसी की बाबत मौत की पेशीनगोई करते हैं और फिर उस पेशीनगोई को पूरा करने के लिये खुद ही उसकी मौत के सामान मुहैया करते हैं। ऐसे बदकारों की न अब कमी है न पेश्तर थी। टाड साहब अपनी मशहूर तवारीख राज-

स्थान में लिखते हैं कि मैं एक रियासत में गया। वहां का राजा बीमार था। दरयाफ़ करने पर मालूम हुआ कि इस की मौतकी पेशीनगोई किसी नजूमी (ज्योतिषी) ने कर रक्खी है उस ही के गम में राजा बीमार हैं। इस बात का पता लगाया तो यह भी मालूम हुआ कि वह ज्योतिषी अपनी पेशीनगोई पूरी करने के लिये वह २ काररवाइयाँ कर रहा है कि जिससे राजा पेशीनगोई के मुताबिक मर जावे और वह बदकार नुजूमी शोहरत हासिल करे । आर्य लोग इन्तकाम पसन्द नहीं वर्न जनाब पीछा छुटाना दुश्वार होजाता।

५५—पाप क्षमा नहीं हो सकते, यह आर्यसमाज का वैदिक सिद्धान्त है; क्योंकि पाप को वैदिक भाषा में "नमुचि" (नमुञ्चतीति) कहते हैं अर्थात् जिसका बिना भोगे नाश नहो। पाप का भोग तीन तरह से होता है—(१) स्वयं भोग लेना प्रायश्चित द्वारा, (२) राजा दण्ड देकर भुगावे, (३) ईश्वर इस जन्म में वा जन्मान्तर में भुगाये। आशय यह है कि इन तीनों प्रकारों में से किसी प्रकार द्वारा पाप का फल भोग ले। श्री स्वामी जी महाराज ने घोर तपस्या करके इन क्षुद्र पापों को नितान्त भस्म कर दिया। तप से शरीर को कष्ट होता है और आत्मिक शुद्धि=ज्ञात व अज्ञात पापों के फल भोग रूप से उत्पन्न हुई बुरी वासनाओं की निवृत्ति होती है। यदि मनुष्य स्वयं न भोगे तो राजा वा पञ्चायत पापों का दण्ड देते हैं। और न स्वयं प्रायश्चित वा तप द्वारा भोगे और न राजा व पञ्चायत भुगवावे तो परमात्मा उसको, योन्यन्तर द्वारा वा उसी योनि में, भुगवाता है। आशय यह है कि यदि स्वयं भोग ले तो राजा वा पञ्चायत उसको दण्ड नहीं देती; और जिसको पंचायत ने दण्ड देदिया उसको परमात्मा दण्ड नहीं

देते हैं उस पाप के अनुसार फल भोगना ही उस पाप से निवृत्ति कहाती है। इन महानुभावों ने धर्मार्थ कितने घोर कष्ट उठाये! इसलिये उन्होंने स्वयं कष्ट उठाकर इन पापों को दूर कर दिया और अपने को मुक्ति के योग्य बना लिया। कर्म फिलासोफी को जानना जनाना बेपड़ों का काम नहीं है। देखिये—

क्लेशमूलः कर्माशयः दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः ॥

योगदर्शन । २ । १२ ॥

इस पर श्री व्यास जी लिखते हैं कि—

कर्माशयः क्षीणक्लेशानामपि नास्त्यदृष्टजन्मवेदनीयः कर्माशयः ॥

यानी जिनके क्लेश क्षीण हों उनका भी परजन्म में भोगने योग्य नहीं है। मतलब यह है कि—विद्वानों के सत्संग, तप, समाधि और वेदाध्ययन आदि से इस ही जन्म में उत्कृष्ट पाप (गुनाह कबीरा) भी इस ही जन्म में नष्ट होजाते हैं। महाराजा भोज भी योगदर्शन पर वृत्ति लिखते हुये यही कहते हैं। इसलिये श्री स्वामी दयानन्द जी आदि के पाप इसी जन्म में नष्ट होगये और वे मुक्ति के अधिकारी होगये। जिनको अधिक देखना हो वह इस पर पूरा व्यासभाष्य और भोजवृत्ति देखें। फी जमाना श्री स्वामी जी से अधिक तपस्वी कौन होगा? श्री पं० लेखराम जी शहीद अकबर भी धर्मार्थ कष्ट उठाने में कम नहीं थे। उन्होंने भी अपने जीवन में कौन सा कष्ट नहीं भोगा? अपने रुधिर को वहाकर मरते समय अपने सारे पाप धो डाले। कर्म फिलासोफी को उस्मी और उसके चेले नहीं समझ सकते।

आर्यसमाज की ओर से किये हुए आक्षेप और उनके दिये हुए उत्तरों पर विशेष विवरण।

१—क़ुरान सृष्टि के आदि में नहीं आया यह सारी इस्लामी दुनिया मानती है; फिर उस समय के लिये कौनसी हिदायत थी? क्या उस समय के इंसानों को हिदायत की ज़रूरत नहीं थी? क्या उनको कोई गुनाह नहीं लगसकता था? न लगने का सिर्फ यही सबब था कि कोई हिदायत खुदा की तर्फ से नहीं थी? उस वक्त के इंसानों ने कौनसा गुनाह किया था जो उनको हिदायत नहीं दी गई? यदि बिला वजह ही हिदायत से महरूम रक्खा तो क्या क़ुरानी खुदा पर तअस्सुब और बे इंसाफी का धब्बा नहीं लगता है? हर इंसानी आँख के लिये सूरज की जरूरत है, जब कि हर आंख बिना सूरज की मदद के काम नहीं करसकती तो लाज़िम आता है कि आंख का और सूरज का ताल्लुक जरूर हो। लेकिन खुदा ने अक़्ल की आँख तो पैदा करदी लेकिन सूरज नदारद! यह कैसी बे इल्मी!! इंसान खुद बखुद अपने ज़ाती ख़ास्से से नेको बद नहीं जान सकता, इसलिये इबतदाये आफरीनश में नेको बद बतलाने वाली किताब का होना जरूरी है। चूंकि क़ुरान ऐसा नहीं करता इसलिये क़ुरान इल्हामी किताब नहीं। मौलवी साहब फ़रमाते हैं कि "इब्तदा में कामिल तालीम का देना दुरुस्त नहीं" क्यों नहीं? उन इंसानों में क्या कमी थी? अगर थी तो वह तालीम से ही दूर होसकती थी फिर सवाल यह भी है कि बिला वजह ऐसे कमज़ोर आदमी क्यों पैदा किये? अगर खुदा की मरज़ी, तो फिर नेको बद आमाल का खुदा ही जिम्मेवार ठहरता है। अगर खुदा ही नेको बद का ज़िम्मेवार है तो फिर हिदायत किसलिये? यह दोज़ख और

ज़ुरूरत किस लिये ? अजीव अन्धेर खाता है । वैदिक जुबान का मतलब भी ईश्वर ने ही बतलाया । इसलिये किसी दूसरी जुबान की ज़ुरूरत नहीं । एक अरबी बच्चे को अरबी सीखने केलिये किसी दूसरी ज़ुबान के सीखने की जरूरत नहीं । इसही तरह अंगरेज़ी सीखने के लिये किसी दूसरी ज़ुबान सीखने की ज़ुरूरत नहीं । इसी तरह और भी आगे समझ लीजिये । अगर यह उसूल लाजमी हो कि हर ज़ुबान सीखने के लिये दूसरी ज़ुबान की जरूरत है तो दौर (परंपरादोष) लाज़िम आयेगा । इस लिये इब्तदा में कोई ज़ुबान ईश्वरीय होनी चाहिये जिससे आइन्दा को ज़ुबान सीखने का सिलसिला चलजावे । लिहाजा परमात्मा ने इब्तदा में वेदों के इल्म साथ २ ज़ुबान भी दी जो वैदिकभाषा कहाती है । अगर आपके मिर्ज़ा साहब अरबी को ज़ुबानों की मां कहें तो ऐसा ही है जैसे कि कोई अपने अन्धे बेटे का नाम नयनसुख रखले आप के पास और आप के मिर्ज़ा साहब के पास कौनसी दलील है कि अरबी ज़ुबान ज़ुबानों की मां है और मुकम्मिल है । अगर अरबी ज़ुबान मुकम्मिल है तो आपके खुदा को कुरान में दूसरी ज़ुबानें क्यों शामिल करनी पड़ी ? जो दूसरी ज़ुबानें क़र्ज लेता फिरे उसको खुदा कहोगे ? इनसाइक्लोपीडिया में लिखा है कि कुरान में और बहुत सी ज़ुबानें शामिल हैं । On the other hand it is yet more remarkable that several of barroed words in the Karan hare a sesise with they do not passes in the original language. The words shaiton (Soton) barrowed from Alyssinian. इनसाइक्लोपीडिया कृत कुरान शब्द की व्याख्या ।

वैदिक भाषा ईश्वरीय भाषा है। इंसान इंसानी भाषा बोलते हैं। क्यों जनाब क्या अरबी खुदाई जुबान है ? अगर कहिये हां तो इस खुदा की बोली को सीखने केलिये अरबी लोगों ने कौनसी इंसानी जुबान सीखी थी ? अगर कोई खुदाई बोली सीखनेवाला पहले इंसानी जुबान सीखलेता है तब तो वह इंसानी जुबान खुदाई बोली की भी उस्तादनी होगई ? और यह तो बताइये कि जब आदम से खुदा ने अपनी बोली में ' व अल्लमाह आदमल् अस्माअकुल्लहा". कहा था तो आदम ने कौनसी इंसानी जुबान सीख रक्खी थी ? धर्म सवाल यही है-कि अगर खुदातआला ने अपनी जुबान में आदम और शैतान से बात चीत की तो वह आदम और शैतान वगैरह उसको समझते थे या नहीं ? अगर कहो नहीं समझते थे तो फिर खुदाताअला ने उन्हें समझाया तो पहला कलाम (वअल्लमा आदमल् अस्माअ कुल्लहा) बेहूदा रहा । एक बात और याद आई; वह यह कि शैतान भी तो यही अरबी बिना सिखाये बोलता था तो इसको शैतानी जुबान भी कह सकते हैं। जनाब ! यह तो बतलाइये कि जब कुरानी आयतों के माने हल करने के लिये अरब मौजूद है जहाँ के बाशिन्दे अरबी बोलते हैं और दीगर मुमालिक भी मौजूद हैं जहाँ पर अरबी जबान बतौर मादरी जुबान के हैं, तो फिर इस्लाम में सैकड़ों फिरके क्यों हैं ? क्यों नहीं उन मुल्कों में जाकर आपस में समझौता करलेते कि अरबी महावरे में इस कुरानी आयत का यह मतलब है ? आखिर झगड़ा तो कुरान और हदीसों के मानों में इख्तलाफ होनेही की वजह से है इससे साबित है कि कोई मुल्की जुबान इल्हामी आयतों का फैसला नहीं कर सकती। तो यह कहना कोई मानी नहीं रखता कि

अगर कोई मुल्की ज़ुबान नहो तो एक मन्त्र के हल करने में अगर झगड़ा पड़जाय तो उसका फैसला किस तरह कर सकते हैं' पहले अपनी कुरानी आयतों का फैसला अरब में जाकर कराइये फिर वेदों पर एतराज कीजिये। अगर ग़ैरेबहस आयत की जरूरत होतो हम जनाब को बतलाये देते हैं— "निसाओकुम् हरसुल्लकुम् फ़तूरहर्सकुम् अन्नाशेतुम्" सूरते बक़र। इस आयत के शिया और सुन्नी दो तरीक़ पर मानी करते हैं। "शिओं ने कहा कि कुरान में लिखा है कि 'निसाओकुम् हर्सुल्लकुम फ़तूहर्सकुम अन्नाशेतुम्' इसी वास्ते आगे और पीछे से औरत के साथ जिमाअ जायज़ है।' देखो दबिस्ताने मज़ाहब का उर्दू तर्जुमा सुफ़ा २६७ सतर १२ छापा मित्रविलास लाहौर सन १८९६ ई०। इस जुमले की असिल फ़ारसी भी सुन लीजिये—

"वअहले तसन्नो गुफ्तन्द कि दर कुरानस्त कि "निसाओकुम् हर्सुल्लकुम् फ़तोहर्सकुम् अन्नाशेअतुम्" नजर बदीं बराह क़ुबल व दुबरफ्तन जायजस्त व दुखूल दरपशोपस" दबिस्ताने मज़ाहब तालीम हकुम् दर बहस अदियान सुफ़ा २७३ सतर १४।१५।१६ मतबअ मु० नवलकिशोर वाक़े कानपुर इसी किस्म की सैकड़ों आयत हैं जिनके मतलब के बारे में तनाजा है और ७२ से भी कहीं ज़्यादह फ़िर्के इस्लाम में इसही इख्तलाफ़ की वजह से हैं।

हज़रत ने ही कुरान बनाया और उन्होंने जैसी चाही वैसी अपने लिये कुरानी आयत उतार ली! लेकिन फिरभी कभी न कभी सच्ची बात ज़ुबान से निकलही जाती है। "व अस्तग़फ़र

लो ज़म्बक" में "ज़म्ब" के माने बशरी कमज़ोरी के नहीं हैं बल्के गुनाहके हैं देखो लुग़त ज़म्ब=गुनाह, वह काम जिससे बुराई हासिल हो। लेकिन जनाब मौलवी अब्दुल् हक़ साहब कादियानी ने सिकन्दराबाद के मुबाहसे में इसही आयत का यह मतलब निकाला कि 'जिस वक्त हज़रत ने मक्के को फ़तह किया तो वहाँ के मुशरकीन के अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दिये'! अब अरब में जाकर इसकी तस्दीक़ कर आइये कि आप दोनों अहमदियों में से कौन ठीक कहता है। सूरए नसर में "वस्तग़फ़िरहो" के माने हैं मग़फ़रत माँग, उससे काहेकी मग़फ़रत मांग? गुनाहों की। इससे साफ़ है कि 'ज़म्ब' माने गुनाह के हैं।

"लेयग़्फ़िरा लकल्लाहो मातक़द्दम मिन् ज़म्बेक वमा तअख़्ख़र व युतेमो नेअमतहू अलैक०"

में नेअमत के आजाने से गुनाह हट नहीं जाता। खुदा ने दो काम किये एक तो अगले पिछले गुनाह माफ़ किये दूसरा उसको नेअमत दी। इससे ज़म्ब के मानी गुनाह ही बने रहते हैं।

गुज़िश्ता लोगों के हालात तवारीख़ में लिखे जाते हैं नकि इलहाम में। जो काम तवारीख़ से चलता हो उसको इलहाम से पूरा करना कहाँ की दानिशमन्दी है? यहतो बताइये जनाब पहले तवारीख़ था इल्हाम? तवारीख़ से पहिले इल्हाम की ज़रूरत है, क्योंकि इल्हामही नेकोबद की हिदायत करता है। उस हिदायत के मुआफ़िक़ जो चलते हैं उनकी तारीख़ नेकों के मानिन्द लिखी जाती है और जो बद होते हैं उनकी तारीख़ बदोंके मानिन्द लिखी जाती है। जब इलहाम नहीं तो नेकी

बदी कैसी ? और नेकी बदी नहीं तो यह कहना नहीं बनता कि "और जतलाया गया है कि इस जमाने में भी ज़ालिम और शरीर लोगों को अंजामकार पहले शरीरों जैसी सजायें मिलेंगी"। जब इल्हाम क़दीम नहीं तो यह कहना नहीं तो पहिलों को शरीर किस बिना पर कहा ! हमतो समझते हैं कि मुसलमानों की सारी ही बातें बेउसूली हैं। क्या इल्हाम, क्या ज़ुबान, क्या कुरानी अहकाम इनमें किसी को भी खुदा से तअल्लुक नहीं। अब हम एक दो सुबूत ग़ैर मुल्क और ग़ैर मज़हब वालों के इसको ताईद में देते हैं कि दुनिया की सब ज़ुबानें संस्कृत से निकली हैं और एक वक्त था कि दुनिया के तमाम हिस्सों में संस्कृत ही बोली जाती थी।

1—At one time sanskrit was the one language spoken all over the warld." Edinburgh ren. vot. 33 P. 43 by Mr. Bapp.

2—Velsnik maiewisk's book on Sanskait being sure that he will please them by doing so. He says that he was himself very dilighted on sung the book with Dabrovsky, for he had come to learn that"sankrit is the most perfect language under the sun" and that is the true mother of the slovanic. In his article on sanskrit he repeats the openion in those times that sanskrit is the mother of the Eauropean languages ... ... By Mr.V. Lesney. Modern review for june 1923 A. D.

इसही तरह पर हर मुकाम के आलिमों की यही राय है कि संस्कृत ही दुनिया की तमाम ज़ुबानों की मां है। हम ब-

ख़ौफ़ तवालत नहीं लिखते। हमारे मुसलमान दोस्त कुरान में क़िस्से कहानियों का होना जरूरी बताते हैं; लेकिन हम अपने दोस्तों से दरयाफ़्त करते हैं कि क्या कुरान में सारे वाक़यात मुफ़स्सल तौर पर दर्ज हैं ? अगर नहीं तो कुरान की तफ़सीर करते वक्त मुफ़स्सरीन कुरान दूसरी गुज़िश्ता किताबों से क्यों मदद लेते हैं ? कुरान में बहुत से वाक़आतका सिर्फ इशारा ही दिया हुआ है। लेकिन उनकी तफ़सील पुरानी किताबों में है। वह किताबें इस्लाम के अक़ीदे के मुआफ़िक़ मंसूख होचुकीं। नीज़ यह भी याद रहे कि मुसलमानों के कौलोफेल से यह भी ज़ाहिर है कि मासिवा कुरान अब दूसरी किताब की जरूरत ही नहीं। इसही उसूल पर कारबन्द होकर सिकन्दरिया का अज़ीमुश्शान कुतुबख़ाना जलादिया गया ? हिन्दुस्तान में भी नालन्दह उदन्तपुरी वग़ैरह के बड़े २ कुतुबखाने जलादिये गये !! अगर यह सब पुरानी इलहामी किताबें, जो मंसूख होगईं, सफ़े हस्ती से, मुसलमानों की मर्ज़ी के मुताबिक़, नापैद करदी जायँ तो कुरान का सारा ही मतलब खत्म होजावे। अगर अहादीसों से पता चलेगा तो यह भी ग़लत है। अव्वल तो अहादीसों में भी मुहद्दिसों ने इन्हीं मंसूखशुदः किताबों से सब कुछ लेकर लिखा है। दूसरे यह कि बकौल मुसलमानों के इन किताबों में तहरीफ हो चुकी है यानी घटबढ़ चुकी हैं तो इन पर कैसे मुसलमान लोग यक़ीन कर सकते हैं ? तीसरे यह कि जिस तौरपर वाक़यात इन मंसूखशुदः किताबों में दर्ज हैं कुछ लौट बदलकर भी कुरान में लिखे हैं इससे कुरानी बातें तस्दीकतलब है। चौथे यह कि हदीसें भी हज़रत की वफ़ात से करीब दोसौ साल के बाद से बनना शुरू हुई हैं। इतनी मुद्दत के हालात बिना पुरानी कुतुब की मदद के नहीं लिखे

जा सकते। अगर इन्सानों से सुने हुए वाक़यात की बिना पर क़ुरान की कमी को पूरा किया जावेगा तो आपके इस बयान के ख़िलाफ़ होगा कि "फिर जो इन्सानों ने तारीख़ें और वाक़-आत बयान किये हैं उनमें अकसर ग़लत होते हैं"। फिर तो इन्सान के बयान किये हुए वाक़आत ग़लत और क़ुरानी क़िस्से भी ग़लत। अब हम एक अधूरा क़ुरानी क़िस्सा पेश करते हैं और मिर्ज़ाई साहबान से दरख़्वास्त करते हैं कि वह इसका जवाबदें—सूरते मायदा में आया है कि—"वत्लो: अलैहिम्—और पढ़ अहले किताब पर 'नबा अब्ना आदम्' ख़बर दो बेटों आदम की (जो उनके सलबसे थे हाबील और क़ाबील) बिलहक़्क़े—पढ़ना साथ रास्ती और दुरुस्ती के"। इसके आगे मुफ़स्सरीन ने सारा क़िस्सा हाबील और क़ाबील का लिखाहै। ये दोनों बेटे आदम थे। बीबी हव्वा हर हमलमें एक बेटा और एक बेटी जनती थीं। जब बड़े होते तो एक हमल के लड़केसे दूसरे हमलकी लड़की का निकाह करदेते थे (सगी बहनसे!) दोनों लड़कियों नाम "अक़लीमा" और "लयूज़ा" था। जो लड़की क़ाबीलके साथ पैदा हुईथी उसका नाम अक़लीमाथा और वह निहायत हसीनाथी और जो लड़की हाबील के साथ पैदा हुई थी उसका नाम लायूज़ा था और उतनी हसीन नहीं थी। जब हस्बदस्तूर आदमने उनका निकाह करना चाहा और लयूज़ा को क़ाबीलके सुपर्द करदिया और अकलीमा को हाबील के सुपुर्द किया। क़ाबील अपने साथ पैदा हुई अपनी बहनसे शादी करना चाहताथा इसलिये क्योंकि वह बनि बत लयूज़ाके ज़्यादः ख़ूबसूरतथी। दूसरे उसने यह भी कहाकि मेरी बहन बहुत ख़ूबसूरत है और मेरी माके पेटमें साथ रही है, इसलिये इससे तो शादी करूँगा! आदमने सब

कुछ समझाया लेकिन क़ाबील राज़ी नहीं हुआ। खूबसूरत बहन के लिये ज़िद करतारहा! आगे किस्सा बहुत लंबा है। अब सवाल यह है कि कुरानी आयात में लफ़्ज़ हाबील और क़ाबील नहीं हैं। यह दोनों अलफ़ाज मुसन्निफ कुरान कहाँसे लाया? पुरानी तवारीख से या मंसूख़शुदा किताबोंसे? बाकी किस्से की बातें मसलन् हररोज़ जोड़े का पैदा होना और उनके निकाह वगैरह का ज़िकर तो आयाते कुरानी में नहीं है। कुरानी आयात में तो इख़तसार के साथ महज़ इस किस्से का इशारह करदिया है।

यह किस्सा कुरानने पुराने अहदनामें से लिया है। अगर पुराने अहदनामें को अलाहदा करदिया जायतो आदमके लड़कोंका पता ही नहीं चले।

मौलवी साहब फरमाते हैं कि-"और कामिल किताब के लिये ज़ुरूरी है कि वह खानेदारी के उसूल पेशकरे और उनके लिये कामिल नमूना भी पेश करे अब हम इस कामिल नमूने की तरफ़ तवज्जह करतेहैं-क्योंजनाब! यही कामिल नमूना है कि औरतके हैजसे होने पर उसके नाफ़ से ऊपर और घुटनों से नीचे ज़कर (लिङ्ग) से मबाशरत करे? हजके मौके पर भी अपनी सारीही औरतों से एकही रातमें मबाशरत करे? अपने मुतबन्ना की औरत से बिला निकाह मबाशरत करना अपनी बीबी की बारी में लौंडी से उसही के बिस्तर पर जफ़ाफ़ (भोग) करके बीबी की हकतलफ़ी करे? औरतके बूढ़ी होनेपर उसको तलाक देने का इरादा करे? जब वह अपनी बारी आयशाको देदेतो तलाक देने से बाज़ आजाये? गैर औरत को देखकर झट अपनी औरत से आकर ज़िमा (भोग) करे? अपने यारोंको भी ऐसा करने की सलाहदे? आयशाकी इतनी रिआयत करे कि वह उसकी गुड़ियों को देखकर हँसे

और तमाम दुनियां से बुतपरस्ती दूरकरे? लौंडीको एक मर-तबा अपने ऊपर हराम करके फिर हलाल करदे? जिसजगहसे हड्डी को आयशा चूँसे, वहीं मुँहलगाकर चूँसे: जिस औरत को चाहे अपने ऊपर हलाल करले? "वमा मलकत् ईमान कुम" कहकर मनमानी लौंडियों से आनन्द करे? अपने लिये मनमानी औरतोंसे शादी जायज़ करले? पचास बरस सेज़्याद: की उम्र रखकर भी छःबरस की लौंडिया से शादी करे? अप-नी औरतों को दूसरोंकी माँ बनाकर अपने आप को दुनियांका बाप इसलिये न बतावे कि उनसे शादी करना हराम होजावे-॥? मुंहबोले बेटोंको हकीकी बेटा नकहकर मुँह बोली मां इसलिये बतावे कि मुतबन्ना की खूबसूरत जोरू हाथ लग जावे और अपनी बीबियां अपने कबजे से ननिकलें? क्या कहें इस कि-स्मके हज़ारों नमूने हैं जिनको देखकर दुनियाँ दांता में उँगली दाबती है!

४—५ एक नमूना तो आपने देखलिया अब दूसरे नमूनेपर गौर फ़रमाइये। अपना मर्द जिससे शादी होगई उसको कम हैसियत समझ कर दूसरे मर्द को जिसकी हैसियत पहले खाविन्द से बरतरहो, करलेना। क्या यही नमूना है? इस नमूना से तो तुलसीदास जी करोड़ों दर्जा ऊँचा नमूना पेश करते हैं-

देखिये— वृद्ध रोग वश जड़ धन हीना, अंध बधिर क्रोधी अति दीना। ऐसेहु पतिकर किये अपमाना, नारि पाव यमपुर दुख नाना। कहां यह नमूना और कहाँ यह कि अपने ब्याहता खाविंद को गुलाम समझ कर छोड़देना और दूसरे को अच्छा जानकर करबैठना! जनाब यह तो बताइये कि इस नमूने के खान्दान में अकसर लड़ाई क्यों रहती थी? यहाँतक

कि अल्ला मियां को, स्पेशल मेजिस्ट्रेट बनकर इसही खान्दान की औरतो मर्द की लड़ाई के मुक़द्दमे तै करनेमें बहुतसा वक्त सर्फ़ करना पड़ताथा! क्या यही ख़ानेदारी का नमूना है कि रसूल होकरभी एक लड़की के सिवाय कोई बच्चा जिन्दा नरहे आगे के लिये चिराग़ गुल होजाय! हज़रत के नमूने के ख़ान्दान की हालत कुछ दरयाफ़्त न कीजिये! चुपही भली पर-मात्मा ऐसे नमूनेसे बचाय क्या आप इसही कामिल नमूने पर फ़खर करते हैं? आप के इस्लामी नमूनेसे तो हिन्दुओं के मामूली खान्दान लाख दर्जे बेहतर हैं। बीबी आयशाका सफ़वाँ अरब के साथ रहजानाभी एक मुइम्मा है और कुरानी खानेदारी का एक कामिल नमूनाहै। कुरानको वाजिबथा कि वह खाने-दारी के मुकम्मिल उसूल पेश करदेता नकि आँ हज़रतकी बी-वियों के फन्दे में फँसकर उनके झगड़े के मुकद्दमे की एक तवील मिसल बनजाता।

६—मौलवी साहब फरमाते हैं कि "कुरान में कोई आयत मंसूख नहीं है"। अब पूरे तौर पर हम कुरान की तहरीफ़ (परिवर्त्तन) दिखाते हैं। ग़ौर करिये-

(१) इख्तलाफ़ात किरअत—तफ़सीर हुसैनी, जो फ़ारसी में है, उसका मुसन्निफ़ लिखता है कि "व चूँ किरअत जाय-जुलतलावत विसियार अस्त व इख्तलाफ़ात किरआत दर हुरूफ़ व अलफ़ाज़ बे शुमार। दरीं औराक अज़ किरअत मौतविरह रिवायत बकर अज़ इमाम आसिम रहमतुल्ला अलैह दरीं दयार बसिफ्त इश्तहार बर तबत एतबार दारद सबत मेगर-दद। व बाज़े अज़ कलमातकि हफस रावाओ मुखालिफ़तस्त दर मानी कुरान बसबब आँ इख्तलाफ़ तग़ैयुरे कुल्ली मेयावद

इशारते मेरबद्" । इससे साबित है कि कुरान में हरफ़ी और लफ़ज़ी दोनों तहरीफ़ें हैं। तफसीरुल्मुफस्सिरीनों का मतलब यह है— चूंकि किरअत जिनका पढ़ाजाना ज़रूरी है बहुत हैं। और इख्तलाफात किरअत के हुरूफ़ और अलफाज़ में बेशुमार (हैं) इन औराक़ में किरआत मोअतबिरा दर्ज हैं जो कि मुआफ़िक़ बकर बख्वास्त इमाम आलिम रहमतुल्ला से इस विलायत में (हिरात में) मशहूर हैं और पाए एतबार रखती हैं। और बाज़ ऐसे कलमात की तरफ़ भी इशारह कियागया है कि जिनका हरफ़ मुखालिफ़त है और जो कि मानी कुरान में तग़य्युर कुल्ली पैदा करते हैं।

(२) सूरते बकर की ७४ आयत मुल हज़ा हो—"वमा अल्ला हो बेग़ाफिलिन" (व खुदायताला ग़ाफिल नेस्त) "अम्मा तअमलून" (अज़ आंचे अहदे मिकुनां मे कुनन्द) इसमें तहरीफ यह है—के हरफ़ ख़िताब मेख्वान्द यानी हरफ़ ख़िताब पढ़ते हैं। मतलब यह है कि बजाय यअमलून" के 'तअमलून' पढ़ता है। लफ़्ज़ 'तअमलून' के मानी हैं तुम करते हो। और 'यअमलून' के माने हैं वे करते हैं। तफसीर क़ादरी को भी मुलाहज़ा फरमाइये। इस ही आयत की तफसीर करते हुए शाह अब्दुल साहब फ़रमाते हैं। "यक़रेने 'यअलमून' ग़ायब का सीग़ा पढ़ा है उसके मुआफिक यह तफसीर हुई और हफ़सने ख़िताब के साथ पढ़ा है और मुख़ातिब यही यहूद हैं या आम ख़िताब है।" तफसीर क़ादरी तुहफ़ा २१ जिल्द १ सतर १० व ११ छापा नवलकिशोर। जनाब मौलवी साहब! क्या आयत में आये हुए लफ़्ज़ 'यअलमून' और 'तअलमून' में कोई फर्क नहीं है? (सूरते बकर आयत २२२ "वलाव करबू हुन" (व नज़दीक मशवेद बदेशां यानी हुबा-

शरत मकुनद) "हतायतह्हुर्न" (ताधक्के कि गुस्ल कुनन्द) इसमें दो किरअते हैं एक यतूहर्न २-यतह्हुर्न। दोनों के मानों में फर्क है। हैज़ के खून के बन्द होनेसे पहिले और पीछे के सवाल से दो मज़हब होगये। इसपर तफ़सीर क़ादरी भी देखिये और हफ्स ने तो ये को ज़म और हे को पेश के साथ पढ़ा है। सुफ़ा ६० सतर २४। तफसीर बैजावी भी इससे दो मजहबों की पैदायश बताता है यानी मजहब इमामआजम और मजहब इमाम शाफई की। दोनों इसको अलहदा २ पढ़ते हैं एक 'यतहर्न' और दूसरा 'यतह्हुर्न'। देखो इस आयत पर तफसीर बैजावी।

३—सूरते मरियम् आयत २४ में है कि—

"फनादाहा (पस आवाजदाद मरियमरा) मिन्तहतहा (ओकि दरजेरओ यानी दर शिकम ओबूद मुराद ईसाअलस्सलाम अस्त कि वओ सखुन गुफ्त व निदा फरमूद अर्थात् पस आवाज़ दी मरियम को उसने जो ज़ेर उसके यानी शिकम में उसके था मुराद ईसाअलस्सलाम से है कि उसने सखुन कहा और आवाज़ फ़रमाई। आगे है कि हफ्स "मिन्तहतहा ख्वांद" यानी ईसाअलसलाम ने नीचे से आवाज दी और कोई 'मनतहतहा' पढ़ते हैं। एक जगह के माने हैं फ़रिश्ते ने आवाज़ दी दूसरी जगह के माने हैं मसीह ने आवाज दी। अब पता नहीं अल्लामियां की बोली कौनसी रही? इस पर देखो तफ़सीर क़ादरी। और बकरने 'मन्तहतहा' पढ़ा। यहाँ पर 'मन्' और मिन् का बड़ा भारी फ़र्क़ है।

४—सूरते अम्बिया आयत ४ में शुरू में "क़ाल" है जिस

के माने हैं कहा, लेकिन तफ़सीर हुसैनी वाला 'कुल्' 'यानी करदे' कहता है इस पर तफ़सीर क़ादरी देखो-"और बकर ने 'कुल्' यानी अमर का सीग़ा पढ़ा है" । अब अल्लामियाँ 'कुल्' कहते हैं या 'काल' कहते हैं ? यानी "कहदे ऐ नबी" यह कहते हैं या "कहा नबी ने" यह कहते हैं । क्या इसको तहरीफ़ नहीं कहते ।

अब जनाब लफ़्ज़ी तहरीफ़ भी सुन लीजिये-देखिये सूरते यूनुस आयत १००में "वतज् अलुरिंज्स" है । तफ़सीर हुसैनी में लिखा है कि--

व मेगुमारेम अज़ाब रा या खश्म मेगोयम् या मुसल्लत मैं कुनेम शैतानरा व हफसबया में ख्वांद यानी खुदाए अजाब मेकुनद"

अर्थात्-यानी मुक़र्रिर करते हैं अज़ाब या गुस्सा होते हम या मुसल्लत करते हैं हम शैतान को और हफ़्स के साथ या के बजाय नून के पढ़ता है यानी खुदा अज़ाब करता है । अब तफसीर क़ादरी देखिये और बकर ने 'नजअलो' नून से मुतकल्लिम का सीग़ा पढ़ा है । और हफ़्स ने ये से गायब का सीग़ा पढ़ा है ।

अब मुलाहज़ाहो एक 'यज़अलो' पढ़ता है, दूसरा 'नज़अलो' पढ़ता है । दोनों के लिये शहादतें मौजूद हैं । क्या अब भी आप तहरीफ नहीं मानेंगे ? इसी जुमले में एक और तहरीफ़ है । यह आयत का टुकड़ा इसतरह पर है-'यज्अलुरिंजस' । इस पर काज़ी बैजावी अपनी तफसीर में लिखते हैं-'वक़िरे बिज्जाए' यानी बाज़ इसको 'रिजज़' पढ़ते हैं । अब देखिये कोई कहते हैं 'रिजस' और कोई रिज़ाज पढ़ते हैं । यह

तहरीफ़ नहीं तो क्या है ? मौलवी लोगों ने एक पूरा जुमला कुरान से निकाल दिया। देखिये सूरतुल अहज़ाब की आयत ६ "अन्नबीयो ऊलाबिल् मोमनीन मिन् अन् फुसे हिम्" और उसके आगे का जुमला इस तौर पर है-"न अज़्वाजुहू उम्महा तुहुम्"। इन दोनों जुमलों के बीच में तफसीरहुसैनी एक और जुमला बताती है जो अक्सर कुरान के अन्दर पाया जाता है लेकिन बहुतों ने निकाल डाला है। तफसीर हुसैनी में यह लिखाहै—दरमसहफ अबी व किरअत इब्ने मसऊद चुनी बूद व हुव अब्बुल्लहुम् व अजवाजुहु उम्महातुहुम्, यानी कुरान अबी और किरअत इब्ने मसऊद में ऐसा था कि वह (मुहम्मद) बाप उनका है और उसकी औरतें उनकी माएँ हैं। क़ाजी बैजावी भी ऐसा ही कहता है। देखो तफसीर बैजावी। 'ऐफ़िद्दीन फ़हव् कुल्लो नबीय अब्युल् उम्मते हीं'। वएतबार दीन के नबी कुल उम्मत का बाप है। अब तफसीर क़ादरी भी मुलाहज़ा हो— "हजरत अबीके मसहफ़ और हजरत इब्ने मसऊद की किरअत में यह इबारत यूं थी'(वही निकाला हुआ आयत का टुकड़ा) देखो सुफा २५५ सतर १५ जल्द कहिये मौलवी साहब शायद यह इसही लिये तहरीफ की गई है कि कहीं आंहजरत सबके बाप होने से उन पर मुसलमानों की लड़कियां बेटी होने से हराम न होजाएँ ? अब मौजूदह कुरान की सूरते फातहा को लीजिये—तफसीर बैजावी में लिखा है कि किरअत शाज की यह है-"सिरात मिन् अन् अमृत अलैहिम्' लेकिन मौजूदह कुरानमें इस तरह है-"सिरातल्लज़ीन अन् अमत अलैहिम्"। किसी ने 'अल्लजीन' शामिल करदिया है और मिन् निकाल

दिया है। और इसही सूरत फ़ातहा की सातवीं आयत में 'वलद्दालीन्' में ला को निकाल कर लफ्ज़ 'ग़ैर, शामिल था। और इस तरह पढ़ते थे-'वग़ैरद्दाल्लीन'। यह भी तफ़सीर बैजावी में ही है। और भी मुलाहज़ा हो—सूरते वकर आयत १८ में 'भिनस्वेवाइके" है लेकिन बैजावी कहते हैं कि किरअत शाज़ "मिनस्स्व वाक़िए" है सूरते वकर आयत २१ में "अला अव्दिना' है बैजावी कहते हैं कि 'अलाअवादिना भी किरअत है। अल्लामियाँ क्या बोलते हैं पता नहीं! सूरत वक़र आयत ३९ में 'तकतमून है और इबने मसऊद के कुरान में 'तकुतुमून है। यानी तुम छिपाने वाले हो। इसही तरह सूरत वकर की आयत ६५ में वक़र की जगह बाकर है। यानी बजाय वाहिद के जमा का सीग़ा है सूरते वक़र आयत ११० में लफ़्ज़ 'वकालू. यानी उन्होंने कहा है और इबने आमर ने इसको वग़ैर वाओ (,) के पढ़ा है। सूरत वकर की इन आयतों में तहरीफ है—

१९२, २१४, २२९, २४१, २४६, २६१, इन आयाते वाला में बहुत बड़ी लफ़्ज़ी और मानवी तहरीफ है। तवालतकी वजह से नहीं लिखते। सूरते इमरान में आयत ६१ में "हज़न्नवीओ" है इसको 'वन्नवीयो' भी पढ़ते हैं। सूरते इमरान की आयत ८६ में 'मातुहिब्बून' से पहले लफ़्ज 'बाज़' ज्यादा पढ़ते हैं। कहां तक लिखें इसी तरह हजारों जगह तहरीफें हैं। मौलवी लोग इसका जवाब दें। वसे तो सब सूरतों में बहुत सी तहरीफें हैं लेकिन हम तवालत के ख़ौफ़ से सिर्फ एक २ ही तहरीफ हर सूरत में दर्ज करते हैं मौका पड़ने पर एक से ज्यादह भी पेश करते हैं। सूरतुन्निसा आयत १५ में 'मिन्' और 'उम्म' ज्यादा किये गये हैं।

सूरते मायदा की आयत ५८ में "वयकूलुल्लज़ीनें आमनूं"। बैज़ावी कहता है कि इब्नेकसीर, नाफ़ुअ और इब्ने आमिर बिना वाओ (') के पढ़ता है। इनके कुरानों में वाओ नहीं है। सूरते अनआम की ५४ वीं आयत तीन तरीक़ पर कुरानों में है—व हज़ा सिर्राता, व हज़ा सिराते रब्बेकुम्, व हज़ा सिराते रब्बेक। माने हैं-यह है राह मेरी, यह है राह तुम्हारे रब की और यह है राह तेरे रब की। सूरते अशराफ आयत ५५ में कहीं 'नुशुरन' है कहीं आसम 'बुशुरन' पढ़ता है। इसी सूरत की आयत १०३ में लफ़ज़ 'अला' साक़ित किया गया है। इस सूरत में बैजावी नौ तहरीफ़ें बताता है सूरए अनफालमें आयत ८ में लफ़ज 'अन्' साक़ित किया गया है। 'अन्' के मानी 'से' के हैं। सूरते बरात की आयत ८ में 'इल्लन्' के बजाय किसी कुरान में 'ईल्लन्' यानी खुदा है। सूरते यूनुस की आयत २ में लफ़ज 'इन' साक़ित किया गया है और अलफ़ाज 'मा' और 'इल्ला' बढ़ाये गये हैं।

सूरते हूद की आयत ८६ और ८७ में लफ़ज "बकैयतो" है उसकी जगह कहीं कुरान में लफ़ज "तकै़यतो" है। पहले के माने हैं 'बाकी छोड़े' दूसरे के हैं ख़ौफ़ खुदा का या हुक्म बिरादरी खुदाकी।

सूरते यूसुफ़ की आयत ३० में लफ़ज "शग़फ़हा" है उसके बजाय 'शअफ़हा' भी है। इसी सूरत में ६४ वीं आयत में "फअल्ला हो ख़ैरुन् हफ़ज़ुन्" की शक्लें पढ़ी जाती हैं बैजावी कहता है कि हमज़ा कसरा और हफ़स 'हाफ़िज़न' पढ़ते हैं और खैरो हाफ़िज़न और 'ख़ैरुल् हाफ़िज़ीन्' पढ़ते हैं। तीनों के मानी अलहदा २ हैं।

सूरते राद में आयत १८ में ज़ लफ़' ज़ुफ़अन्" है उसकी

जगह लफ़्ज़ "ज़ुफ़लन्" भी है। सूरते इबराहीम की आयत ४७ में है कि "वइन् कानं मकरुहम्" इसको जगह है "वइन् क़ादं मकरुहम्"। यहां पर मक्र शदीद के माने होगये।

सूरते हजर की आयत ८७ में "हुवल् ख़ल्लाक़ो" आया है और उसमान और उनयी के क़ुरान में है "हुवल् ख़ालिक़"।

सूरए नेहल की आयत ६ में "मिन्हा जाअदुन्" है उसकी जगह बाज़ "मिन् कुम् जाअदुन्" पढ़ते हैं। सूरते बनी इसराईल की पहिली आयत में लफ़्ज़ 'लैलन्' है उसकी जगह "मिनल् लैल्" पढ़ा गया है। सूरते कहफ़ की आयत ७९ में लफ़्ज़ "फ़ख़शैना" आया है बाज़ ने इसकी जगह फ़ख़ाफ़रब्बक पढ़ा है यानी 'फ़ख़शैना' की जगह बाज़ क़ुरानों में "फ़ख़ाक़ रब्बक" लिखा देखा जाता है। सूरते मरियम की आयत ६१ में "यद्ख़लून" आया है इब्ने कसीर, अबू उमर, अबूबकर और याक़ूब ने इसको "मिन् अदख़ल" अपने क़ुरानों में पढ़ा है।

सूरते ताहा की आयत १३५ में "क़ुल्ल कुल्लो मतरब्बिसो फ़तर बस्सो" है बैजावी कहता है कि बजाय फ़तरबस्सो के फ़तमत उब्बो पढ़ा जाता है।

सूरतुल अम्बिया की आयत ९६ यह है "हत्ताइजाफ़ुतेहत् याजूजोव माजूजोव हुम् मिन् कुल्ले हदसिन०" इसपर बैजावी लिखताहै कि "वक़िरै जदसिन् वहुवल् क़ब्र"। अर्थात् बजाय 'हदसिन्' के जदसिन् क़ब्रके मानों में पढ़ाजाता है। सूरतुलहज की ३७ वीं आयत में "फ़ज़् कुरो बस्मल्लाहे अलैहा सवाफ़्फ़" है। बैजावी कहताहै कि बाज़ने पढ़ा है 'सवाफ़ने सफ़न'। इससे ज़्यादह और क्या तहरीफ़ होगी। सूरतुल् मोमिनीन आयत २० है "तनबुतो बिद्दुहने बैजावी इसके तीन तरीफ़

बताताहै १-विज्जुहैने, २-बिज्जुहने, ३-अज्जुहनं ४-वतव्नुतो बिज्जुहाने यानी इसतरह—

१—वुतसुमेरब्बिज्जुहने २-वतु खुरूजो विज्जुहने ३-वतु-खुरूजु ज्जुहनं ४-वतव्नुतोविज्जुहाने, ५-तन्बुतो बिज्जुहने। कहिये जनाब कितनी तहरीफ़ हैं?

सूरते नूर आयत १४ में "इज़ातल क्कूनहूवे असेनते कुम्" है। इसमें बैज़ावी आठ किरअतें बताताहै। लफ़ज़ 'तलक्कूनहू' की पहली किरत 'तअलक्कूनहू,दूसरी तसफ़कूनहू तीसरी चौथी तसुफ़कूनहू पाँचवीं तक़फ़ूनहू तवक्कूनहू। बाकी और भी तहरीफ हैं। सूरते फ़ुरक़ान की आयत ६८ में लफ़ज़ "असामन" आयाहै आयत यह है "वमैंयकअल ज़ालिकं यल्कं असामन्" किसी कुरानमें बैजावी कहताहै अय्यामन्' है। सूरते शोअरा की आयत ५६ में हज़रून की जगह 'हादेरून' भी है।

सूरतुल कमर की पहली आयतमें बैज़ावीके कहनेके मुआफ़क "इकरबतिस्साअतो" और "वन् शक्कुल क़मरो" के बीचमें लफ़ज़ 'कद ज़्यादह कियाहै। यह थोड़ा सा नमूना दिखायागया है इसही तरह मआविमुल तनज़ील और दुर्रे मंसूरी वगैरह में तहरीफों के ढेर लगे हुए हैं। अब हम कुछ मुसलमान उलमाओं के बयान बाबत तहरीफ़ कुरान लिखते हैं।

कलैनी लिखताहैकि जिबराईल १७ हज़ार आयतें लायाथा।

तफसीर बैज़ावी के मुआफिक ६२३६ आयात हैं। मौजूदा कुरान में ६६६६ आयात हैं। शाह अबदुल अज़ीज़ साहब अपनी किताब तुहफे असना अशरिया सुफ़ा ७४१ में फरमाते हैं कि कुरानमें तहरीफ करना सिर्फ़ यहूद की है। सुफा २६० में वही साहब फरमाते हैं कि शियों के नजदीक कुरान मुअतबिर नहीं क्योंकि यह असली कुरान नहीं है। वही साहब लिखतेहैं—

"वहाला आँचे मौजूदस्त मसहफे उसमानस्त कि हम्ह नुसखे आँ नविश्तःवअकनाफे आलम शुहरतदाद व कसेराकि कुरान मजिल व असिल तरतीब व वज़अ मेख्वांद ज़रबो शलाक नमूद ताकि तौअन वंकरहन् हमा आफाक बरीं मसहफ काबिले तमस्सुक व इस्तदलाल नबाशद.........."

.. इस इबारतसे साफ़ साबितहै कि मौजूदा कुरान उसमान का रायज किया है वह भी कोड़े मार २ कर मनवाया गया है। असली कुरान पढ़ने तक नहीं दिया।

दूसरी वजः तुहफ़ेसा मुसन्निफ़ यह बताता है कि कुरानकी नक़ल करनेवाले बेईमान थे लालची और बेदीनथे इसवजहसे उन्होने कुरानमें सबतरह की तहरीफ करदी जैसेकि अबदुल्ला बिन साद बिन सरह नाकिल कुरान।

शियालोग कहते हैं कि सुन्नियों ने कुरानको ख़राब किया और सुन्नी कहतेहैंकि शिया लोगोंने ऐसा किया। इनका झगड़ा अगर देखना होतो मौ० हैदरअली साहब की बनाई किताब 'मुनतहो अल्कलाम' और मौ० सैयद हामदहुसैन की बनाई किताब. ईस्तफ़सःअल फ़हाम वईस्तैकाअल इन्तक़ाम की तुक़से मुन्तहीअल् कलाम'. को देखें।

सयूती की किताब दुर्रे मंसूरी में दर्ज है कि अबूउवैद व इब्न अल्फ़रलैस व इब्न अलमूवारी ने अपने सहीफों में इब्ने उमर से कि उसने कहा ऐ मुसलमानों हरगिज़ न कहे कोई वाहिद तुममें से कि मैंने पालिया है सारा कुरान, जो कुछ उसमें जानागया है वह सारा नहीं है तहकीक़ जाता रहा उसमें से बहुतसा कुरान लेकिन कहे कि मैंने पालिया है जो. कुछ बरामद हुआ उसमें से मुहम्मद साहब के वक्त में सूरते अहज़ाब सूरते बक़र के बराबर थी यानी २८६ आयतें थीं

लेकिन अब सिर्फ़ ७३ आयतें रहगई हैं देखो सयूती की तफ़सीर इतक़ान। अग़ब अस्फ़हानी अपनी किताब महाजरात में लिखता है कि आयशा कहती थीं कि रसूल के ज़माने में सूरए अख़राब में हम २०० आयतें पढ़ती थीं लेकिन उस मानने उनकी क़द्र न करके सिर्फ़ ७३ रखलीं। ऐसा सयूती ने अपनी किताब दुर्रेमंसूरी में भी लिखा है कि सूरते अख़राब बक़र के बराबर थी और उसमें आयत 'रज्म' भी थी। यही बयान बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में बरिवाय हज़ीफ़ा से लिखा है कि मैं नबी के सामने पढ़ता था सूरते अख़राब लेकिन भूलगया ७० आयतें। अबूअबैदा ने फ़ज़ायल में भी ऐसाही लिखा है कि आयशा नबी के वक्त में इसमें दोसौ आयतें पढ़ती थीं लेकिन उसमानने निकालकर ७३ रखलीं। मौ० सैयद्-हामिदहुसैन साहब किताब में यह भी लिखते हैं कि सूरए विलायत क़ुरान से बिल्कुल निकाल दीगई। तहरीफ़े क़ुरान के बारे में अगर देखना होतो इनकी किताब 'इस्तक़साअल्-अफ़हाम' मुक़ाम लुधियाना के सुफ़े ६ से ७२ तक देखिये। यह किताब मंजमै उलजरीन मतबेमें सन् १८६० ई० मुताबिक सन् १२७३ हिजरी में छपी है इसही किताब में मौ० हामदहुसैन साहब फ़रमाते हैं कि अबी बिन काबने एक आयत दाखिलकी।

"लौकानल् इब्ने आदम बदियाने मिनल् माल लातबग़ब अदिया सालसन्०"

थी। जिस सूरत में यह आयत थी वह सूरते तौबा के मानिन्द थी। और एक आयत "या अय्योहल्लज़ीनं आमनू" अबूमूसा अशअरी के पास महफ़ूज थी। इन सूरतों के शुरूमें सुबहान या तस्बीह अल्लाह आया है इसलिये यह मसज़ात

सूरतें कहाती थीं। सुन्नियों के क़ौल के मुताबिक यह दो सूरतें कुरान में नहीं हैं। यही बयान अबूमूसा अशअरीका भी है। दुर्रेमंसूरी, मुस्लिम और यहीक़ी की भी यही राय है कि कुरान मेंसे दोसूरतें जाती रही हैं। यहीं तक नहीं बल्के सूरते बरात यानी तोबा के शुरूसे बिसमिल्लाह भी उड़गई! बात यह है कि सहाबा में इस बातपर झगड़ा था कि सूरते अनफ़ाल और सूरते तोबा यह दोनों एकही सूरत हैं। यह झगड़ा इस फ़ैसले पर निबटा कि इन दोनों सूरतों के दरमियान बिस्मिल्लाह मतपढ़ो जिससे एकभी रहे और दोभी। फिर मौलवी मनाज़िर फ़रमाते हैं कि कुरान में तहरीफ नहीं है! हदीसैन सरीह में दर्ज है कि अलीने जवाब दिया कि सूरत बरात (तोबा) की बिस्मिल्लाह इसकी और आयतों के साथ साक़ित करदी गई अगर ऐसा न हो यह सूरते बरात (तोबा) सूरते बक़र में २८६ आयते हैं और सूरते तोबा में १२९ आयते हैं गोया १५७ आयतें असिल कुरान में ग़ायब होगईं फिरभी कुरान में कुछ तहरीफ़ नहीं हुई!

सूरते खल्आ और हफ़्द ये दो सूरतें भी ग़ायब हैं। सयूती अपनी तफ़सीर इतकान में लिखता है कि मसऊदके कुरान में ११२ सूरतें हैं। इस समय के कुरान में ११४ सूरतें हैं। और अरब के कुरान में ११६ सूरते हैं क्योंकि उसने यह दो सूरतें यानी ख़लअ और हफ़्द कुरान के आख़िर में दर्ज की हैं। इबने काबने अपने कुरान में फ़ातिहल् किताब को दो सूरतों में लिखा था। किताब फ़तहउलबारी बाब शरह में दर्ज है कि उमर ने सिर्फ़ अपनी शहादत से आयतुल रजम् को कुरान से निकाल दिया! खलीफ़ा दोयम की शहादत मिलने परभी ज़ैद बिन साबित कातिब कुरान ने आयतुल् रजम् को कुरान

में दाख़िल नहीं किया। मनमानी घर जानी इसही को कहते हैं। किताब "नबियातुल् हक़ायक़ शरह कंज़ुल दक़ायक़" में आयशा से रिवायत है कि आयत रज़ाअ् कबीर कुरान मेंसे जाती रही उसके साथ रजम् भी थी इन दोनों आयतों को पलंग के नीचे बकरी खागई। यह आयतें कागज़ पर लिखी पलंग के नीचे पड़ी थीं। और किताब महाज़रात इमाम राग़िब अस्फ़हानी में भी ऐसाही लिखा है। और जमाउल् जवाअ् वकंजलुल् आमाल में है कि "फ़किरत्" यह आयत साक़ित हुई। दुर्रेमंसूर में है कि "वलातदग़बू" ... ... यह आयत जाती रही। और हाक़िम की किताब मुस्तदरक में है कि सूरते फ़तह की २६ वीं आयत के बीचमें से यह आयत जाती रही " "वलौहमीम„ अबीअबू अबैद से रिवायत है कि सूरते अख़राब की ५६ वीं आयत का बीचका टुकड़ा आयशा के कुरान में था लेकिन उसमानने निकाल दिया, सूरते अख़राब की ६ वीं आयत में यह टुकड़ा था 'व्हुव अब्बुल्लहुम्' यानी आँ हज़रत तुम्हारे बाप हैं। इसको निकाल दिया। सही मुसलिम् वग़ैरह में यह भी है कि सूरते बक़र की २०८ आयत का यह टुकड़ा 'सलवातुल् असर' निकाल दिया। इन सारे बयानात से हमारा मतलब यह है कि मौजूदा कुरान असली कुरान नहीं है यह उसमानका बनाया हुआ है। इस ही लिये बयाज़े उसमानी कहागया है। उसमानने जैसा चाहा वैसा लिखा। यह मौजूदह कुरान हज़रत की वफ़ात के बाद तैयार हुआ है। पहले कुरान के पढ़ने वालों को कोड़े मार२ कर दूसरा कुरान (बयाज़े उसमानी) पढ़ाया गया। लेकिन फिरभी हमारे मद्द मुक़ाबिल, मनाज़िर न जाने किस बलबूते पर कहते हैं कि कुरानमें रद्दो बदल नहीं हुआ "फ़तों

बेसूरतिम्मिम् मिस्लेही" लाओ इसके मानिन्द कोई सूरत; कहकर दुनियाँ को चैलेंज देते हैं कि क़ुरान जैसी आयत कोई नहीं बना सकता। अजी जनाब! इन्सान तो क्या शैतान भी क़ुरान की सी आयत बनालेता है। क़ुरान में साफ़ लिखा है सुनिये। सूरते हज आयत ५१ से ५४ तक

"वमाअरसलना मिन् क़ब्लेक मिन् रसूलि-न्वला नबीय्ये इल्ला इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैतानो फ़ी उम्मियतो फ़यन् सखुल्लाहो मायुल्करशैतानो"

वग़ैरह। इन आयतों का मतलब यह है- और नहीं भेजा हमने तुम्हें भेजने के क़ब्ल कोई रसूल और कोई नबी मगर जब तलावत की उसने तो डाल दिया शैतान ने उसकी तलावत के वक्त जो कुछ चाहा फिर बातिल और ज़ायल करदेता है वह चीज़ जो मिलादी हो शैतान ने, कलमातकुफ़ में से फिर साबित करता है अल्लाह अपनी आयतें जो उसका पैग़म्बर पढ़ता है और अल्लाह जानने वाला है लोगों का अहवाल हुक्म करने वाला हक़ हुक्म उन पर इलक़ा किया शैतान ने अम्बिया की तलावत के वक्त ताकि करदे हक़ताला उस चीज़ को जो इलक़ा करता है शैतान एक आज़मायश उन लोगों के वास्ते जिनके दिल में कुफ़्र की बामारी है यानी मुनाफ़िक़ लोग। और सख्त हैं उनके दिल और बेशक ज़ालिम लोग अलबत्ता दूरदराज़ और तकब्बुर और अनाद बेपायांमें है और इलक़ा इसवास्ते है ताकि जाने वह लोग जो दिये हैं इल्म यानी क़ुरान यहकि क़ुरान हक़है नाज़िल तेरे रबकी तरफ़से। आयत में लफ़ज़ 'इज़ातमन्ना' आयाहै उसपर बैज़ावी लिखताहै कि

हजरतको दुनयवी ख्वाहिश थी इसलिये रसूल कहते हैं कि वह ख्विस मेरे दिलमें गुनगुनाती है उसकी माफी खुदासे दिनमें ७० बार माँगताहूँ। बैज़ावी कहता है कि अगर वह क़िस्सा जो मुफ़स्सरीन ने लिखा है सही हो तो वकहुँ ईमान साबितका ईमान तनज्जुलसे। यानी यह किस्सा इसलिये मरदूद है कि इसके सही होनेपर इस्लामका खातिमाहै। वह सही किस्सा 'मआलिमुल् तंजील में' इस तरहपर है।—अरबी तर्जुमा—कहा इबने अब्बास और मुहम्मद बिन काब अलकर्ज़ा और ग़ैरों ने भी जबकि देखा रसूलने कि उसकी कौम उससे हटी जाती हैऔर वह देखनेसे यह कौम किनारा करतीहै उससे जिसके साथ वह आया उसके पास खुदाकी तरफ़ उसको शाक गुज़रताथा। उसने (मुहम्मद ने) तमन्नाकी अपने दिलमें कि खुदा की तरफसे उसके पास कोई बात आये जो कुरबत या दोस्ती पैदाकरे माबेन उसके और उसकी कौमके लोगोंके। पस एक दिन यह (मुहम्मद) कुरैशकी मजलिसमें था पस नाज़िल की खुदा ने सूरते नजम पस रसूलअल्लाह ने उसे पढ़ा और जबकि वह पहुँचा इस कौल कुरआनी तक कि तुम देखो तो अल्लात और अलउज़्ज़ी और मनात (यहतीन खूबसूरत देवियां काबेके मन्दिर में थी) डालदिया शैतानने उसके (यानी मुहम्मदकी जुबानपर) वह बात जिसका वह ख्याल करताथा अपने दिल में और जिसकी वह तमन्ना करताथा। "यह निहायत नाज़ुक और नौजवान औरतें आला मरतबे की हैं और उनकी शफ़ाअत उम्मीद करनी चाहिये" पस जब कुरैशने यह सुना वह खुश होगये। इससे साबितहै कि मुहम्मद साहब ने बड़ा पाप किया जो कुरैशों (बुतपरस्तों) को खुशकरने के लिये उनके तीन बुतोंकी तारीफ की। शैतानने तो हज़रतकी तमन्ना पूरी करदी यानी बुतपरस्तों और मुहम्मद साहब को मिलादिया

फिर न जाने हज़रत क्यों उस शैतानके पीछे पड़े हैं और उसको नाहक़ बदनाम करते हैं। इस के अलावा कुरानका कातिब भी कुरान जैसी आयत लिखसकताथा। मशहूर है कि अबदुल्ला बिन् साद बिन्सरह कुरानका लिखनेवालाथा। एकरोज़ कुरान लिखाते वक़ उसको जुबानसे निकलाकि "तबारकल्लाहो अहसनुल् खालकीन" मुहम्मद साहबको यह फ़िक़रा अच्छा और फ़सीह मालूम हुआ। फौरन् कहाकि लिख, यहभी खुदाने नाज़िल किया है। अबदुल्ला ने समझा कि हज़रततो कहते हैं कि खुदाकी तरफ़ से आयात आती हैं, यह तो मेरी बनाई हुई आयत को कुरानमें दर्ज कराने लगे पस उसका ईमान कुरान और मुहम्मद साहब परसे जातारहा। कहिये जनाब कहांगई वह आयत-फतोवे सूरतिम् कि लावे कोई इ'सान बनाकर ऐसी आयत?

अब ज़रा इनसाइक्लोपीडिया को भी मुलाहज़ा फ़रमाइये—

I prevent any further disputes they burned all the other codices except that of Hopsa, which, Rawener, was soon afterwards--distroyed by Merwan the governer of Madina. The distruction of earlier codicer was an irreparable loss to cridicirm; that as it may be, it is impossible now to distinguish in the present farm of the book which belong to the first redaction from which is due to the second. Osmae's Koran was not complete. Some possages are evedently fragmentry; and a few deteached piecer are still extent which were originally parts of the Koran, although they have been amitted by Za'd.

इसका मतलब यह है कि आइन्दा फसाद मिटाने के लिये सारे नुसखे कुरान के जला दिये गये सिर्फ हफसा के पास का नुसख़ा बाक़ी रहा। थोड़े ही दिन बाद वह हफसा वाला कुरान भी मदीने के हाकिम मीरवान् ने जला दिया ! इस पुराने कुरान के जलने से बहुत नुक़सान हुआ। अब इस वक्त यह नहीं पहचाना जासकता कि पुराने कुरान में और मौजूदा कुरान में क्या फर्क है और कौन सही है ? उसमान का कुरान मुकम्मिल नहीं है। बहुत सी बातें निकाल दी गई हैं बाजे २ फिकरे (हिस्से) जैदने जान बूझकर छोड़ दिये।

कहिये मौलवी साहब ! आपका दावा अबभी बातिल हुआ या नहीं कि कुरान में कुछ भी तहरीफ नहीं, कुरान की मौजूदा तरतीब भी मिन् जानिब खुदा नहीं पहली सूरत 'अलिफ' है उसकी पहली आयत "इक्र बिस्मेरब्बेकल्लजी" है जो गार हिरा में उतरी। देखो उसका शाने नजूल। मालूम होता है कि जैद ने १० पारे निकाल दिये हैं क्योंकि ४० पारे का कुरान पटने की लाइब्रेरी में इस वक्त भी मौजूद है। इसके जवाब को जनाब पी गये !

१०--कुरान में एक किस्से को कितनी मरतबा दुहराया है, इसको कुरान के पढ़ने वाले अच्छी तरह जानते हैं। आदम और शैतान का किस्सा कितनी मरतबा दुहराया है। 'बमामलकतई मायकुम्' को कितनी मरतबा जोर देकर ऐयाशी का दरवाजा खोल दिया है।

सिजदे के माने अगर अताअत के हैं तो रसूल को भी सिजदा करना चाहिये। उस्ताद वगैरह जो कोई भी वाजिबुत्ताज़ीम हों सबही को सिजदा करना चाहिये। हिन्दू भी कहते

हैं कि हमारे ईश्वर ने मूर्तिपूजा की आज्ञा दी है फिर आप उसको कुफ्र क्यों कहते हैं ? देखना तो यह है कि गैरुल्ला को पूजना जायज़ है या नहीं अगर खुदा ने जायज़ ठहराया तो कुफ्र की तालीम दी।

जबकि अरब में मा बहन बेटी और सबसे निकाह जायज़ था तो क्या सबूत है कि जिनको तुम आला खान्दानी कहते हो उन्होंने ऐसा नहीं किया वह मा या बहन या बेटी से पैदा नहीं हुए ? क्योंकि इनको तो हज़रत ने हराम किया उससे पहले तो मुमकिन है उनके यहाँ भी ऐसा हुआ हो ? कुरानी आयत के शानेनज़ूल बता रहे हैं कि फलाँ आयत के उतरने की क्या वजह है। "वल्लो अशेहिम्" आयत का, जोकि सूरते मायदा में है, शाननजूल देखिये और उस पर तफ़सीर देखिये तो पता चल जायगा कि सगी बहन से शादी पहले जायज़ हुई या नहीं ? कुरान की यह रविश है कि जो २ बातें हराम ठहराई हैं वे सब ही हज़रत को कुरान से पहले हलाल थीं। वर्नः उनके हराम होने की ज़ुरूरत ही क्या थी ?

जबकि कुरान में यह लिखा है कि "अज़्रिब् बेअसाफल्‌ हज़र"—मगर अपने असा से पत्थर को "फ़अन् फजरत्" और फट निकले 'भिन् हो' = उस पत्थर में से "अस्नतेशा अशरतऐना" बारह चश्मे। यह वही आदमी के सर के बराबर पत्थर था, यही मूसा के कपड़े लेकर भागा था, यही हजरत शुएब से मिला था। इसही में बारह चश्मे निकले।

कहिए मौलवी साहब ज़रा पत्थर में डंडा मार कर आप बारह छोड़ एक ही चश्मा निकाल दें पहले हज़रत को यह आज़ादी थी कि जो औरत अपना नफ़्स बख़्शदे वह आपकी होगई लेकिन जिसने हिजरत नहीं की वह नफ़्स बख़्शने पर

भी हराम कर दी। और देखिये-"लार्यहिल्लो लकन निसाओ मिन वादो वलाअन तवद्दल वेहिन्न मिन अजवाजिम्वलो आजवक हुसनुहुन्न इल्ला २ मानलकत् यमीनुकं वफानल्लाहो अल्ला कुल्लो शैअन" इस आयत में हुक्म दे दिया कि अब नौ बीवियों से ज़्याद: मत करना चाहे तुमको हुस्न भी उनका अच्छा लगे लेकिन लौंडियों पर हाथ साफ किये जाना। दोस्ती का कुछ तो हक़ निभाया जावे! क्यों जनाब हसीन २ औरतें तो नबी के हिस्से में आजावें, रद्दी औरतें मुसलमानों के पल्ले पड़ें। आप तो आर्यसमाज पर एतराज़ कर चुके हैं कि हंस की चाल वाली वग़ैरह खूब सूरत औरतों से शादी करना स्वामी साहब ने क्यों बता दिया। जिस बात का आप एतराज़ करते हैं वह तो जनाब का नबी ही कर रहा है खुदरा फजीहत दीगरां रा नसीहत!

ऊंटनी का मौजिज़ा क्या माने रखता है? जरा बयान तो कीजिये ऊंटनी का ज़िकर बतौर मुअजिजे के कुरानो में किस लिये आया? जंगल और पहाड़ों में तो ऊंटनियाँ गधे घोड़े भेड़ बकरी सब ही निकलती हैं और दाखिल होती हैं। फिर कुरान ने इस बेकार बात का क्यों तजकरा किया? इस आयत की तफसीर और हदीसों को देखकर जवाब दीजिये। देखिये सूरतुल जारियति- "व फ़ी सयूदं इजकैलं लहुम्" बराय मेहरबानी इस आयत के टुकड़े का मतलब ज़ाहिर कीजिये।

जनाब जिसवक्त आयतें आती थीं उसी वक्त हाफ़िज़ नहीं याद करलिया करते थे। हाफ़िज़ लोग याद करलिया करते तो उसमान को इकट्ठा करना नहीं पड़ता। बल्कि जिसवक्त हज़रत आयात सुनातेथे उसवक्त तो अरबी लोग हँसी उड़ाया करते थे याद करना तो दूर किनार रहा। इस हँसी उड़ानेपरतो

अल्लामियाँको भी नोटिस लेना पड़ा चुनांचे देखिये सूरते बक़र "वला तक़ूलू राअ़ना वक़ौलु उन्ज़ुरना" यानी राअ़ना मत कहो उन्ज़ुरना कहो। राअ़ना हँसीमजाक़ और तन्ज़ का लफ़ज है आयत क़ुरानी उसवक्त तो ठीकरी और काग़ज़ या पत्तों पर लिखी पड़ी रहतीथीं। ज़ैद बिन साबित कातिब क़ुरानथा वहीं इन काग़ज़ वग़ैरह के टुकडोंपर से नकल करलिया करताथा। ऐसी हालत में उन पत्ते या क़ाग़ज़ को खाडालना कौनसी मुशकिल बात थी। ऊपर हम बताचुके हैं कि खुद बीबी आयशाही फ़रमाती हैं कि तख्त के नीचे पड़ी हुई आयत के काग़ज़ को गोस्पन्द खागई आप आयशाके कौलको नमानेंतो जाय तअ़ज्जुबहै। जो पत्तों वग़ैरह पर लिखी आयात थीं, और जो उस मानकी तवाज़ाद हैं वह और हैं। अगर उसवक्त क़ुरानके हाफ़िज़ होतेतो उसमानको जमाकरने की क्या जरूरतथी? मुसलमानों का एक फिरका भी ऐसाही मानताहै। इस फिर्के का नाम "अली इलाहियान" है। देखिये "ईं मसहफ़े कि दरमियानस्त अमलरा नशायद चे मसहफ़ें कि अली अल्ला व मुहम्मद दादह बूद नेस्त बल्के ईं तस्नीफ़े अबूबकर व उमर व उस्मानस्त आरे ईं मसहफ़ कलामे अलीअल्लाह अस्त लेकिन चुं जमाकरदह उस्मानस्त ख्वाँदन रा न सज़द। बाज़े अज ऐशाँ दीदः शुदन्द कि नज़्म वनसरे कि मंसूबस्तकि व अमीरुल मोमिनीन गर्द आवुर्दह दाखिल मसहफ़ कर्दह बूदन्द व आंरा तरजीह मे दादन्द बर मसहफ़ चे बेबास्ता ग़ैरी बख़ल्क रसीदह व फ़ुरकान बवास्ता मुहम्मद बदस्तमरियम आमूदह........इल्ला आंकि गोयंन्द मसहफ़ेकि अकनूँ दरमयानस्त कलामेअली अल्ला नेस्त चे शेखैन दर तहरीफ आं कोशीदन्द अंजामे उस्मान हमारा अफ़गन्द चूँ फसीह बूद मसहफ़े दर बराबर आं तसनीफ़ करदह फ़ुरक़ाने

असलीरा वसोख्त। वई तायफ़ा हरजाकि मसहफ़ यावन्द वसोजानन्द" ॥ देखो दविस्ताने मज़ाहब तालीम शिशुम् (६) सुफा २६६ सतर ३ से १० तक। छापा नवल किशोर॥ इसका उर्दू तर्जुमा भी मुलाहज़ा हो-"यह कुरान जो अब मौजूद है अमल के लायक नहीं। क्योंकि यह वह कुरान नहीं जो अली अल्लाह ने मुहम्मद को दिया था बल्के यह मसहफ (कुरान) अबूबकर और उमर और उसमान का तसनीफ किया हुआहै हां यह कुरान अलीअल्ला का कलाम है लेकिन जब उसमानका जमाकिया हुआ है तो पढ़ने के लायक नहीं (एक का क़ौलहै)। इन्हीं में से बाज़े ऐसे देखे गये कि जिन्होंने अमीरुल मोमिनीन अलीकी नज़म व नसर को दाखिल कुरान कियाहै बल्के उसको कुरानपर तरजीह देते हैं क्योंकि यह बिलावास्ता ग़ैर अली अल्लासे खल्क को पहुंची और कुरान बज़रिये मुहम्मदके। इनमें से एक गिरोह उलूइया कहलाताहै जो अपने को अली की नसलसे जानतेहैं, अक़ायदमें गिरोह मज़कूरके शरीक हैं लेकिन यह कहते हैं कि वह मसहफ़ (कुरान) जो मौजूदहै अली अल्लाका कलाम नहीं क्योंकि शेखै न ने उसमें तहरीफ करदी है यानी बदल दिया है आख़िर उसमानने सबको दूर करदिया जबकि वह फ़सीह था उसने कुरान के बराबर दूसरा तसनीफ़ करदिया और असली कुरान को जलादियाहै। यह लोग जहां कुरानको पातेहैं जला देते हैं"॥ दबिस्तानेमज़ाहबका उर्दू तर्जुमा-फसल ७ सुफ़ा ३३० सतर ८ से २० तक। मतबा मित्रविलास लाहौर १८९६ ई० में छपी। बार अव्वल।

जबतक हज़रत ज़िन्दारहे कोई भी दौर करले चाहे जिबराईल चाहे कोई दूसरा शख्स लेकिन बाद वफ़ाते हज़रत कुरान तो जलादिया और बयाज़े उसमानी बाकी रहगई। वहभी

कोड़े मार २ कर लोगों को याद कराई गई। इसका सुबूत हम पहले देचुके हैं। मौलवी साहब इसपर बहुत ज़ोर देते हैं कि कोई मंसूखशुदा आयत दिखाओ। हम ऊपर बहुत कुछ दिखा चुके हैं। लेकिन जनाबकी तसल्ली के लिये और भी दिखाते हैं "वइँ ल्लैसं लिल् इन्साने इल्ला मासआ।" सूरए नज्म रुकू २ तफसीरहुसैनी और तर्जुमा उर्दू तफसीर क़ादरी जिल्द २ सुफा ४८२ सतर २१ से तर्जुमे के बाद है कि "तबियातमें है कि यह आयत मंसूख है इसवास्ते कि सूरए तूरमें मज़कूर हुआ कि औलाद को बाप दादा की नेकी के सबबसे दर्जे की बुलन्दी इनायत करेंगे"। क्यों जनाब अबतो आपका ही मुफस्सिर कुरान कहता है कि यह आयत मंसूख है। कुछ और भी बाकी रहा? वह सूरतुल तूरकी आयत यह है— "वत्तबअतहुम् ज़ुर्रियतहुम् बईमानिन् अलहक़्म नाबे हिम् ज़ुर्रियतहुम् व मा अलतनाहुम् मिन् अमलेहुम् मिन् शैअन्" ॥

मतलब यह है कि हम बहिश्तमें बाप दादों के दर्जों के बराबर औलादको भी दरजा देंगे। इन दोनों आयतों में इखत-लाफ है। इस ही वजह से कुछ मुफस्सरीन पहली आयत को मंसूख बताते हैं। कुरान की आयत पत्तोंपर बही लिखी गई इसके सुबूतमें मौ० साहब फरमाते हैं कि मुहम्मद साहबकी लाइफका सुफा २१ देखो जनाब देखलिया। यह जुमला कि "सारा कुरान या क़रीबन् सारा" बता रहा है कि सबके लिखे जानेमें मुसन्निफ को भी शक है तब ही तो 'करीबन्' लफज लिखता है वर्न इसकी कोई ज़ुरूरत नहीं थी। इससे ज़ाहिर है कि कुछ नहीं भी लिखाथा उसको बकरी खागई। मामला साफ है। मौलवी साहब फरमाते हैं कि "कुरानमें यह नहीं लिखाकि गाय का अजव छुआकर कातिल का पता लगाया है" फ़ुकुल

नर्ज़रिवू हो" फिर कहा हमने मारा उस मक़तूल को 'बेबाजेहा' साथ एक टुकड़ेके उस बछड़े मेंसे कि वह दुमकी जड़ थी या जुबान था कान"। सूरते बक़र तर्जुमा शाह अबदुल कादिर साहब। जिल्द १ सुफा १८ सतर ४। अब भी आप यही कहे जायेंगे कि कुरानमें ऐसा नहीं है। आप इंकार करते जायें हम दिखाते जायेंगे

मौलवी साहब आपभी ग़ज़ब करते हैं! कहाँ जर्मन लोगों की साइंस के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ात और कहाँ क़ुरान? भला क़ुरान को इल्मो अक़्ल से क्या वास्ता? किस डाक्टर ने मक़तूल को गोश्त के टुकड़े से ज़िन्दा किया? जनाब कोई हवाला तो दिया होता या "बाबा वाक्यं प्रमाणम्" ही से काम चलाइयेगा?

आप फ़रमाते हैं कि "इन्सान इस जिस्म से बन्दर और सूअर नहीं बनाया गया"। हमभी तो यही कहते हैं कि इस जिस्म से नहीं बनायागया बल्के तनासुख़ के ज़रिये दूसरा जिस्म देकर बन्दर बनाया। जादू वह जो सरपर चढ़कर बोले। हमभी तो "कूनू क़िरदतन् ख़ासईन" के यही माने करते हैं कि ख़ुदाने कहा जाओ ज़लील बन्दर होजाओ। यही आप कहते हैं। आपके मुँह में घी खाँड।

आप फ़रमाते हैं कि "शक़्क़ुल्क़मर का होना क़ानूने क़ुदरत के ख़िलाफ़ नहीं" क़ुरान के नज़दीक तो क़ानून के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं! चाहे वह आसमान की खाल उतारना कहदे चाहे जालीदार कहदे चाहे बुरजों वाला कहदे। चाहे आसमान का लपेटना कहदे। चाहे आसमानका गिरना कहदे। चाहे ज़मीन की मेख़ें पहाड़ों को बतादे। चाहे आसमान पर हज़रत का जाना बतादे। गर्ज़ यह है कि बेपढ़ा लिखा कुछभी कहदे

उसको सब मुआफ़ है। अदालतों में भी मुंसिफ़ के या जजके सामने कोई भी वेपढ़ा ऊटपटाँग बात कहदे हाकिम हँसकर टालदेते हैं। जमाने जहालत में तो कोल्हू को भी अल्ला मियाँ का खुरमादाना मानलिया था! हाथी के पैरके निशान को भी हिरन के पैरमें बंधीहुई चक्की के पाटों का निशान मानलिया था! लकड़ी के चिरने पर उसके बुरादे को चाँद की घुनन मान लियागया था ऐसे उस्तादों के हमजमाना लोग अगर चाँद का फटना मानलें तो तअज्जुब नहीं है। मौलवी साहब यह सबक़ अरब की झोंपड़ियों ही में जाकर अरबी लोगों को सिखाइये। यहाँपर बालकी खाल निकलती है! फ़ल्सफ़े की रोशनी में यह हथफेर नहीं चलसकता। रसूल के मोअजिज़े की बाबत हम अलहदा लिखेंगे।

जनाब फ़रमाते हैं कि "आसमान की खाल खेंचने से मुराद आसमानी उलूम की माहियत वगैरह जानना मुराद है"। वाह जनाब पेशीनगोई तो बड़ी माकूल है बचिये क़यामत आई देखिये इस वक्त आसमान की हक़ीक़त साइन्सदाँ जानगये हैं! मौलवी साहब! इस मुलम्मेसाज़ी से कहीं क़ुरान की हक़ीक़त छुपी रहसकती है। आप जवाब देते वक्त ऐसा आगा पीछा भूलजाते हैं कि मामूली अक्ल को भी बालाय ताक़ रख देते हैं? सुनिये "बालकी खाल निकालना" यह पूरी मिसाल बेजा नुकता चीनी के लिये दुनिया में कही जाती है नकि सिर्फ़ बाल की ही खाल निकालने या बालकी हक़ीक़त जानने के लिये अगर ऐसा होता कि 'आसमान की माहियत में बालकी खाल खेंची जायगी' तबतो आपका कुछ ठीक भी होता। जब आप दुनियवी मिसालों के मतलब से इतने नावाक़िफ़ हैं तो इल्मी मसाइल तो आपके नज़दीक फटकने भी नहीं पायेंगे। जनाब

यह निशानियाँ क़यामत की हैं देखिये पारह ३० सूरए तक्वीर की पहली आयत "इज़श्शम्सो कुव्विरत्" जब आफ़्ताब लपेटा जाए, "वइज़ल्लोनुजूमुन् कुदरत् "-और जब सितारें गदले होजायें, "वइज़ल् जिबालो सुयिरत् "-और जब पहाड़ अपनी जगहोंसे उखड़कर चलें ऐसीही निशानी बयान करते हुए आगे कुरान ने कहा कि "वइज़स्समाओ कुशेतत् " जब आसमान की खाल खेंची जाय। क्यों जनाब अगर इस वक्त खुदाकी पेशीनगई साबित होरही है तो पहाड़ भी उड़ रहे हैं रुई की तरह उड़ रहे हैं ? सितारे गदले होरहे हैं ? आफ़ताब लपेटा जारहा है ? क्योंकि बक़ौल जनाब के यह पेशीनगोई पूरी होरही हैं यानी ईश्वर की तहक़ीकात होरही है ! ग़ज़ब खुदा का कितना सरीह बुतलान तौबा तौबा !!

मौलवी साहब फ़रमाते हैं कि खुदा का आग में से बोलना कुरान करीम में कहीं नहीं लिखा। आयत तहरीर करें।

लीजिये जनाब आयत लीजिये -- "फ़लम्मा अतुहा नूरियं यामूसा इन्नी अना रब्बोका फ़ज़ल अ नालैक। सूरते तालहा।

नेस्ती से हस्ती नहीं हो सकती। यही मुराद है। आपके ख्यालात के बमूजिब खुदा ने नेस्ती से हस्ती को पैदा किया जो अज़रूए फ़लसफा मुहाल है देखिये-

Science is compitent to reason upon the creation of matter itself out of nothing. इनसाइक्लो पीडिया जिल्द ३

नवां एडिशन सुफ़ा ३६ से ५८ तक का खुलासा

स्वामी जी महाराज ने वेद भगवान् के हवाले से अव्यक्त (प्रकृति) का खण्डन नहीं किया बल्के मौजूदा अनासिर के

अणुओं का खण्डन किया है। जिनसे यह अणु बने हैं उस की तरदीद नहीं है। पैदा शुदा शै हमेशा रह नहीं सकती। खुदा का यही कानून है।

याजूज माजूज

दुनिया में चाँद सूरज ज़मीन सितारे आसमान सब कुछ हैं। लेकिन सवाल यह है कि कुरान के मुसन्निफ ने उनकी निस्बत क्या ख्यालात ज़ाहिर किये हैं? उनकी हस्ती से किसको इन्कार है! इसही तरह याजूज माजूज भी दो कौमे हैं लेकिन सवाल तो यह है कि मुसन्निफ कुरान उनको क्या समझता है? याजूज माजूज की निस्बत तो कुरानी ख्यालात मुन्दरजे जैल हैं —"कालू या जुलकरनैन इन्ना याजूज व माजूज मुफ़सिदून फिल अर्जे"। सूरते कहफ़। इसपर देखिये तफ़सीरहुसैनी जिल्द २ सुफा १८—"दर पनुल माशी आवुर्दह कि आदम रा पहतलाम शुद व मनी ओ बखाक आलूदह गश्त आदम अजाँ हाल अन्दोहनाक गश्त हकताला ईं दो कौम (याजूज व माजूज) अजाँ खाक आलूदह मनी अब्बुल बशर बयाफरीद और देखिये तफसीर कादरी-ऐनुलमानी में लिखा है कि आदम अलस्सलाम को पहतलाम हुआ (वीर्यपात 'स्वप्नदोष' हुआ) और उनकी मनी खाक में मिली तो उनको इस बात से रंज हुआ हकतालाने उनकी खाक आलूदा मनी से दोकौमें पैदा करदीं। और जो लोग कहते हैं कि अम्बिया अले हिस्सलाम को पहतलाम नहीं होता उनके नजदीक यह कौल जईफ़ है और उस कौम के लोगों की शक्ल और सूरतों में इख्तलाफ है। हजरत अली करम अल्ला वजह से मनकूल है कि उनमें से बाजों के कद बालिश्त भर के हैं और

थाजों के कद बहुत लम्बे लम्बे और हदीस में है कि...... और एक किस्म के लोग ऐसे हैं कि एक कान का ओढ़ना और एक कान का बिछौना करते हैं। तफसीर कादरी जिल्द २ सुफा ६ सतर १२ छापा नवलकिशोर जामए तिरमिजी में है कि दस हिस्से इंसानों में नौ हिस्से याजूज माजूज हैं देखो "अल्जिन्न वल इन्स अशर अंजजा" वगैरह तिरमिजी सुफा ६३॥ मुतरज्जिम जामए तिरमिजी यह भी लिखता है कि उनमें से जबतक अपने एक हजार लड़के न देख ले कोई मरताभी नहीं। अब बताइये कि ऐसी दुनिया में कौन सी कौम है? सूरतुल अम्बिया में भी कयामत की निशानी बताते हुए लिखा है -"हत्ताइजा फुतेहत् याजूजो व माजूजो" यानी यहाँ तक कि खोल दिये जायें याजूज माजूज।

इल्हामी किताब और दुनिया मानिन्द जुगराफिये और नकशे के हैं। अगर नकशे के खिलाफ़ जुगराफिये में अहवाल दर्ज हैं तो वह जुगराफिया हरगिज इतमीनान के काबिल नहीं। अगर कुदरत के खिलाफ कुरान में दर्ज है तो वह कलामे रब्बानी नहीं है। अगर कर्म करने के बाद शकी और सईद होता है तो रसूल के पहले कौनसे कर्म थे जिनकी वजह से वह सरवरे कायनात हुए? जन्नत के हूरो गिलमा बिना कर्मों के जन्नत में क्यों हैं? अन्धे और लूले लँगड़े पैदायशी क्यों होते हैं? हमल में ही बच्चे क्यों तकलीफ पाकर जाया हो जाते हैं? जनाब बात तो यह है कि कर्मफिलासोफी से कुरान को कोई तअल्लुक ही नहीं है।

जब रसूल उम्मत का बाप है तो उसकी उम्मत की लड़कियाँ रसूल पर हराम क्यों नहीं? अगर रसूल के नुतफे से पैदा न होने की वजहसे हराम नहीं तो उम्मत के मर्द भी रसूल

की वीवियों के पेट से पैदा न होनेकी वजह से सगे वेटे नहीं होसकते इसलिये रसूल की वीवियों को अम्महात मोमिनीन कहकर उम्मत पर हराम करने का कोई सवव नहीं है ।

जनाव मौलवी साहव ! मुक्ति में यह जिस्म- कसीफ़ नहीं होता जो वूढ़ा हो । सवाल तो आपके फ़रज़ी जन्नत पर है ।
"खूव देखी है जन्नत की हक़ीकत लेकिन, दिलके वहलाने को गालिव यह ख्याल अच्छा है"

अल्लामियां का हुलिया—

अल्लामियाँ तख्त पर वैठे हैं, चार फ़रिश्ते तख्त को उठा रहे हैं । क़यामत के दिन आठ फ़रिश्ते तख्त को उठायेंगे अल्लामियाँ का तख्त पानी पर है । अर्शपर वैठेहुए लोगोंपर गन्दगी फेंकरहे हैं । कभी आगकी शक्ल इख्तयार करलेते हैं । अल्लामियाँ का नूर कन्डील के चिराग़ की मानिन्द है । कभीर लोंडा वनकर अपने भक्तों को दर्शन देते हैं । क़यामत के दिन पिंडली खोलकर दिखायेंगे । दुनिया पैदा करनेसे पेश्तर अदम महज़ के मालिक थे । छै दिनमें दुनिया पैदाकरके सातवें दिन आसमान पर जा विराजते हैं । हज़रत से फ़रिश्तों की वावत सवाल करते हैं । हज़रत के दोनों शानों के वीच अपनी हथेली रखते हैं । हज़रत को अच्छी सूरत में दर्शन देते हैं । हज़रत और फ़रिश्तों से मुवाहसा कराता है । अल्लामियाँ अपने ऊपर सलाम भेजरहे हैं । लाइल्मी से पचास वक्त की नमाज़ नाक़ाविल अमल वयान कर रहे हैं । यह है अल्लामियाँ का मोटा हुलिया । कभी २ आप वीमार भी होजाते हैं और शिकायत करते हैं कि तू मुझे देखने नहीं आया । मैं भूखा था, प्यासा था मुझे आवोदाना नहीं दिया वग़ैरह २ । इन सवके किताबी सुवूत आगे हम वयान करेंगे ।

कुरानी उसूल के मुआफ़िक़ इन्सान हरगिज़ फ़ेल मुख़्तार नहीं है। अल्लाह जिसको चाहता है राह दिखाता है जिसको चाहता है गुमराह करता है। इल्लते ऊला का यही मतलब है कि हरशैकी इल्लत खुदाही हो। अगर वह मुक़द्दर की इल्लत नहीं तो इल्लते ऊला नहीं रहा। हम ऊपर बतला चुके हैं कि कुरान इल्मी फ़लसफ़े से सैकड़ों कोस दूर है। अन्धे लूलों की मिसाल से समझ लीजिये कि कुरान को कर्म फिलासोफ़ी से कितना तअल्लुक़ है? इन्सान तो कठपुतली के मानिन्द है खुदा उसको जैसा चाहता है वैसा नचाता है। हम बहुत सी शहादतें कुरान से पेश करते हैं जिनसे बखूबी साबित हो सकता है कि कुरानी उसूल के मुआफ़िक़ इन्सान अपनी क्या पोज़िशन रखता है। मुन्दरजा ज़ैल हवालेजात पर जनाब ग़ौर फरमायें—

(१) वख़ुलक़ल इंसानो जईफ़न्॥ सू० निसा। इन्सान को जईफ पैदा किया।

(२) वल्लिाहो युजक्की मैंयशाओ॥ „ „ । अल्लाह जिस को चाहता है बख़शता है

(३) कुल् कुलुमम् मिन् इन्दिल्लाहे॥ „ „ । कह सब खुदाकी तर्फ़से है (नेकी और बदी)

(४) वमैं युदले लिल्लाहो फ़लन्तजेदलहू सबीलन्॥ जिसको अल्लह भटकावे वह राह न पावे।

(५) यह्दिल्लाहो लेनूरेही मैं यशाओ॥ नूर। अल्लाह जिसको चाहता है रौशनीकी राह देता है

(६) मे यह्दिल्लाहो फ़हुवल मुह्तदी व मैंयुदलिल फ़उलाइक हुम्मल् ख़ासिरून॥ सू० ऐराफ़ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत करता है जिसको चाहता है गुमराह करता है पस यह लोग वही ख़िसारा पाने वालों में से हैं।

(७) वलक़द ज़ारनं लेजहुन्नम कसीरम् मिनल जिन्नेवल इन्से० ऐराफ़ । हमने बहुत से इंसान और जिन्न दोज़ख़ के लिये बनाये हैं।

(८) ख़तमल्लाहो अला कुलूवेहिम् व अला समू इहिम् व अबसाअरन ग्शारे हिम् गिशावुन् । बक़र अल्लाहने उनके कान और आंख पर मुहर करदी ।

(९) फी कुलूवेहिम् अरज़ुन् फ़ज़ादहुम् अल्लाहो अरज़ुन्॥ उनके दिलमें मर्ज़ था अल्लाहने मर्ज़ बढ़ादिया ।

(१०) वल्लाहो यख़तस्सो वेरहमतही मैं यशाओ ॥ अल्लाह ख़ास करता है अपनी मेहरसे जिसको चाहे ।

(११) व यहदी मैयशाओ ॥ यूनुस इलेहल्ला सिरातिम्मु स्तक़ीम ॥ और राह दिखाता है जिसे चाहता है तरफ़ सीधी राह के ।

(१२) क़ुल्ला अम्लेको ले नफ़सी ज़र्रवला नफ़आ इल्ला माशाअल्लाहो । यूनुस । कह कि नहीं हूं मैं मालिक अपनी अपनी ज़ात के वास्ते नुकसान का औरन नफे का मगर जो कुछ चाहे खुदातआला ।

(१३) फ़ इन्नल्लाह युज़िल्ले मैं यशाओ व यहदी मैं यशा ओ ॥फ़ातिर । तौ वेशक अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता ह ।

इस ही तरह पर इनआम, रूम, राद, एराफ़ और हज वग़ैरह सूरतों में इस किस्म की बहुत सी आयात हैं जिन से साबित है कि विना खुदा की मरजी के इंसान नेकी वदी का ख्याल भी नहीं कर आप वार २ क़ुरान का मुक़ाविला वेदों से करते हैं । कहां राजा भोज, कहां गंगा तेली । कहां रुद्रके यह मानी कि बुरे आमाल की वजह से दुष्टों को दुःख देकर रुलाने

था जा और कहां बिला वजह अमीर गरीब कोढ़ी अन्धे पैदा करने वाला कह्हार और जब्बार।

मुन्दर्जे बाला आयात से साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह इंसानों को नेक बनाना चाहता तो बना देता लेकिन नहीं चाहता लिहाजा पाप पुण्य सब खुदा के जिम्मे हैं। तावीलात आपकी सब फिजूल है। खुदाताला को क़यामत का इल्म होता तो कुरान में जाहिर न करता। जनाब जिसने दुनिया पैदा की है उसको इल्म होता है। न खुदाये कुरानी ने दुनिया पैदा की न उसको इल्मे क़यामत है। वैदिक ईश्वर ने दुनिया पैदा की है इसलिये उसको कयामत का इल्म भी है। यह बातें वेद से मालूम हासकती हैं। मालूम हुआ कि कुरान सिर्फ मुहम्मद साहब की कौम के ही लिये है नकि तमाम दुनिया के लिये। तब ही तो फरमाते हैं कि "उन बातों का बयान किया है कि जिनका कौमी इसलाह और तमद्दुन के लिये बयान करना जरूरी है।" जो आप कहते हैं वही कुरान कहता है "वले युजिर उम्मल कुरा वतिन् हौलहा।" इनआम। जब ही तो हम कहते हैं कि कहां सिर्फ कौमी इस्लाह करना और कहां सारे संसार के लिये हिदायत?

मौलवी साहब फरमाते हैं कि "तमाम उसूले हकीकी का मख़ज़न कुरान है"।

जनाब! जब कि मुसन्निफ़ कुरान ही उसूले हकीकी से वाकिफ नहीं तो कुरान में उसूले हकीकी कहां से आये? क्या जानवरकुशी, पराई औरतों से बिला निकाह जिना करना, खुदा को मक्र और क़ैद का पाबन्द बताना, खुदा को एक महदूद अर्शपर फरिश्तों के कन्धों पर बिठाना, फरजी बहिश्त बता कर अरबी लोगों को लूटमार के लिये आमादा

करना, किबले की परस्तिश कराना, संगे असवद को बोसा दिलाना, रसूल का नाम इबादत के साथ लिवाना, बिना नेको बद आमाल के सजा व जज़ा देना 'शैतान से आदम को सिजदा कराना, कस्में खाकर इस्लाम को फैलाना, उठा बैठी के तरीके से इबादत का कराना, नेकी और बदी का मूजिद खुदा को बताना, छः दिनमें दुनियां को पैदा करके सातवें दिन आसमानपर जा बैठना, इंसानों पर गंदगी फेंकना, रसूल की औरतों के झगड़े में पड़ा रहना, खुदा को लड़ाका बताना आदम को नेकी से महरूम रखना, क़यामत के दिन आठ फ़रिश्तों के कन्धों पर बैठकर मैदानेहशा में वारिद होना और हज़ारों बातें अक्ल के खिलाफ कहना जैसे आस्मान की खाल खेंचना आसमान को लपेटना, उसको जालीदार कहना, बुरजों वला कहना वगैरह। अगर यही इल्म हकीकी है तो ऐसे कुरान को जनाव जुजदान में बन्द करके आप ही अपने पास रक्खें। दुनियां को ऐसे इल्मे हकीकी जरूरत नहीं है।

जनाव ने कोई आयत पेश नहीं की कि जिससे साबित होकि वक्ते जरूरत शादी करे।

तमाम उसूले माशरत का दावा होते हुवे भी रसूल की बीवियों में रातदिन दंगा फ़िसाद रहता था। क्या यही उसूले माशरत कहाते हैं? क्या यह भी कोई उसूले माशरत हैं कि मनकूहा बीबी की गैर हाजिरी में लौंडी से माशरत करे। जिस खूबसूरत औरत को देखे कहदे यह मेरी है। नौ बरस की लड़की से मुबाशरत करना भी कुरानी उसूल हैं!

कुरान में फ़लसफ़ा

कुरान में फलसफा और अक्ल की बात ढूंढना मानो गधे

के सींग टटोलना है। कुजा अक्ल और कुजा कुरान? देखिये आपका हम मजहब मुसलमान ही किस तरह कुरानी फलसफे की हकीकत बयान कर रहा है–मुलाहज़ा हो तहज़ीब अख़लाक जिल्द २ नं० ४ राकिम आनरेबिल सैयद अहमद साहब "यह बात जाहिर है करूने सलासा में उलूमे अकली का कुछ चर्चा न था। हिकमत और फ़लसफे यूनान से कोई वाकिफ न था मगर बाद उसके वह जमाना आया जिसमें मसायल फ़लसफे का जारी होना शुरू हुआ। आखिर उसकी यहाँ तक तरक्की हुई कि वह मसायल दीन में दाखिल होगये और मजहबी किताबों में उनपर बहस होने लगीं। और रफ़े २ यहाँ तक नौबत पहुँची कि उनसे तफ़सीरें भर गईं। और जिस तरह तफ़सीर में अक़वाल पैगम्बर व असहाब की नकिल की जाती थी उसी तरह अफ़लातून और अरस्तू वग़ैरह के कौल नकिल करने लगे और जब यह सिलसिला जारी हुआ तो हरएक मुफ़स्सर ने दूसरे मुफ़स्सिर से और दूसरे ने तीसरे से उसका नकल करना या इन्तखाब करना शुरू किया और उन कौलों के कायलीन का नाम लिखना भी छोड़ दिया यहाँ तक कि वह अकवाल तफ़सीरों में ऐसे मिल गये कि लोगों को तमीज़ करना मुशकिल होगया कि यह कौल अरस्तूका है या साहबे शरीअत का या किसी सहाबी या किसी इमाम का और इसीवास्ते उन कौलों पर दीन का मदार ठहर गया"। और भी मुलाहजा हो तहजीब अख़लाक जिल्द २ सुफा १८६ "वजूदे समवाते सबअ के अबताल पर जो दलायल हैं उनकी तरकीब किस किताब में लिखी है? और असबाते हरकते दौरी आफताब पर जो दलील हैं उनकी तरदीद किससे जाकर पूछें? अनासिर अरबा का

गलत होना जो अब साबित होगया उसका इलाज अब क्या करें ? आयत करीमा "वलक़द् ख़लक़नल् इन्सान मिन् सलालत मिन् तीन"..........की जो तफ़सीर आलिमों ने लिखी हैं फ़ने तशरीह की रूसे वह ग़लत मालूम होती है। हम अपनी आंखों से बोतलों में भरे हुए नुतफे से लेकर बच्चे के पैदा होने तक तगय्युरात को देखते हैं जो मुफस्सिरों की तफ़सीरों की गलती को साबित करते हैं। फिर हम क्यों कर इसपर एतमाद रक्खें ? खुदा की बात और उसका काम एक होना चाहिये यह मसला तमाम दुनिया ने तसलीम कर लिया है। फिर इसकी तसदीक मजहब इस्लाम की किस किताब में ढूंढे ? और किस मुल्लाह और ख्वाँदह से पूछें ? जब कोई बात भी इनमें से मौजूदह कुतुबे मजहबी में नहीं तो उनसे लामजहबी जो फ़लसफे मग़रबिया और उलूमे मुहक्किका जदीदा से होती है क्योंकर रफा होगी ? पस इन किताबों का न पढ़ना उनके पढ़ने से हजार दर्जा बेहतर है"। और भी मुलाहज़ा हो-तहजीब अख़लाक जिल्द १ नं० ३- हैयत और तबीआत वग़ैरह सदहा इल्म इस क़िस्म के हैं कि जिनकी तालीम के वास्ते न आज तक कोई नबी मब्ऊस हुआ न कोई किताब इस फने खास में खुदा तआला ने इस वक्त तक किसी नबी पर नाज़िल की। क़ुरान व हदीस में हैयत या तबीयात के मुतअल्लिक़ कहीं किसी चीज का नाम आगया कहीं तज़करा और कहीं आम लोगों की फ़हम के लायक़ किसी चीज का कोई मुख़्तसिर बयान होगया कहीं कोई मुहमिल इशारा किसी चीज़ की तर्फ हुआ मगर हाशाकि किसी मुक़ाम पर भी इन बयानात से मक़सूद बिज्ज़ात मद्दे-नज़र नहीं हुई कि इनके ज़रिये से आम्मा ख़लायक को

हैयत और तबीआत की तालीम को दिया जावे। (कुरान में है) "ऐ मुहम्मद लोग तुझ से, महीनों की हकीकत दरयाफ़्त करते हैं कहदे कि महीनों के जरिये से लोग अपने वक्तों का हिसाब ठीक करलेते हैं" आज किसी अदना हैयतदां से अह. लाकी हक़ीकत दरयाफ़्त कीजिये फिर देखिये वह कैसे ज़मीन और आसमान के कुलाबे मिलाता है। हिसाब के मामले में पैगम्बर खुदा ने यह फरमाया और उस वक्त में इस पर फख्र किया कि गिन्ती को हम उँगलियों पर ठीक करलेते हैं। हासिल यह है कि उस वक्त में हिसाब और रियाजी व तबीआत वग़ैरह की तरफ़ किसी को मुतलक इल्तफात न था"। कुछ और भी मुलाहजा हो—

तहजीब अखलाक़ जिल्द २ नं० ७ "अंगरेजी उलूम तहसील करने को मुतअस्सिब भाई मुसलमान एक गुनाह समझते हैं, हालां कि खुलफाय बुगदाद के जमाने में जिस कदर उलूम अरबी में आया वह सब जुबान ग्रीक यानी यूनानी से तर्जुमा किया गया और उस जमाने के अकसर उलमाए ग्रीक को जो कुफ्फार की जुबान थी बदर्जे तकमील तहसील करते थे। अगर ऐसा नहोता तो जिस कद्र तिब्ब हमारे यहाँ मौजूद है कुछ न होती। और फ़लसफ़ा और मन्तिक का तो नाम भी न होता"।

कहिये जनाब! उड़गया कुरान से फलसफा और मन्तिक जैसे गधे के सर से सींग उड़जाते हैं?

मुसलमानों ने इल्मे फलसफ़ा व मन्तिक आर्यों से सीखा—

मुलाहजा हो किताब साइन्स आफ लाजिक-कवायफुल

मन्तिक मुसन्निफे पादरी टी. जी. स्काट साहब M. A, D. D. फैलो आफ़दी अलाहाबाद यूनीवर्सिटी तीसरा पेडीशन सुफ़ा १० पैरा ४—

Logic is a very ancient scienco, and in ancient times is faund only among two nations, the Greeks and Hindoos. All other nations seem to have received the science from them. It is not certainly known whether the Greeks received it from the hindoos, or the Hindoos from the Greeks. Some learnud men have thought that the Greeks received their knowledge of logic from the Hindoos while others have thought not.........The Arabs also received their knowledge of logic from the Greeks, while the Jems learned from the Arabs..........
The works of Arastolte were translated in to Arabics in the second century after Muhamed, and thus as stutied among the Musalmans also is that logic of Aristotle.

इस इबारत से साफ जाहिर है कि पढ़े लिखे यह जरूर अपनी राय रखते हैं कि हिंदुओं से ही सारी दुनियां में फलसफा और साइन्स फैला। हजरत मुहम्मद साहब की वफ़ात के दो सौ बरस बाद फलसफा अरब में आया; वह भी यूनानियों से। फिर कुजा कुरान और कुजा फलफ़ा ? नजूले कुरान के वक्त तो अरब वाले कोरे दिमाग वाले थे, फिर कुरान में अक्ल की बातें कहाँ से लाते?

अगर आप फरमायें कि अहले अरब में अक्ल नहीं थी तो

क्या खुदाए कुरानी में भी अक्ल नहीं थी? इसका जवाब आपके हममज़हब सैयद साहब दे चुके हैं कि खुदा के कौल और फ़ेल में फ़र्क है। क्या आप उसको भी आक़िल कहेंगे जिसके कौलो फ़ेल का एतबार नहीं? लिहाजा साबित हुआ कि न अरब वाले फ़लसफ़ा जानते थे न अरबी रसूल न खुदाए कुरानी। हज़रत के जमाने में निरे कोरे ही अरब में बसते थे। और भी आगे मुलाहज़ा हो—

तहज़ीब अख़लाक़ जिल्द ४ नं० ५ " हमारे बुज़ुर्गों का ग़ैर कौमों से उलूम सीखना और मुसलमानों में फैलाना तवारीख़ से बखूबी साबित है। यूनान, सुरयानी संस्कृत से उलूम का अख़ज़ करना मिस्ल आफताब के रौशन हैं" आगे और ग़ौर कीजिये—जिल्द ४ नं० ७—" यूनान और हिन्दुस्तान से हर क़िस्म के उलूम और फ़नून को मुसलमानों ने हासिल किया, और यह तरक्की करीबन ६०० हिजरी तक जारी रही। फिर यह कौम एक उछाले हुये पत्थर के मानिन्द नीचे को चली आई।" आगे कुछ और बढ़िये—जिल्द ४ नं० १३ " सब अहले इस्लाम जानते हैं कि हमारी कौम के आग़ाज़ को तेरह सौ बरस के करीब गुजरे हैं। यह कौम एक ऐसे मुल्क में थी जहां दर हकीक़त उलूमे अक़ली का नामों निशान भी नहीं था।" कहिये जनाब ऐसे बे अक्ल मुल्क में किसी ढकोसले को फैला देना कौनसी बड़ी बात है? तभी तो हम कहते हैं कि कुरान को इल्मो अक्ल से कोई वास्ताही नहीं। अपने हममजहब मौलवी अलताफ हुसैन साहब के रिसालये मख़ज़नुल उलूम की जिल्द ७ नं० ११ भी मुलाहजा हो—

" हिन्दुस्तान के कदीम बाशिन्दे हिन्दू हैं उनके बुज़ुर्गों का हाल जो तारीख़ में देखा जाता है उससे इस गिरोह की

कमाल काबिलियत व इस्तअदाद ज़ाहर होती है। हिन्दुओं के क़दीम तबकोंने उलूमे हुकमिया में बड़ी २ तरक्कियां की हैं। चुनाँचे सूर्यसिद्धान्त, जो आम मुवर्रिखों के नजदीक पांचवीं या छठी सदी ईसवी की तसनीफ़ मानी जाती है, इसमें इल्मे मुल्सका बयान ऐसा पाया जाता है जिससे उनको (हिन्दुओं को) यूनानियों पर ही तरजीह नहीं देसकते बल्के कह सकते हैं कि इसमें बहुत से सवालात ऐसे हैं कि जिनका इल्म उमूमन अहले यूरुप को सोलहवीं सदी तक हासिल नहीं हुआ था।"

कहां तक लिखें दुनिया की हर कौम का हर अक्लमन्द इस बात को तसलीम करता है कि आर्यावर्त जैसा आलिम कोई मुल्क नहीं और अरब जैसा बेइल्म कोई मुल्क नहीं जहाँ से क़ुरान की उपज है।

क़ुरानी अक्ल और फ़लसफ़ा—

१—क़ुरान कहता है कि मसीह क्वारी से बिना बापके पैदा हुये। देखो तहरीम, मरियम की सूरत।

२—जमीन का चपटा और हमवार होना, और न चलना, पहाड़ों का मेखों की मानिन्द होना।

३—खुदा की बातें सुनने के लिए शैतान का आसमान की तरफ जाना और फरिश्तों का आग के गोले मारना।

४—याजूज माजूज को बताना कि एक बालिश्त के हैं कानों को ओढ़ते बिछाते हैं।

५—असहाबे कहफ़का सदहासाल तक सोते रहना। (यह कानून कुदरत का जानना है)

६—सिकन्दर ज़ुलकरनैन का सारी दुनिया को जीतना (यह क़ुरान का तवारीखी इल्म है।)

७—सात आसमान और सात ज़मीनों का होना । (यह क़ुरानी हैयतदानी=ज्योतिष की विद्या है)

८—जिनों की हस्ती को बताना और उनका हज़रत पर ईमान लाना।

९—कोहक़ाफ़ का तमाम ज़मीन के चारों तरफ़ होना। उसका सिकन्दर से बातें करना। देखो मसनवी रूमी दफ़्तर चहारुम।

१०—चाह बाबुल में हारुत मारुत का क़ैद होना और लोगों को जादू सिखाना।

११—शैतान को मुहलत देना कि वह क़यामत तक दुनिया को गुमराह करे।

१२—शक़्क़ुलक़मर का होना।

१३—आसमानों का जालीदार होना।

१४—आसमानों का लपेटा जाना।

१५—आसमानों की खाल खेंचना।

१६—परदार फ़रिश्तों का वजूद बताना।

१७—क़यामत के दिन दोज़ख़ का लगाम लगाकर खाया जाना।

१८—ज़मीन का मछली की पुश्त पर होना।

१९—रूह को सिर्फ़ अमरे रब्बी बताना

२०—ख़ुदा को महदूद बताकर अर्शपर जाबैठालना।

यह क़ुरानी फ़लसफ़े के चन्द नमूने हैं। कहां तक लिखें सारा इस्लामी लिट्रेचर ऐसी ही बेतुकी बातों से भरा है। इसीलिये हम कहते हैं कि क़ुरान में अक़्ल का क्या काम ? हम ऊपर साबित कर चुके हैं कि क़ुरान के आने के वक़्त मुल्क अरब इल्म से खाली था। फिर अहले अरब की क़िताब मेंदों

से बढ़कर क्या बात बनायेगी। यह तो गीता और तुलसीकृत रामायण से भी लाखों कोस पीछे पड़ी हुई हैं। कहां वेद और कहां कुरान ? आपने वेद देखा होतो आपको पता लगे कि शादी के तरीके वेद क्या बतलाता है। वेद उसूली बात बतलाता है नकि फिजूल अलफ़ाज़ की तवालत करता है। उसने बतला दिया अपने कुल से भिन्न शादी हो। इसमें सब कुछ आगया। लेकिन कुरान में लफ़ज़ दादी नानी नहीं इसलिये कुरान से उनकी हुरमत साबित नहीं।

कुरान जब जाते खुदा को ही नहीं जानता तो वह खुदा के विसाल को क्या जाने ? अरब वालों में उस वक्त मामूली चीजों को जानने की अक्ल तो थी ही नहीं भला वह खुदा की जात को जानते और बताते। कुरान अक्ल के ज़रिये से ईश्वर को निराकार और सर्वव्यापक सिद्ध नहीं कर सकता था इसलिए उसको सात आसमानों की आड़ लेनी पड़ी। अगर हज़रत उस खुदा को कहीं जमीन पर बतलाते तो अरबी लोग सेर भर सत्तू बाँधकर पीछे पड़जाते कि दिखाओ खुदा कहां बैठा है ? रास्ते की खुराक हमसे लेलेना। लामुहाला हज़रत को उन बेइल्मों को समझाना पड़ा कि खुदा आसमानों के ऊपर परदों के पीछे आड़ में है और खुद गवाह बन गये कि मैं जिबराईल के साथ देख आया हूं कि खुदा अच्छी सूरतमें हैं यहाँ तक कि उसने मेरे दोनों कानों के बीच में हाथ भी रख दिया है।

मुसलमानों का खुदा कैसा है ?

१— मुसलमानों में एक फ़िरका करावती कहाता है वह खुदा को कैसा मानते हैं- " चूँ नफ़्से नातिका अज़ बदन

मुफ़ारक़त कुनद !! व आलमे उलवी रवद व अज़ आसमानहा दर गुज़रद व बाला दरयाफ़्त व दर आँ वहरे कोहे हक़ताला बराँ नशिस्ता अस्त ।" यानी जब नफ़से नातिका बदन से गुज़रता है आलमे उलवी में जाकर आसमान से भी गुज़र जाता है और ऊपर जाता है तो एक पहाड़ सी कुरबत हासिल करता है जिसके ऊपर ख़ुदा बैठा हुआ है।" देखो दबिस्तान मज़ाहब तालीम ३ सुफ़ा २४१ सतर १ से ३ तक।

२— अहले सुन्नत- अलफ़ाज़े कि मोहम तशबीया अस्त मिस्ले—'अर्रहमानो अलल अर्श इस्तवा' व मिस्ले- 'ख़लक़तो बेयदी व जाय रब्बक, बगैरह ऑअलफाज कि मौहम तशबीह अस्त मानी ऑ नदानेम व बदानिस्तन मानी तावील ऑ मुकल्लिफ हस्तेम। यानी- चाहे तशबीही अलफ़ाज के माने हम न जानते हों लेकिन मुकल्लिफ हैं जैसे यह कि ख़ुदा अर्श पर खड़ा है, खिलक़त को पैदा किया मैने अपने हाथ से, आया रब्बतेरा बस इसको कुरान का कलाम जानकर सिर्फ़ इसको मान लें नकि तावीलें गढ़ें। गोया इनका ख़ुदा अर्श पर खड़ा है, हाथों से दुनिया बनाता है, चलता फिरता है। देखो दबिस्ताने मज़ाहब तालीम ६ सुफा २५६ सतर १२ से। छापा नवलकिशोर लखनऊ। वहीं और भी लिखा है-कि मोमिनान दर आख़िरत बकरामत रूयत मुशर्रिफ़ शवन्द 'कालल्लाहो ताला वजूह योम इजिन्ना जिरतु इल्ला रब्बहा' यानी कयामत के दिन मोमिन लोग अल्लाह को देखेंगे।

३- अहले सुन्नत में एक जमाअत तशबीही है वह यह मानती है— "एजद बरतररा बसिफ़ाते नासज़ा नादर ख़ोर नालायक मुत्तसिफ़ दाश्तह बदाँचे आफ़रीदह ओस्त अज़ जवाहर व आराज निस्बत करदह अन्द।" यानी ख़ुदा को नालायक

सिफ़्तों से मुत्तसिफ ठहराकर जवाहर और आराज़ से निस्बत देते हैं जो उसके आफ़रीदह हैं।

४--- तातीली फ़िरका-खुदायरा मुनकिर शुदन्द बनफी सिफ़ाते हक़ करदन्द" यानी खुदा से मुनकिर होकर खुदा की सिफ़्तों से मुनकिर होते हैं। यह फिर्का कहता है कि दुनिया का पैदा करने वाला कोई नहीं है। आलम हमेशा से ऐसा ही चला आता है। तालीम ६ सुफा २६७, दबिस्तान मज़ाहब

५-- जबरिया-"इख्तयार फेल अज़ बन्दगान बरदाश्ता व आँरा अंगार करदह अफ़आल खुद रा बखुदावन्द बास्तन्द" यानी बन्दों को फेल मुख्तयार नहीं कहते और अपने सब काम खुदा पर रखते हैं = अच्छा बुरा जो कुछ होता है वह सब खुदा ही करता है।

६--"कदरिया - खुदाए खुदारा बखुद निस्बत करदन्द व खुदरा ख़ालिक अफ़आल खेश शुमुर्दन्द"। यानी खुदा की खुदाई को अपने आप से मंसूब करते हैं और अपने आप को अपने कामों का ख़ालिक जानते हैं! क्याखूब। खुद ही खुदा बने बैठे हैं॥

७---अमूया व यज़ीदिया-"व दरहक़ अली तान कुनद कि ओ दावा इलाहियत कर्द व अक़ीदेओ आँ बूद कि ग़लात दारन्द व ओरा बख़ुदाई मेपरस्तन्द चे एशाँरा बदीं दावत मेकर्द चुनाँचे खुद दर खुतबतुल् बयान कि मंसूबस्त बदो गुफ़्तह "अअल्लाहो व अनर्रहमानो व अनर्रहीमो वना अल् इल्लो व अनल् ख़ालिक़ो व अनर्रज़्ज़ाक़ो व अनल् हन्नानो व अनल् मन्नानो व अना मुसब्बिरुन् नुत्फ़ते फिल् अरहामे"। यानी यह फ़िरक़ा हज़रत अलीके हक़में तान करताहै कि उसने (अलीने) खुदाई का दावा किया और उसका (अलीका) अक़ीदह यह

था कि गिलात (   ) रक्खें और उसको (अलीको) खुदा जानकर पूजें क्योंकि लोगों को अपनी तर्फ़ दावत करता (बुलाता) चुनाँचे आप खुतबतुल् बयान में जो उसकी तस्नीफ है कहता हूँ—'मैं अल्लाह, रहमान, रहीम, अली, ख़ालिक़, रज़्ज़ाक़, हन्नान, मन्नान और मुसव्विर नुतफे का रहम में हूं'। इससे साबित है कि अली खुदाई का मुद्दई था।

८—असना अशरिया= 'निज़्द एशाँ नीज़ खुदावन्द काला शियास्त व वाहिद व हई व अलीम व मुरीद व क़दीर व समीअ व बसीर व मुतकल्लिमस्त" यानी उनके नजदीक खुदावन्द भी मिस्ल और चीज़ों के है। एक है, जिन्दा है; इरादा रखनेवाला है, कुदरतवाला है, सुननेवाला है, देखने वाला है, कलाम करनेवाला है। "वकलामे इलाही निज़्द एशाँ क़दीम नेस्त, बल्के हादिसस्त" यानी उसके नज़दीक क़ुरान क़दीम नहीं है बल्के हादिस (फ़ना होनेवाला) है। देखो तुहफ़ा २७०, २७१।

९—अलीइलाही-"चुनाँकि आदम शुद ता अहमद व अली हमचुनीं व नूरेहक़ जरायमा क़ायलन्द व बाज़े अज़ एशाँ गोयन्द कि ज़हूरे हक़ दरीं दौर दर अली अल्लाह बूद व बाद अज़ दौर औलाद नामदार; व मुहम्मदरा पैग़म्बर व फ़रिस्तादह अली अल्लाह दानन्द। चूँ हक़दीद कि कारये अज़ ओ बर नयामद खुद नीज़ बमुआवनत बजस्द दर आमद"।

यानी-"चुनाचे आदम से अहमद अलीतक यही सुलूक रहा। ऐसेही इस बात के क़ायल हैं कि खुदा का नूर अइम्मा में ज़ुहूर करता है। उनमें से बाज़े कहते हैं कि इस दौर में खुदाका ज़हूर अली अल्लाह में था और उसके बाद उसकी औलाद नामदार में। और मुहम्मद को अलीका पैग़म्बर और

और भेजा हुआ मानते हैं और कहते हैं कि जब खुदा ने देखा कि उससे काम नहीं चलेगा तो आप भी वास्ते मदद पैग़म्बर के जिस्म में आया"। इनका यहभी अक़ीदा है कि "व इमल्लाह ख़लक़ आदम अला सूरते ही" का यही मतलब है कि हमने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया यानी मैं (खुदा) इन्सान बनता हूं और इस हदीस को भी पेश करते हैं-"र येतो रब्बी फ़ी सूरते हो इमरम्" यानी देखा मैंने रब्ब को मर्दकी सूरतमें। यह फ़िर्क़ा आवागवन भी मानता है। अली को सिजदा करता है मौजूदा क़ुरान को उसमानका बनाया बताता है। मौजूदा क़ुरान को जहाँ पाते हैं जलादेते हैं। गोश्त खाने को मना करते हैं। कहते हैं अलीका क़ौल है कि "लातज अलूबतूनकुम् मुक़ाबिरल् हैवानाते" यानी अपने पेटों को हैवानों की क़ब्र मत बनाओ। नबीका अपने कन्धों को उसके पाओंसे मुशर्रफ़ करना यानी खुदा का मुहम्मद के कन्धोंपर अपना पैर रखना भी ज़ाहर करता है कि खुदा इन्सान की शक्ल इख़्तयार करता है देखो दबिस्ताने मजाहब तालीम ६ सुफ़ा २६५ २६६

१०—सादक़िया-"मसीलमारा रहमान मेगुफ़्न्द, गोयन्द बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" इशारत बओस्त यानी खुदाय मसीलमा रहीमस्त ... ...मगोयदकि जिस्म नेस्त चे शायद कि जिस्म बाशद ... ... व हमचुनाँ ईमान बलकाय अल्लाह बरुइयत: ख़ालिक़ वाजिब अस्त" यानी यह लोग मसीलमा को रहमान कहते हैं। यह भी कहते हैं कि बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम' उसी मसीलमाकी तरफ़ इशारह करती है। 'यानी खुदा मसीलमा रहीम है। यह मत कहो कि खुदा का जिस्म नहीं है, शायद हो ऐसे ही खुदा के दीदार और रुइयत वाजिबपर ईमान लाना वाजिब है"। इनका ईमान है कि खुदा

केलिये कोई क़ैद नहीं; जैसे वह चाहेगा अपने बन्दों को दर्शन देगा। काबेकी तर्फ़ सिजदा करना शिर्क समझते हैं। फ़ारूक़ अव्वल और फ़ारूक़ सानी इन दो किताबों को कलाम खुदा और इनको कुरान से ज्यादा फ़सीह मानते हैं। मौजूदा नमाज़ भी नहीं पढ़ते। अपनी नमाज़ में रसूल का नाम नहीं लेते। नमाज़ें सिर्फ़ तीन बताते हैं। शैतान के क़ायल नहीं है। इन्सान को कर्म करने में स्वतन्त्र मानते हैं। शादी सिर्फ एक औरतसे करना मानते हैं। वक्तज़रूरत मुताअमानते हैं। रोज़ा रखना जायज़ नहीं मानते। देखो दबि० म० सुफ़ा २६८ २६६

११—बाहदिया-मानता है कि इन्सान ही तरक्की करता हुआ ऊँचे दर्जे को हासिल करता है। बजाय बिस्मिल्लाह के "इस्तईन बे नफसे फल्लज़ी लाइलाहइल्लाहो' कहते हैं। यानी मदद चाहो अपने नफ़्स से वह नफ़्स नहीं कोई अल्लाह मगर वही यानी नफ़्स। "मन एव मनुष्याणां कारण बन्धमोक्षयोः' के सिर्फ़ क़ायल हैं। 'लैसा कमिस्लेही शैइन्' की बजाय 'अनासुरक्कबुल् मुबीन' कहते हैं यानी हम मुरक्कब और मुबीन हैं। यह आवागवन को मानते हैं कहते हैं कि पहले जन्ममें इमामहुसैन मूसाथा और यजीद फ़िरऊनथा उसजन्ममें मूसाने फ़िरऊन को दरयाये नीलमें डुबोकर मारा और इस जन्म में फ़िरऊन ने यजीद बनकर इमामहुसैन को फ़रात दरयाका पानी न देकर तेगे आबदार से मारा। गोया पहले जन्म का बदला लिया। लिखा है कि- चूं दर अजम शवद मरदुम वहक राह बरन्द व गशांरा परस्तन्द बजाते आदमीरा हक़ब्वनन्द। यानी जब अजम का दौर होता है तो खुदा को पहिचानते हैं और आदमी की जातको खुदा जानते हैं। आदमियों का बुत बनाकर पूजते हैं। कहते हैं कि मुहम्मद का दीन मंसूख़ हुआ

और अब महमूद का दीन है। इंसान पाक होकर खुदा यानी महमूद हुआ।

१२—रौशनिया— यह लोग वायज़ीद को पैगम्बर मानते हैं खुदा को इन्हीं आँखो से देखना भी मानते हैं।

मिर्जा गुलाम अहमद साहब और उनकी पेशीनगोई।

१—"मैं इस वक्त-इक़रार करता हूं कि अगर यह पेशगोई झूँठी निकले यानी वह फ़रीक़ जो खुदा के नज़दीक झूँठ पर है वह १५ माह के अरसे में आज की तारीख में सजाय मौत हाविया में न पड़े तो मैं हर एक सजाके उठानेके लिए तैयार हूँ। मुझको ज़लील किया जाय, व रूस्याह किया जावे, मेरे गले में रस्सा डाला जावे, मुझको फाँसी दिया जाय हरएक बात के लिये तैयार हूं। और मैं अल्लाः जल्ले शानहू की क़सम खाकर कहता हूं कि वह ज़ुरूर ऐसा ही करेगा। ज़मीन व आसमान टल जायँ पर उसकी बातें न टलेंगी।" यह ही पेशीनगोई डिपुटी अब्दुल्ला आथम साहब के बारे में झूँठ हुई।

२—बहुतसी पेशीनगोई करने पर भी मिर्जा साहब का निकाह मुहम्मदी बेगम से नहीं हुआ।

३—मिर्जा साहब की मनकूहा बग़ैर तलाक के ही दूसरें के तसर्रुफ में चली गई।

४—अपनी मनकूहा पर नाजायज़ तसर्रुफात मिर्जा साहब देखते रहे।

५—मिर्जा साहब ने कहा था कि अगर मैं दज्जाल और शतान होऊंगा जो सनाउल्ला के सामने मर जाऊंगा।

मौ० सनाउल्ला साहब अबतक जिन्दा हैं। कहिये मिर्जा साहब कौन थे और यह मसीह मौऊद कौनसे जहन्नुम में जायेंगे ?

६—डाक्टर अबदुल हकीम जिन्दा रहे और मसीह मौऊद चलबसे। पहिले परमेश्वर अपने को शरीर कहा था।

७—डाक्टर अबदुल्ला आथम की मौतकी बाबत पेशीन-गोई ग़लत हुई।

८—वह भी पेशीनगोई ग़लत हुई जिसमें कहा था कि "मैं हर शै से बदतर ठहरूंगा अगर मुहम्मदी बेगम का शौहर न मरा और वह मेरे निकाह में न आई"। बेगम न आई; मिर्जा जो चलबसे।

९—ऐडिटर फ़ज़ल. अलबदर और उसका बेटा ताऊन में मरगये। मिर्जा साहब ने पेशीनगोई की थी कि मेरे मुरीद ताऊन में नहीं मरसकते।

१०—क़ादियान शहर में ताऊन आ.था। मिर्जासाहब कहते थे कि यहाँ पर ताऊन नहीं आसकता।

११—क़ादियान में ज़लज़ला (भूकंप) आया। मिर्जा साहब की पेशीनगोई थी कि यहाँ नहीं आसकता।

१२—मिर्जासाहब का बन्द हैज़े में मरना भी पेशीनगोई के ख़िलाफ़ हुआ।

१३—जानमुहम्मद काश्मीरी का लड़का नहीं मरा। मिर्जा साहब ने उसके लिये क़बर खोदने को कहा था।

१४—दिसम्बर सन् १८८५ ई० में विष्णुदास से कहा कि तू एक सालतक मुसलमान होजायगा वर्न मरजायगा। यह मुझको इलहाम हुआ है। वह न मरा न मुसलमान हुआ।

१५—अपने घर के तीन अहमदों में से एक के मरने का

इल्हाम भी झूंटा हुआ।

कुरानी जन्नत कदीम नहीं है ।

कुरानी जन्नत की हकीकत बहुत कुछ बताई जाचुकी है । वहाँ पर जन्नती लोग इश्रेगिल्मा में मश्गूल रहेंगे । शराबें पियेंगे । मेवे और कवाब खाते रहेंगे, दूध और शहद में ग़रकाब रहेंगे इनसे ही जन्नतियों को फुरसत नहीं मिलेगी । यही तो सारी चीजें थीं जिनका लालच देकर हज़रत ने अरबियों को लूट और कतल का शौक दिलाया, जिन अर्बों को ब मुश्किल तमाम थोड़ा सा गर्म पानी मिलता ऊंटनी का थोड़ा सा दूध पीने को कभी कभी मिलता, मेवेमें सूखी खजूरें खाने को मिलतीं, शहद तो बहुत कम नसीब होता, जंगल में झोंपड़ियों में जिन्दगी बसर करते, औरतों को तरस्ते रहते, कपड़ा बहुत कम मयस्सर होता उनके लिये जन्नत का नक्शा दिखाकर फाँस लेना कौनसी मुशकिल थी ? हजरत और उनके साथियों के लिये मुक्ति का परमानन्द कैसे मालूम होता जबकि महज़ दुनयवी चीजों पर ही उनकी नजर थी । अरब वाले, जो मन्तिक और फलसफे से कोरे थे, सर्वज्ञ सर्वव्यापक, निराकार और ज्योतिःस्वरूप ब्रह्म को कैसे जान सकते थे ? उनके वहमो गुमान में भी यह बात नहीं था कि सर्वव्यापक और निराकार ईश्वर भी होसकता है । तभी तो खुदा को अर्शपर जाबिठाया ! हाँ इतना इल्म ज़रूर था कि वहीं पर बैठा हुवा बादशाह की तरह फरिश्तों को मुसाहब बनाकर हुकूमत करसकता है । इंसान की मानिन्द लड़ना भिड़ना, गाली देना, गन्दगी फेंकना, आनाजाना यह सब बातें अरबवालों के ज़हन में आसकती थीं वैसा ही फरज़ी खुदा गढ़कर तैयार करदिया । ऐसे ही फरज़ी और वहमी खुदा का बनाया भानमती के तमाशे की मानिन्द जन्नत भी

होसकता है। जनाब इसका मुकाबला वदिक मुक्ति से करने बैठते हैं। अज़रूए फ़लसफ़ा पैदाशुदा शै कदीम नहीं हो-सकती; चूंकि अरवाह, अजसाम, माद्दी जन्नत और फ़रिश्ते सब पैदा शुदा हैं लिहाज़ा फ़ानी हैं क़दीम नहीं। कुरान ने भी फ़लसफ़े के लिहाज़ से तो नहीं, हाँ खुदा की बुज़ुर्गी दिखाने के लिये कह दिया है कि "कुल्लोमिन् अलैहा फ़ानिन्" कुल्लोशैऊन् हालिकुं इल्ला वजह यानी मासिवा अल्लाह सब शै फ़ानी हैं। फिर इसका नाम निजाते अबदी रखना महज़ मुग़ालता देही है। अमरे महालपर क़ादिर होना खुदा की सिफ़त नहीं इसलिये वह अपनी कुदरत से जन्नत को कदीम भी नहीं बनासकता।

रिश्ता नहीं बदल सकता। अक़्दे निकाह फिर नहीं खुल सकता। क्यों जनाब यह तो बताइये कि मर्द तो औरत को तलाक़ दे दे, लेकिन औरत मर्द को तलाक़ क्यों नहीं दे दे। यह कुरानी अन्धेर कैसा? यह सारी बातें ज़माने जहालत की हैं। शादी में सुख नहीं होसकती हाँ मुसीबत के वक्त में नियोग होसकता है। क्यों जनाब इसमें कौनसी फ़िलासोफ़ी है कि तलाक़ दी हुई औरत फिर दूसरे से सोहबत जब तक न कराले तब तक पहले ख़ाविंद के निकाह में फिर दुबारा नहीं आसकती? देखो कुरानी आयत—"फ इन्तल्लकहा फला तहिल्लो लहू मिन् बाद दो हत्तातनिकहुँ ज़ोजन ग़ैरहूं।"

१०—इल्हाम शुरू दुनिया में होना चाहिए। जिस इल्हाम में इंसानी किस्से होंगे वह शुरू में न बकार होगा। कुरान में किस्से कहानियां हैं लिहाज़ा इल्हाम नहीं। क़ुरान में इंसान का नाम होने से इल्हाम में शिर्क लाज़िम आता है। इस एतराज़ पर मुसलमानी कैंप में हल चल मच रही है। अफ़्ज़-

मन्द मुसलमान जान गये हैं कि कलमे में शिर्क (कुफ़) ज़रूर है। चुनाँचे इस कुफ़ को को महसूस करके एक मुंसिफ मिज़ाज मुसलमान लिखते हैं कि—मौजूदा कलमा शिर्क सिखाता है। इस कलमे में रसूल का नाम होने से शिर्क फ़िल्कलमा है इसलिये पुराना असली और वहदत का जाहर करनेवाला यह कलमा है—"ला इलाहा इल्लिल्लाहवाहीदहूला शरीक लहूं।" देखो रिसाला इत्तहाद मज़ाहबे आलम जिल्द नं० १।२॥ एडीटर मौलाना मुहम्मदहुसैन साहब इञ्जीनियर, सेक्रेटरी अन्जुमन इत्तहाद मजाहबे आलम बहान रंगून (बर्मा)॥ हदीस भी शिर्क की ताईद करती है—देखो सही मुसलिम जिल्द १ किताबुल् ईमान सुफ़ा ७७ कि बिना रसूल के माने हुये मुसलमान नहीं बल्कि वाजुबुल क़त्ल है। और मुलाहज़ा हो कुरानी आयत—" मैं युत् इर्रसूल फ़क़द अता अल्लाह।" निसा। जिसने हुक्म माना रसूल का उसने हुक्म माना खुदा का " अतीओ अल्लाह व अती ओरसूल " रसूल और खुदा की अताअत करो।

१२—खुदा हमेशा से है,यह मुसलमा फ़रीकैन है। आप का यह फ़रमाना कि "जब से ही वह मखलूक को पैदा करना आता है" गोया वैदिक सिद्धान्त के सामने सर झुका देना है बस अब किस्सा खतम हुआ। खुदा कदीम, उसकी मखलूक कदीम लिहाजा रूह, माद्दा और खुदा तीनों कदीम। अब कभी इस उसूल की मुख़ालफत न कीजियेगा। आमीन।

परमेश्वर के कानून से और उसकी क़ुदरत से हमेशा रूह और उसके जिस्म जुड़ते और अलाहदा होते रहते हैं। जुड़ने को पैदा होना और अलाहदगी को मौत कहते हैं। यह सिलसिला हमेशा जारी रहता है। एक लमहे में जुड़ते और अलाहदा होते हैं।

१२—खुदा हर वक्त काम करता है तो दुनिया पैदा करने से पहले क्या काम करता था? और बादे फना क्या करेगा? इससे यही साबित है कि कुरान भी रूह और माद्दे की कदामत का कायल है। इसीलिये कहता है कि "लम् यजल मुतकल्लिमन्" अल्लाह हमेशा कलाम करता है।

अल्लाह ताला की यो किस्म की सिफात कदीम है या हादिस? अगर कदीम हैं तो इनका मुखस्सिस कौन है? अगर कोई नहीं तो तखसीस बिला मुखस्सिस है। अगर अल्लाह मुखस्सिस है तो सिफात में तगैय्युर होने से मौसूफ में भी तगैय्युर वारिद होगा और खुदा होजायगा। और यह भी सवाल है कि सिफ्त और मौसूफ एक है या अलाहदा २? अगर सिफात और मौसूफ एक हैं तो ऐनजात अल्लाह है। मगर आपके मिर्जा साहब वगैरह ऐनियत के कायल नहीं देखिये "गोराकिम ऐनियत सिफात का कायल नहीं" तसदीक बराहीन अहमदिया सुफा ७४ सतर १८।

ऐने जातमें सिफ्त कोई अलहदा नहीं बल्के सिफात का मजमा ही जात कहाती है अगर सिफात से अलाहदा कोई जात है तो तरकीब लाज़िम आती है और खुदा हादिस ठहरता है सिफात के तगैय्युर से जातमें तगैय्युर लाजमी है और सिफात का तगैय्युर आपके मिर्जा साहब तसलीम करते हैं— "सिफात के जुहूर में हादिसात की रिआयत से ज़रूरत कदीम ताखीर होती है" देखिये जंग मुकद्दस सुफा १२७ अगर आप फरमायें कि यहाँपर लफ्ज 'जुहूर' बरिआयत खिल्क है न कि पदायश। तो यह सिफात जाती न होनेसे पैदा शुदा होंगी। लेकिन यह भी याद रखिये कि फेल बिल कुवा होता है न कि सिफ्त बिलकुवा। वह खालियत, इल्म और कुद्दूस वगैरह

जाती सिफ़ात हैं जो अल्लाह को लाज़िम हैं। लेकिन हुकूमत, अदल, मालिकियत वग़ैरह सिफ़ात ख़ुदाको लाज़िमी नहीं हैं। जैसे जनाव मिर्ज़ा साहव ख़ुद फ़रमाते हैं "अगर अदल ख़ुदाताला पर लाज़मी सिफ़्त थोप दिया जावे तो ऐसा सख्त एतराज़ होगा कि जिसका जवाब आपसे किसी तौरपर नहीं, वन पड़ेगा"। देखो जंग मुक़द्दस सुफ़ा १२६ ॥ जो सिफ़्त लाज़मी नहीं वह ज़ाती नहीं, जो ज़ाती नहीं वह क़दीम नहीं हादिस है, जब सिफ़्त हादिस तो मौसूफ़ हादिस इस लिये रूह और माद्दा क़दीम न मानने से ख़ुदा हादिस ठहरता है यानी अनित्य सिद्ध होता है। मौजूद फ़िल् ख़ारिज और मौजूद फ़िल् इल्म में क्या फ़र्क़ है? इल्म सिफ़त है उससे कोई मौसूफ़ पैदा नहीं होसकता फिर ख़ारिज् में जहान कहाँसे आया? इल्म कहते हैं किसी शैके जानने को; जब कोई शैही नहीं तो जानना किसका। हम तीन चीज़ें मौजूयात में मानते हैं रूह, माद्दा और ईश्वर। इनमें रूह और माद्दा मालूम हैं उनका आलिम ईश्वर है। आप दावा करते हैं कि ख़ुदा आलिमे क़दीम है लेकिन मालूम नदारद फिर आलिम किसका? शुरूमें मालूम न होनेसे आलिम नहीं पस दो फ़नाओं के बीचमें रहनेवाली शै क़दीम नहीं इसलिये ख़ुदा आलिमे क़दीम नहीं। कोई शै दुनिया में नहीं पैदा नहीं होती, जो है उसका अदम महज़ नहीं होता। इल्लत और मालूल का तअल्लुक़ माद्दे से क़दीम है। इसहो को प्रलय और उत्पत्ति कहते हैं। फिर मैं और आप और मनाज़रा यह सब कोई नयी चीज नहीं है सिर्फ माद्दे के तग़य्युरात हैं जो कभी भी ख़ुदा के इल्म से न वाहर थे न हैं न होंगे।

१५--ईश्वर अलीम है, लेकिन साथ साथ उसका मालूम

भी कदीम है। न कभी मालुम का अदम महज़ हम मानते हैं। नफ़ी को नफ़ी जानना और असबात को असबात जानना इल्म हकीक़ी है। ईश्वर की तमाम सिफ़ात हम ज़ाती मानते हैं आप को तरह से पैदा शुदा नहीं मानते। उपनिषद् यह बतलाती है कि " स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रियाच" इल्म, ताक़त और हरकत देना यह सिफ़ात ज़ाती हैं। आप कुछ ताक़तों को ज़ाती सिफ़ात में दाख़िल नहीं करते।

१६—इसकी बहस ऊपर आचुकी है।

१ —इसकी बाबत भी बहुत कुछ बहस ऊपर आचुकी है। कर्म फ़िलासोफ़ी को कुरान हरगिज़ नहीं जानता। जब तक़-दीरों का भी खुदा ख़ालिक है तो इन्सानी नेकोबद आमाल का भी वही ज़िम्मेवार है। अगर तक़दीरों का ख़ालिक नहीं तो इल्लते ऊला नहीं। कुरानी आयात के हवाले जात ऊपर बहुत से दिये जाचुके हैं।

१८—हम ऊपर बतला चुके हैं कि उनको हूरोग़िल्मा से कब फ़ुरसत मिलेगी जो इबादतसना करेंगे। जब दुनिया में थोड़ा सी सरवत पाकर इन्सान खुदा को भूल जाता है तो वहाँ तो अईयाशी का पूरा ही सामान होगा। मदारज में तर-क्की का समरा क्या किसी और जन्नत में मिलेगा ? आख़िर कोई जन्नतों की हद भी तो होगी ?

अम्बिया बुग्ज़ो कीना से बाज़ नहीं रहे। जन्नत में भी बुग़ज़ो कीना कैसे छोड़देंगे। हज़रतमूसातो आसमान पर भी हसद से रोये थे कि मुहम्मद की उम्मत बहिश्त में ज्यादह जायगी। खुदा के पास बैठकर कलम तक रोई थी!

१६—एतराज़ इस आयत पर है, सुनिये—'फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम् मिन्हा वतरा ज़व्वज़्ना कहा"। ज़ैनब का निकाह

मुतवल्ली या क़ाज़ी ने नहीं कराया। हर शख़्स को इख़्यार है कि किसी गैर औरत के पास जाये और ज़िना करने लगे दरयाफ़्त करनेपर कहदे कि मेरा और इस का निकाह खुदा ने करदिया है। इस निकाहका कोई गवाह, ? कोई नहीं वीवीको खवर नहीं और निकाह होगया। वक्ते निकाह शौहर और वीवो का साथ २ होना जरूरी है लेकिन यहाँ पर वीवी को खवर नहीं और निकाह होगया! ठीक रहे मतलब और जोरो जुनूँ। कुरानकी शहादत पेश नहीं की जासकती क्योंकि वह मुसल्लमे फ़रीकैन नहीं। कहिये इसको निकाह कहें या क्या? मुँह वोले वेटे वेटे नहीं तो मुँह बोली मां मा नहीं होसकती। अगर मुँह वोली मा किसी वजहसे मा कही जासकती है तो मुँह वोला वेटा भी वेटा कहाने की कोई वजह रखता है। यहाँ तो ज़िना, वेग़ैरती और हरामकारी और निकाह में कोई फ़र्क़ही नहीं रहा।

नियोग मुसीबत का धर्म है जैसे कुरान कहता है कि-"फ़मनिज़्तुमर्र फी मखमसते ग़ैरमुत्वहा निफ़िल्लेइस्मिन्"। सूरतुल् मायदा। यानी सूअर वगैरह हराम वताकर आख़िर में कहदिया कि भूखमें सूअर वगैरह भी हलाल है। अव हम भी दरयाफ़्त करसकते हैं कि वराह मेहरवानी अहमदी लोग सूअर खानेवालों की एक फ़हरिस्त पेश करें। हिन्दुस्तान में तो वहुत से अकाल पड़ते रहते हैं। वहुत से मुसलमान चोरी करके जेलखाने में जाते हैं। इस नादिर हुक्म पर क्यों नहीं कारवन्द होते। क्या दूकानें और मकान लूटने से यह कुरानी हुक्म खराव है, इस वक्त जबकि भूख के मारे लाखों मुसलमान मालावार, मुल्तान और सहारनपुर वगैरह में लूट मचाते हैं जमीअतुल् उलमा को जरूर फ़तवा निकाल देना चाहिये। जिससे दूसरी क़ौमें लूटने से वचें।

२०—लफ़ज़ इलहाम के माने जनाब ने नहीं बताये। ज़रूरत तो यह थी कि यह सारी इलहाम की तारीफें अपने इलहाम=क़ुरान पर घटा देते। या कमसे मसीह मौऊद को ही मुलहिम साबित करदेते।

हदीस में लिखा है कि इलहाम का तअल्लुक दिलसे है—"लइलहामो नूनो यन्ज़ुले फी क़ल्बे या अरिफो बिहा हक़ीक़तेल् अशि थाए" यानी इलहाम एक नूर है जो दिलमें नाज़िल होता है। उससे अशयाकी हक़ीक़त ज़ाहिर होजाती है। क़ुरान से किसी शैकी हक़ीक़त जाहिर नहीं होती। सैय्यद अहमदसाहब की गवाही पहलेपेश करचुके हैं जहाँ देखो पैगंबरकी उड़ाईहै। आप फरमाते हैं कि वैसाही रूहको इलहाम से एक अज़ली व क़दीमी वास्ता है (या राब्ताहै)। जब रूहही आपके ख्याल में क़दीम नहीं तो राब्ताया वास्ता क़दीम कैसा? ऋषियों की अज़ली रूहको इलहाम से अज़ली और क़दीमी वास्ता होसकता है। नकि इसलामी हादिस रूहको।

सिंहावलोकनम्

—क़ुरान के तेरह सौ बरस के चैलन्ज का जवाब आपकी क़ुरानी तफसीरें हदीसें और दबिस्तान मज़ाहब वगैरह दे चुकी हैं कि किस तरह से मुसलमानों के मौजूदा क़ुरान = बयाजे उसमानी से मसीलमाका क़ुरान = फ़ारूक़ अव्वल और फ़ारूक़ सानी फ़सीहतर था। आपके ख़लीफ़ाओंने किसतरह कोड़े मार २ कर मुरव्विजा क़ुरान को लोगों के गले से उतरवाया। वक्तन् फ़वक़्तन किसतरह इसकी इबादत फ़सीह बनाने के लिये उलमाए इस्लाम तहरीकें करते रहे हैं इसके लिए क़ाज़ी बैज़ावी की तफसीर क़ुरान देखिये। कातिबकी

बोली हुई आयत वही बताकर कुरान में अबतक शामिल है। शैतान की पढ़ी हुई आयत अबतक इस्लाम का काफ़िया तंग कर रही है। ४० पारे के कुरान की पटने की लाइब्रेरी में मौजूदगी मुसलमानों की आँखका कांटा हो रही है।

"वइन कज्जबूक फ़कुल्ली अमली वलकुम् अमलुकुम् अन्तुम् बरोओन मिम्मा आमलो व अना बरोओम्मिम्माता व मलुन।" बाजेउलमा के नजदीक यह आयत आयते सैफ से मंसूख है। देखो तफसीर हुसैनी व तफसीर कादरी। जिल्द १ सुफा ४३५ सतर २० से २४ तक।

बिला निकाह जिमाकरना शायद पैगम्बर के लिये गुनाह न हो "जम्ब" के माने गुनाह के हैं देखो कोई साही लुग़त। अरब कैसे मुसलमान हुआ यह सब जानते हैं। अभी तक मुसलमानों की तलवार का ख़ून खुश्क नहीं हुआ है।

२-अगर ऋषियों को वेद मुकद्दस सीखने के लिये किसी दूसरी ज़ुबान की ज़रूरत है तो शैतान फरिश्ते और आदम और हव्वा वगैरह को भी अरब के मुल्क में जन्म लेकर अरबी ज़ुबान सीख लेनी चाहिये थी। अरबी अरबी ज़ुबान जानने के लिये भी दूसरी ज़ुबान सीखें। कुरान जिन्दा ज़ुबान में होने पर भी मुहमिल ही रहा। लफ्ज़ अर्शपर ही गौर करिये। हकीम नूरुद्दीन साहब इसको बेवजूद और गैर पैदा शुद बतलाते हैं। मौलवी सनाउल्ला साहब इसको बावजूद और मखलूक बतलाते हैं। देखें जनाब की क्या राय है। शैतान की बाबत भी ऐसा ही फर्क है। फ़रिश्ते तो फुटबाल की मानिन्द लुढ़कते फिरते हैं उनका वजूद भी खतरे में है आसमान, कुरसी, जन्नत, तख्त, मेअराज, और अल्लाह की जात वा सिफात इस १४ वीं सदी में सभी मुजबूजब हालत में हैं। तफ़सीरें

हदीसें तावीलें सबही चक्कर में हैं कि इस लांहल गोरख धन्दे को कैसे सुलझावें ? निसाउकुम् हरसुल्लकुम् के मानों के बारे में शिया और सुन्नियों मे तफ़ावत मोजुद है। बिस्मिल्लाह खुदायनसीलमा के लिये है या खुदाय कुरानी के लिये यही झगड़ा तेरह सौ साल से चला आता है अभी तक तय नहीं हुआ। बावजुदे कि कुरान जिन्दा जुवान में है। कुरान के ३० पारे हैं या ४० आयत कुरानी ३३३६ हैं या कमोवेश इस बारे में काजी वैजावी और दीगर मुफस्सरीन में तनाजा चला: आता है। इन सारी बातों को अरब की जिन्दा जुवान हल न करसकी। आइन्दा किससे उम्मीद की जावे ? ७२ फिर्के होते हुए भी अभी फिर्कें की उपज जारी है। अहमदिया फ़िर्का भी कुरान की लाइल्मी की वजह से पैदा हुआ है। इसीलिये मुसलनानों ने इस फिर्कें को कुफ्र का फतवा दिया है। हरएक फिर्का कुरान की अलहदा २ अपनी तफसीर करता है और ज़ाहिर करता है कि कुरान को मैंने ही समझा है। अफ़सोस फिर भी कुरान जिन्दा जुवान में है ताकि सब अच्छी तरह समझलें।

फिर कुरान खालिस अरबी जुवान में भी नहीं है। देखो इनसाइक्लोपीडिया लफ्ज़ "कोरान" पर। संस्कृत जुवान की फजीलत हम पहले बखूबी बयान कर आये हैं।

चारों ऋषियों के शुभ कर्म ही सबब थे कि उन पर ही वेद भगवान् प्रगट हुए । यह बता चुके हैं । यह मज़हबी खुदा की सख्त ग़लती है कि उसने शुरु दुनियाँ में कामिल किताब नहीं भेजी। अगर कुरान के नजूल की यही वजह है कि पहले इल्हामों में तहरीक होगई तो कुरान में भी तो तह-रीक हो चुकी है जिसको हम वैजावी और हुसैनी तफसीरों

से साबित करचुके हैं लिहाजा अब और कोई नया इलहाम आना चाहिये। क्या इसही वजह से मिर्जा गुलाम अहमद साहब नया इलहाम लेकर आये थे?

कुरान ने मुनव्वर नहीं किया बल्कि काबापरस्ती, कब्र-परस्ती, ताजियापरस्ती, तावीज परस्ती, मरदुम परस्ती, कोह परस्ती, संगे असवद परस्ती, पीर परस्ती, डाढ़ी का बाल परस्ती, पारचा परस्ती, मुर्दापरस्ती, और तोहमात परस्ती के तारीक गढ़े में डालदिया। अभी चन्द साल हुए कि शहर मुरादाबाद में भी बादशाही मसजिद में मुसलमान मौलवियों में इस बात पर मुबाहिसा ठना था कि हजरत कि कब्र की ज़िआरत करना जायज़ है या नहीं? हमने एक मुसलमान को कहते सुना कि अजमेर और पीरान किलियर वग़ैरह की ज़ियारतें मुसलमानों की छोटी खुदैया हैं। उसने यह कहकर इस्लाम की कब्र परस्ती पर अफसोस ज़ाहिर किया। वेद भगवान् तो पुकार कर कहरहे हैं कि "वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते अयनाय"। अर्थात् एक ज्योतिः स्वरूप परमात्मा को ही जानकर मनुष्य मुक्त होसकता है। कुरान की मौजूदः तरतीब हरगिज इलहामी नहीं पहली आयत सूरते अलफ की यह है-"इकर विस्मेरब्बे का" है। पुरानी तरतीब वाला कुरान भी मौजूद है। इलाहाबाद के एक मुसलमान साहब का छपाया हुआ है। अंगरेजी और उर्दू तर्जुमा मौजूद है जब मरज़ी हो मँगाकर देखलें।

४—हमने आपके दावे को ग़लत साबित करदिया है कि कुरान की कोई आयत मंसूख नहीं हुई। बजाय एक आयत के बहुतसी आयात पेश करदी हैं ग़ौर से पढ़िये।

पहली किताबों को नाकिस उतारना ही खुदा में नुक्स ज़ाहिर कर रहा है। भला खुदा की किताब और नाकिस। नुक्स की तोहमत लगाना मुसलमानों ही को ज़ेबा मालूम पड़ती हैं।

जनाब ने मरीज़ की मिसाल भी खूब दी! क्या उस हकीम को दाना हकीम कहेंगे जो आज एक मरीज को मुंजिश पिलाता है, कल दूसरे मरीज को मुसिल देता है. परसों तीसरे मरीज को ठंडाई पिलाता है। दरयाफ़ करने पर मसलहत की आड़लेता है। मुंजिश कोई पिये और मुसिल किसी को दिये जावें तो ठंडाई कोई तीसरा ही पिये! क्या ऐसे ख़तरए जाँ हकीम के हाथों से दुनियाँ तबाह नहीं होसकती। भले आदमी अगर तुझको हिकमत नहीं आती तो कलमदान बन्द करके घरमें बैठ। क्यों दुनियाँ को तबाह कररहा है? हमें तो कुरानी अल्लामियाँ भी ऐसे ही मालूम होते हैं जो अरवाह शुरू में आईं उनके लिये कोई इलहाम नहीं। बीच में आईं उन के लिये नाकिस इलहाम भेजा। आखिरी रूहें बकौल जनाब कामिल इलहाम पाती हैं। अगर शुरु दुनियां में ही लातग़य्युर व लाबदुल इलहाम भेजता तो इसका क्या बिगड़ता था? फिर उसपर भी मिर्ज़ाई तितम्मा लगा हुआ है जनाब ज़रा इस नीम हकीम से कहनो दीजिये कि जिस मरीज को मुंजिश पिलाया था वह तो दफना भी दिया गया। हकीम साहब कह उठेंगे कि अच्छा मुसिल किसी दूसरे को देदो हकीम साहब! वह भी रेहलत फ़रमागया। अच्छा ठंडाई तीसरे को पिलादो। उसका रिश्तेदार रोता आता है और कहता है कि उसके लिये भी कफ़न की तलाशी होरही है। अच्छा लो यह पुड़िया लेजाओ तुम में से कोई खालेनो। मनाजिर साहब

यह नीम हकीम किसका इलाज कर रहा है ? बअक़ीदत इस्लाम जो अरवाह गुजर गईं वह तो वापिस आनी नहीं किसका इलाज और किसकी तरक्की ? अहले कुरान के रहम के नमूने दुनियाँ पर खूब रोशन हैं। दूर न जाइये मालावार कुरानी रहम की जिन्दा मिसाल है। क्या तौरेत के जमाने में रहम की तालीम की ज़रूरत अल्लामियाँ को महसूस नहीं हुई ? तो क्या उस वक्त बेरहमी का दौर ही जारी रखना खुदा की मसलेहत थी ? ईश्वर बचाये ऐसे मज़हबी खुदाओं से।

५—किसी किस्से को बार २ दुहराना फ़साहत नहीं। न कलामे अरब के मातहत यह बात आ सकती है न इसको इल्मे अदब शहादत देता है। आदम और शैतान के क़िस्से को कितनी मरतबा दुहराया गया है—देखिये=सूरत बक़र "ईज़-काला रब्बोका" सूरते एराफ़ "वलाकद ख़लक़न कुम्" सूरते स्वाद् "वकाल रब्बोका"। क्यों जनाब इतनी मरतबा दोहराने की क्या ज़रूरत थी ? क्या पहले भेजी हुई आयतों को बकरी चर जाती थीं ? मूसा और आग का किस्सा देखिये सूरतेताहा "वहल् अतावां हदीसो मूसा" और सूरतुल कसस्—"फ़लम्मा क़ज़ा मूसल् अजल" फिर यही किस्सा सूरतुल अमल में है। देखिये—"फलम्मा जाअहा नूदिय अनबुरेक मिनफ़िन्नारे व मिन हौलहा वसुबहानल्लाहे रब्बिल् आलमीन।" मूसा और फ़रऊन के क़िस्से को कितनी मरतबे दोहराया है यह सब बेईमानी तकरार है। हराम हलाल के बारे में भी ग़ौर फरमाइये—सूरतुल नहल "इन्नमाहर्रम अलैकुमुल मैततवद्दम वल् हमल खिन्ज़ीरे व मा उहिल्ला लेग़ैरिल्लाहे" ऐसी आयत सूरते बक़र में है—"इन्नमा हर्रम अलैकुम्" यही सूरतुल मायदा में है—"हुर्रमत अलैकुम्"। यह इतनी जगह हराम

का क्या वायस है । क़ुरान में जहां देखो वहां हराम का ज़िकर। इसको तकरार न कहें तो क्या कहें ?

६—शैतान ने ग़ैरुल्लाह को सिजदा नहीं किया अच्छा किया। वहां पर सिज़दे के माने अताअत के हरगिज़ नहीं हैं यहाँ औंधे पड़ जाने के हैं देखिये—" फ़क़ऊलहू साजिदीन " फ़क़ऊलहू यानी—तो गिर पड़ो उसको "साजिदीन "=सिजदा करने वाले। क्या औंधे पड़कर भी अताअत होती है ? देखिये सिजदे के मानी—सिजद-सिजूद =सरबर जमीं निहादन, फरोतनी कर्दन । सुरह लुगत । यानी सर को जमीन पर रखना, टेढ़ा होना। शैतान ने तो खुदा के मुंह पर कह दिया कि 'तूने मुझे गुमराह किया' ' बेमा अग्वैतनी" खुदा के पास इसका क्या जवाब था? वही जो लाजवाब होकर खिसियाने वाले देते हैं कि—" फ़रवरुज मिनूहा " यहां से निकलजा। अल्ला मियाँ अगर आलिमुल गैब थे तो शैतान को ऐसा कुफ्र का हुक्म देकर इस पहलवानको कुश्ती का चैलज्जही क्यों दिया ?

७—एतराज़ तो यही है कि पहले रसूल को निकाह की खुली इजाजत दी और फिर मनाफ़र दिया। अगर खुदा मना न करता तो मरते दम तक निकाहों का सिलसिला जारी रहता। वासदेव यानी को कहते हैं। वाममार्ग के अर्थ हैं उलटा मार्ग—यानी वेदों के ख़िलाफ। महीधर वाम मार्गी था इसलिये उसने वेदार्थ को बिगाड़ा। अबूहनीफा वाम मार्गी की तरह अक़ीदा रखते थे क्या आप यह मानते हैं ? हमने इसलाम के अक़ायद ऊपर अच्छी तरह बयान कर दिये हैं उसमें सब कुछ लिखा है। फूफी की बेटी से हज़रत ने ही निकाह किया।

८—ऊटनी के मौजिजे की बाबत ऊपर मय तफसीलके लिखा

आचुका है। अगर पहाड़ में से कहीं चरती हुई ऊटनी निकल आई तो जनाब यह मौजिज़ा ही क्या हुआ! गौर करें। कुरान में लफज़ पांच नहीं है। अगर आप दिखादें तो हम अपना एतराज़ वापिस लेने को तय्यार हैं। अगर सारे ही कुरान में लफज़ पांच नहीं तो हमारा ऐतराज़ बदस्तूर है। कुरान में कलमा नहीं है। जो मुसलमानी की जड़ है वही कुरान में नहीं तो फिर मुसलमानी कहां रहेगी। अगर कलमे के अजज़ा कुरान में मौजूद हैं तो सारे ही कुरान के अजज़ा कुतब दीगर में मौजूद हैं तो कुरान की ज़रूरत ही क्या रही। जितने अलफ़ाज़ कुरान में आये हैं वग़ैरह ही लुगात में मौजूद हैं तो लुगात कोभी आपकुरान कहेंगे। नेस्तेजाद मगर यज़्दन यह इबारत जिन्दावस्था से मुसन्निफ कुरान ने ली है। तो उधार लेनेवाले कुरान को जिन्दावस्था से क्या कैफियत रही? सिर्फ अरबी जुबान का जामा पहनाकर कुरान ने तौहीद का फिजूल डंका पीटा है। इसही तरहपर बनम यज़्द बख़शिश गरदादार का लफज़ी तर्जुमा बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम है। इस पारसी इबारत को अरबी का जामा पहनाकर मुसन्निफ़ कुरान फसाहत की डींग मारता है। मसल मशहूर है कि मेरे से आगलाई नाम धरा बैकुन्दर यही वतीरा मुसन्निफ कुरानका है। पुरानी किताबों के किस्से कहानी और रसूल की औरतों के झगड़ों का नाम कुरान शरीफ रखलिया है। मैराज ज़रदुश्त को भी हुआ था। रसूल के मुह में भी पानी भर आया। वह भी कहने लगे कि हम भी ख़ुदा से अर्श पर मिलआये। यह भूल गये कि यहां ख़ुदा महदूद हुए जाते हैं। जिस को फ़िक्र अपनी शुहरत की हो न कि ख़ुदाताला की पाकीजगी की उसके मज़हब का तो चौदहवीं सदी में इख़्तताम हो ही जाना

है। जबकि कुरान फ़क़त मुहम्मद साहब के अपने ख्यालात का मजमूआ है तो जा कुछ वह अपने को कहलें वह औरों के लिये सबूत नहीं होसकता। कौंजड़ी अपने बेरों को कब खट्टा बताती है? कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमतीने कुनबा जोड़ा। गोश्त के टुकड़े से जिन्दा होने की बाबत मय तफ़सीर के ऊपर बयान कर चुके हैं। आप फरमाते हैं कि "वजअल मिन् हुमुल किर्दत वल् खनाजीर" से अगली आयत पढ़ते तो आपको मालूम होता कि वह जाहिर तौर पर बन्दर और सुअर नहीं बने थे क्योंकि आगे फरमाया है—'वइजा जाओ कुम्' (और जब वह तेरे पास आते हैं)।

अगली पिछली सब सुनिये—"कुल हल उनब्बेओकुम् बशरिम्मिन् जालेक मसूबत इन्दल्लाहे मिल्लाउतुलआ हो व गजब अलैहे व जअल मिन् हुमुल किर्दत वल् खनाजीर अ अबदत्ता गूत उलायक शुर्रुम् मकानँव्व अजल्लो अन् सवा इस्सबीले"। इससे अगली आयत है 'व इजा जाओकुम्'।

पहली आयत में बताया है कि खुदा ने उनमें से बन्दर यानी मसख करके उन्हें बन्दरों की सूरत पर कर दिया। और हजरत ईसा के माएदे से जो मुन्किर हुए उनको सुअर कर दिया। यानी इस कौम के पुराने लोगों को बन्दर लोगों को सुअर और बना दिया ऐ मुहम्मद जो तेरे पास आते हैं उनसे कहदे। 'व इजा' यह आयत पहली आयत से कोई तअल्लुक नहीं रखती। पहली आयत पुराने वाकआत को बढ़ाती है। अगली आयत उस कौम के मौजूदा गिरोह की बाबत है। तफ़सीर कादरी में लफ्ज़ मस्ख दिया है जो आपके अरबी और दूसरी जुबानों के मुहावरे से कोई तअल्लुक नहीं रखता। सखी मसख करके हातम नहीं बना दिया जाता। और न

कोई वेवकूफ़ इंसान मस्ख करके गधा बना दिया जाता है। शरारती मसख करके बन्दर नहीं बना दिया जाता। आप इन फिजूल तावीलों के जरिये से कुरान के बेतुकेपन को सीधा नहीं कर सकते।

इस्लाम में बहुत से फ़िरके हैं। जानवरों से जिनाकरना भी एक फिर्के का मज़हब है। जितने फ़िर्के हैं सुबूत में आयात कुरानी पेश करते हैं। जबकि रसूल और खुदा दोनों का हुक्म एक है तो कुरानी आयत के लिये ज़िद करना क्या मानी रखता है? हदीसों में सब कुछ है। फ़िर्का मौजूद है। तहज़ीब के खिलाफ़ होने से हम इस बारे में कुछ नहीं लिखते।

११—शक्कुल कमर की बाबत पेश्तर लिखा आचुका है। ये बारह और भी सुनिये-मिर्जा गुलाम मुहम्मद साहब इसको एक अदना करिश्मा बतलाते हैं वह अपनी किताब सुरमए चश्म आर्या के सुफ़े १२ पर खुद तस्लीम करते हैं कि "अगर्चे कुछ हर्ज है तो शायद ऐसा है कि जैसे बीस करोड़ रुपये की जायदाद में से एक पैसे का नुकसान होजाय" गोया अगर यह मौजज़ा तवारीखी तौर पर साबित नहोसके तो इस्लाम का बहुत ही खफ़ीफ हर्ज है। दूसरे लफ़्ज़ों में यह समझना चाहिये कि कुरान की क़दरे कलील दरोग़ गोई साबित होती है। दूसरे मौलवी गुलामनबी साहब अमृतसरी फ़रमाते हैं कि-"ऐसे अज़ीमुश्शान नबी का ऐसा अजीम मोअजज़ा होना चाहिये" देखो (मोअजज़ात मुहम्मदिया) इससे तो जाहिर है कि कुरान की अज़ीमुश्शान दरोगगोई है। सवाल तो यह है कि चांद का फटना कानून कुदरत के खिलाफ है। फिर उस का गिरेबान में होकर आस्तीनों में को निकलना और भी तअज्जुब खेज़ है। देखिये ",ज़िक्र मोअजिज़ः शक्कुल कमर"

कलमी सन् १८८५ हिजरी लाइब्रेरी पटना । मौलवी अबदुल क़ादिर साहब इस आयत "इक़्तरबतिस्साअतोवन् शक्क़ुल्क़-मरो" पर लिखते हैं कि "हाँ आस्तीनों से निकालना सिवाय चन्द् कुतुब मुहम्मदिया के औरों में नहीं है; मगर सबका इंकार नहीं ऐसा भी उलमाने माना है" दूसरे यह वाकआ या निशा-नी कयामत की है। इसही लिये तफसीर हुसैनी और कादरी में है कि "इक़्तरबतिस्साअतो"=करीब आई क़यामत। फिर इसको हजरत का मोअजज़ा बताना गलत है। मासिवा इसके कुरान तो साफ़ इन्कार कररहा है कि कोई मोअजज़ा नहीं दिखाते। देखो सूरतुल् इनआम-"क़द् न अलमो इन्नाहुल यहज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलून फ़इन्न हुमूला युकज़्ज़ेबूनक वलाकिन् नज़्ज़ालिमीन् बे आयातिल्लाहे यजहदून" इसमें खुदा कहता है कि तुमको काफ़िरों की बातें (मोजज़ा वगैरह मांगना) गम-गीन करती हैं। और देखिये—"कुल् इन्नमल् आयातो इन्दल्लाहे वमा युशइरोकुम् अन्नमा इज़ा जाअत् ला योअमि-नून" यानी कहदे कि मुअजजे अल्लाह के पास हैं अगर मोअजि-जा काफिरों को दिखाया भी तो वह ईमान नहीं लायेंगे। इसही तरह सूरतुल् अम्बिया में भी मोजज़ा दिखाने से इन्कार है।

१२—आसमान की खाल उतारने की बाबत पहले बताचुके हैं कि यह कयामत की निशानी बताई गई है। क़यामत से माहियत का क्या तअल्लुक ? यह मिसाल हिन्दी में बाल की माहियत के लिये नहीं आती बल्के सारी मिसाल किसी चीज पर बेजानुक्ता चीनी पर आती है खुदा की खाल से बना भी क्या खुदा की माहियत जानना कहावेगी।

१३—जिसको आप कुदरत कहते हैं उसको हम शक्ति

कहते हैं। लेकिन आप फ़रमाते हैं कि फ़िल् ख़ारिजकोई चीज़ नहीं थी, लेकिन हम कहते हैं कि शक्ति, जिसको अव्यक्त वग़ैरह नामों से भी पुकारते हैं, ईश्वर के क़ब्जे में हमेशा से है और हमेशा रहेगी। लतीफ़ अनासर से मतलब है कि मौजूदा अनासर के परमाणु नहीं थे। जिन अजज़ा से ज़मीन बनी है वह अजज़ा भी अव्यक्त प्रकृति के बने हुए हैं। इसही तरह पानी वग़ैरह को समझिये। हालते अव्वलीन से वेद इन्कार नहीं करता जिसके लिये बहुत से सुबूत ऊपर दिये जाचुके हैं। माद्दे व रूहको क़दीम न मानने से बहुत सिफ़ात खुदाताला की आरज़ी ठहर जाती हैं जो कि उसकी जात या बरकात को नाक़िस ठहराती हैं। लेकिन आप तो फरमाचुके हैं कि जबसे खुदा है तबसे उसकी खिलकत है। जनाब इसको बार २ क्यों भूल जाते हैं? फ़ना होने को हमतो मादूम होना नहीं मानते। हमारे यहाँ शास्त्र ने बताया है कि "नाशः कारणलयः" अपनी इल्लत में मिलजाने को नाश होना कहते हैं। आप फ़ानी के मानी अपनी सिफात को छोड़ देना फ़रमाते हैं। दुनिया में दो ही सिफात देखी जाती हैं। मुदरिक और ग़ैर-मुदरिक। मुदरिक रूह इदराक को छोड़कर क्या ग़ैर मुदरिक (जड़) होजायगी? और माद्दा इदराक इख्तयार करलेगा यानी चेतन होजायगा? तो क्या जड़ता और चेतनता यह दोनों सिफात नहीं हैं? इसही फ़लसफेके भरोसे पर जनाब रूह और माद्दे के बारे में मुबाहसे के लिये वैदिकधर्मियों को चैलेञ्ज देते हैं?

१४—इल्हामी किताब की पहिचान ही यह है कि उसकी कोई बात अक़्ल के ख़िलाफ़ नहो। लाल बुजक्कड़ी बातें कही जायें और जब एतराज किया जावे तो यह कहदिया जावे कि यह सब बातें इसलिये ठीक हैं कि इल्हामी किताब बताती है।

यही मसल सादिक आती है कि "यहतो मैं भी जानता हूं कि मेरे होतेहुए मेरी बीवी बेवा नहीं होसकती" लेकिन घरका नाई मौतबिर है। इस नाई की बदौलत सारी बेतुकी बातें सही नहीं होसकतीं। अक्ल की बात कहने पर नाई का एतबार होना चाहिये और उसको मोतबिर कहना चाहिये। लेकिन जनाब इसके बरअक्स कहरहे हैं। सब जानते हैं कि आसमान मुनजमिद शै नहीं है लेकिन चूँकि मुसन्निफ़ कुरान कहता है इस लिये मानलेना चाहिये।

जब आप कुरान के तावे फ़िलसफ़े को मानते हैं तो फ़लसफ़े के मुताबिक बहस कैसी? कुरान कहता है अमरे रब्बी आप भी कहें अमरे रब्बी। आपके अक़ीदे के मुताबिक किसी को हक़ हासिल नहीं कि दरयाफ़्त करे कि अमर अर्ज़ है या जौहर? या फ़ेल है। बकौल सैयद अहमद साहब के खुदाके कहने और फ़ेल में मुताबिकत नहीं है, इसलिये कुरानी बातें खिलाफ़ अक्ल हैं। हम हर तरह से अज़रूए फ़लासफा यह साबित करने को तैयार हैं कि वेद भगवान् क्या रूह व माद्दा बल्कि हर शैको अक़्लके मुताबिक बताते हैं।

१५—मुक्तिमें रूह परमानन्द को हासिल करती है जोकि मुक्ति का असली मकसद है। लेकिन आपका तो जन्नत ही बकौल सैयद साहब रण्डियों के चकले से बदतर है। इसही लिये हर मुसलमान शराब कबाब और हूरों को याद करके कयामत की घड़ियाँ गिनरहा है। अगर रोज़ा है तो शराब और हूरों के वास्ते और नमाज़ है तो गिलमा और मेवे व नहरों के वास्ते। बकौल शख्से कि "कहता है कौन ज़ाहिदा तू हक़ परस्त है। हूरोंपै मररहा है शहवत परस्त है" कहाँ मुक्ति का परमानन्द और कहाँ बड़ी २ आँखों वाली औरतों से

सोहब्बत और सोहबत भी ऐसी कि इनज़ाल ही नहो। क्या ऐसी अइयाशी वैदिक मुक्तिका मुकाबला कर सकती है ? थकता जिस्म है नकि रूह। जो चीज़ पैदाशुदा है वह हमेशा जवान नहीं रह सकती हाँ मुसन्निफ़ कुरान यह जानना था कि बिना हूरो गिलमा और शराब के लालच के अरबी लोग दाममें नहीं फंसेंगे इसही लिये इन चीज़ों का फ़रज़ी नकशा बाँधकर तैयार करदिया जिस्म गैरज़ी रूह होने की वजह से इसमें इबादत नहीं रखते।

१६—जब बापसे बढ़कर दर्जा बताया है तो सारी औरतें रसूल की बेटी हुई। इसलिये उनसे शादी करना क़तई हराम। अगर सगी बेटी न होनेसे हराम नहीं तो सगी माँ न होनेसे रसूल की औरतें भी मुसलमानों पर हराम नहीं। रसूल भी बलिहाज बुज़ुर्गी बाप थे तो रसूल की औरतें भी बलिहाज़ बज़ुर्गी माएं थीं न वह सगी माएं और न वह सगे बाप। मामला साफ है जनाब की हाशिया आराई कतई फ़िज़ूल।

जहानी तौरपर रसूल किसी के बाप नहीं लेकिन बलिहाज बुज़ुर्गी। लेकिन इस बज़ुर्गी का लिहाज़ ज़ैद की औरत अपनी फ़ूफी जाद बहन से शादी करते वक्त हजरत ने खोदिया। नबी का मुँह बोला बेटा भी तो नबीका बेटा होनेसे कुछ बुज़ुर्गी रखता था। जिसको नबीने कतई फरामोश करदिया। इसको आप ही गौर से सोचें। तुलसीदासजी कहते हैं—"अनुजवधू भगिनी सुतनारी, सुन शठ यह कन्या समचारी। इन्हें कुदृष्टि बिलोकहि जोई, ताहिवधे कछु पाप न होई"।

१७—कोई बात ऐसी नहीं जिसकी तशरीह हमने नकरदी हो। गौर से पढ़ें।

१८—कुरान तो सिवाय अमरे रब्बी कहदेने के और क्या जानता है कोई आयत पेश की होती तो पता चलता कि कुरान

क़ितने पानी में है। रसूल से सवाल करनेपर कौनसी फ़लसफे की बात कही गई ? माद्दा भी तो अमर रब्बी है वह क्या अमरे शैतान है ? बक़ौल जनाव माद्दा भी तो पैदा शुदा है फिर वह भी तो इस अमर का "तावै है कि "कुन फ़यकुन" फिर दोनों ही तो अमर रब्बी हुए। फिर रूहको क्या खुसूसियत रही ?

१६--कौनसा ऐसा दीनी मसला है जिसको वेदोंने हल नहीं करदिया ? इस मुबाहसे को ग़ौरसे पढ़िये। क़ुरानकी तकमील तो इसही से ज़ाहर है कि आपके मिर्ज़ा साहब नये मुलहम पैदा हुए। मुलहम क्यों आतेहैं ? पुराने इलहामोंकी पाबन्दी करानेको या कोई नया इलहाम हासिल करनेको ? अगर पुरानी किताबों को तकमील करनेको आतेहैं तो सिर्फ़ वेदमुकद्दसकी ही सब नबी और रसूलोंको ताईद करनी चाहिये ; किसी नये इलहाम की ज़रूरत नहीं। अगर किसी इलहामको हासिल करनेआते हैं तो मिर्ज़ा साहब भी इलहाम हासिल करते होंगे फिर क़ुरानका ज़मीमा तैय्यार करना मिर्ज़ा साहबका फ़र्ज़ रहा। इस हालतमें क़ुरान कामिल क़िताब कैसी ? अबभी अरबमें सारी बुराइयाँ मौजूदहैं। लुटेरे बद्दू लोगोंका गिरोह मुसलमान हाजियों को लूटनेवाला मौजूद है। भाई को भाई क़तल करनेवाले, आपसमें एक दूसरोंको तलवारके घाट उतारनेवाले, क़िमारबाज़ शराबी दगाबाज़ वग़ैरह सब तरह के इंसान मौजूदहैं। अरबसेही एक अख़बार अरबी ज़ुबानमें निकलना शुरूहुआ है। वह भी ख़ास हरमैन से जिसका मक़सद है कि क़ुरान के ख़िलाफ़ जहाद करे देखो रोज़ाना इनक़लाब ज़माना कलकत्ता तारीख ६ सितम्बर १६२३ ई०। सातवीं तारीख के परचे में इस इबारतपर गौर कीजिये। " ग़ैरतकी आवाज़—"

"मुसलमानों! ख़ुदाके लिये इसलामका नामूस हरमैनशरीफ़ैन

को नापाक दुशमनों के पाओंके नीचे पामाल नहोनेदो-आह !" यह खुदाका घर और तुह्मारे रसूलकी गुजरगाह है आज अगर तुम चुप बैठे रहे तो कल खुदा और उसके रसूलको क्या मुँह दिखाओगे"? यहहैं कुरानकी तकमील की निशानियाँ। चुँ कुफ़ अज़ काबा बर खेज़द कुजा मानद मुसलमानी ? लीजिये अबतो हरमैनही में कुरान की तरदीद करनेवाले पैदा होगये !

२०--हम इससे पहले बहुत सी कुरानी आयात इसके सुबूतमें पेश करचुकेहैं कि खैर व शर सब खुदाकी तर्फ़से हैं। वह भी कौले कुरानी लिखचुकेहैं कि "कहदे खैरो शर या नेकी और बदी सब खुदाकी तरफ़से हैं"। फिर आपका बार२ इससे इंकार करना क्या मानी रखता है ? रुद्र इन्सानको उसवक्त दुःखसे रुलाताहै जब वह बुरेकाम करलेता है। लेकिन कुरानी खुदा जन्म से ही अन्धे लूले लँगड़े कोढ़ी अपाहज पैदा करके रुलारहा है। यह सारी सज़ाएँ किस कर्म की हैं इसका जवाब सिवाइसके कि 'खुदा की मर्ज़ी' और तो कोई सुनानहीं। जब खुदा की मरज़ी पर ही दोज़ख और बहिश्तका इनहसारहै तो क्या पताहै कि नमाज़ी दोज़खकी आंच में जलें और काफ़िर हूरो गिलमा का मज़ालूटें। फिर ए मुसलमानो ! किसलिये भूखे मरते हो, नमाज़ और रोज़ा किसलिये इख्तयार करतेहो ? अपनेको खुदाकी मरजी पर छोडदो। जिस खुदाए कुरानीने पहली मरतबा ही बिना किसी नेको बद आमालके इसदुनियामें ही दोज़ख और जन्नत देकर अपनी बे इंसाफ़ीका सुबूत दियाहै आइन्दा को आप उस से उम्मीद रखतेहैं ? इसलिये वैदिक धर्म कुबूल करके आदिल परमात्माकी सलतनतमें आबाद होजाइये। वैदिकधर्म उम्मीद का धर्म है। अगर इसमरतबा स्वर्ग हासिल न करसके तो दूसरे या इससे अगले जन्मों में हासिल करसकोगे। कुरानी

खुदा तो सिर्फ़ एक मरतबा मौक़ा देताहै, फिर भी तुम्हारे पीछे शैतान जैसा सरकश लगादिया है।

एक ख़ास तादाद जहन्नम के लिए मुक़र्रिर कररक्खी है। क्या पता है तुम्हारा नाम किस रजिष्टर में दर्ज है ? जन्नतियों के रजिष्टर में या दोजखियों के ? क़यामत के दिनतक गड्ढे में क्यों सड़ना चाहते हो ? आओ उस अदालत में जिसका दरवाजा रात दिन खुला रहता है। क़ुरानी अन्धेरे से निकल कर वैदिक रोशनी में आजाओ। क़ुरानी तालीम सिर्फ़ अरब वालों के लिये थी। ऐसा ही क़ुरान में भी लिखा है। क़ुरान में जो कुछ कहा गया है वह अरब को मद्दे नजर रखकर कहा गया है नकि दुनिया के और हिस्से को। क़ुरान रहम नहीं सिखाता। जितने त्यौहार होते हैं सबही दूसरों की जान पर तबाही लाने वाले होते हैं। कहीं ईद है तो कहीं बेगुनाहों की गरदन पर छुरी का वार है। इनकी ईद देखो दूसरों क घर मातम है। यह मज़हब दूसरों की बहू बेटियों की इज़्ज़त करना नहीं सिखाता दूसरों की औरतों को; बेटियों को, माओं को और बहन भानजियों को छीनकर जिनाकरना इस मजहब की आला तालीम है। दूसरों का माल लूट लेना; इबादतगाहें तोड़ डालना; औरों के बच्चे बच्चियों को लौंडी और ग़ुलाम बनाकर नारवा काम करना कराना इस मज़हब का सुनहरा उसूल है। सैकड़ों फ़िर्के इस्लाम के हो चुके हैं एक दूसरे को कुफ़्रका फ़तवा देरहा है। कोई कब्रपरस्ती में मस्त है। कोई ताजियापरस्ती में लगा हुआ है। कोई पीरपरस्ती में ग़लतां है। कोई अलमपरस्ती में ग़र्क है। गर्ज यह है कि तोहमात परस्ती का दरया उमड रहा है। इसी दरयाये बेकरां में इसलाम बहा जा रहा है। चन्द महदूदा तादाद को छोड़कर

बाकी आप सब ऋषियों की औलाद हैं। तुम्हारे बुजर्गों के गले से जबरदस्ती तलवार के जोर से क़ुरान उतारा गया है। ऋषियों की सन्तान कहाँ जाफंसी! देख महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने दया करके तेरी असिल शक्ल तुझको दिखादी है। बस तुम आर्य जाति सिंह हो भारतमाता की आँख के तारे हो। ऋषियों का लहू तुम्हारे तनमें मौजूद है। उठो इस जहालत के गढ़े से निकलकर रोशनी के मैदान में आओ। पुरानी राजपूती को याद करो। तुम भारत के हो भारतवर्ष तुम्हारा है। अगर ऐसे शान्ति के समय में भी तुम गफ़लत में पड़े रहे तो कब उठोगे? शुद्धि का दरवाजा खुला हुआ है। शिखासूत्र धारियों के सीने खुले हुये हैं। जुदाई की घड़ी दूर हो रही है। आओ आओ मुद्दत की जुदाई के रञ्ज को बगलगीर होकर मिटा दो। अपने बिछुड़े हुये भाइयों को पहचानो देखो भारतमाता अपनी सन्तानों को देखकर अपनी छाती से दूध बहा रही है। उसकी शान्तिमयी गोदी तुमको बैठाने के लिये खाली है। तुम्हारे २१ करोड़ भाई तुम्हारे आनेकी राह देख रहे हैं। इसलिये आज सब मिलकर प्रेम के आँसू बहाकर इस मुद्दत की अलहदगी के दुःख को धोडालें। देखो महावीर हनुमान जी मिलाप का सन्देस घर घर सुना आये हैं। बस चलो आज भरतमिलाप का नज़्ज़ारा एक मरतबा फिर सफ़े दुनिया में पैदा करदें। एक दफा फिर अयोध्या के दर्शन करलें। और सब मिलकर गावें कि—

आजमिल सब गीत गाओ उस प्रभू के धन्यवाद। ओ३म् शम्॥

आपका बिछुड़ा भाई

शिवशर्मा,

उपदेशक सभा।